अफगानस्थानका

इतिहास।

कलकत्ता,

३८।२ भवानीचरण दत्त ष्ट्रीट,

हिन्दी-बङ्गवासी इलेकट्रो-मेशीन प्रेसमें

श्रीनटवर चक्रवर्त्तीद्वारा मुद्रित

और प्रकाशित।

सम्वत् १९६२।

मूल्य २) दो रुपया।

भूमिका।

अबसे पहले अफगानस्थानका इतिहास हिन्दीभाषा साहित्यमें शायद नहीं था। हिन्दीभाषा ही क्यों,—वरञ्च बङ्गला, उर्दू प्रभृति देशकी अन्यान्य उन्नत भाषाओंमें भी सुश्रृङ्खल और सम्पूर्ण अफगानस्थानका इतिहास नहीं है।

किन्तु अङ्गरेजी भाषामें अफगानस्थानके सम्बन्धमें कितनी ही पुस्तकें हैं और अङ्गरेजीदां ऐतिहासिक पाठक इस पुस्तककी सभी बातें नई न पावेंगे। असलमें यह इतिहास सात पुस्तकोंके आधारपर लिखा गया है। जिनमें दो पुस्तकें उर्दू भाषाकी और बाकी पांच अङ्गरेजी भाषाकी हैं। इन सातो पुस्तकोंके नाम इस प्रकार हैं,—

अङ्गरेजी

1.—The Kandhar Campaign,
by Major Ashe.
मेजर एशकृत "कन्धार युद्ध।"

2.—A Political mission to Afghanistan,
by H. W. Bellew.
वेलिउकृत,—"राजनीतिक अफगानस्थान-मिशन।

3,—Fourty-one years in India.
by Field Marshal Lord Roberts.
प्रधान सेनापति लार्ड राबर्टसकृत "भारतमें ४१ वर्ष।"

4.—The Afghan-War.
by Howard Hensman.
हेन्समेनकृत,—"अफगान-युद्ध।"

5.—Encyclopeadia Britanica.
नानाविषय विभूषित "इटानिका कोष।"

उर्दू

६—नैरङ्गे अफगान (अफगान वैचित्र्य)
सय्यद मुहम्मद हुसैनकृत।

७—तुज़ुक अब्दुर्रहमानी।
अफगानपति अब्दुर्रहमानकृत।

ऊपरकी सातो पुस्तकें प्रामाणिक हैं। इनमें इनसाइक्लो-पीडिया ब्रटानिका और भी मान्य है। कारण, इस पुस्तकका "अफगानस्थान" शीर्षक लेख निम्नलिखित पुस्तकोंके आधारपर लिखा गया है,—"एलफिंष्टनका काबुल; जियागरफिकेल एसोसियेशन सोसाइटी बङ्गालके जितने ही कागज; बेलिउ साहबका जरनल; युसुफजइयोंकी रिपोर्ट, फलोरा आफ अफगानस्थानकी टिप्पणियां; पेशावर जिलेपर जेमुसकी रिपोर्ट; रेवरटीका अफगान-व्याकरण; पञ्जाबकी ट्रेडरिपोर्ट; बाबरका रोजनामचा; बैर्वोकी हिष्ट्री और लमूसडन तथा मेकग्रेगरके कागज।" कितनी ही बातें उक्त सातो पुस्तकोंसे इस इतिहासमें उद्धृत की गई हैं। उद्धृत लेखखण्डके आगे लेखकका वा पुस्तकका नाम दे दिया गया है।

प्रत्येक पढ़े लिखे भारतवासीको अफगानस्थानका इतिहास जाननेका प्रयोजन है। कारण, एक तो अफगानस्थान हमारी पड़ोसमें है और उस स्वतन्त्र देशके राजनीतिक परिवर्तनका न्यूनाधिक प्रभाव हमारे देशपर पड़ता है। दूसरे इस समय अफगानस्थान ध्यान देने योग्य देश बन गया है। उसकी एक ओर भारतगमनका स्वप्न देखनेवाला रूस और दूसरी ओर भारतके भाग्यविधाता प्रबल प्रताप अङ्गरेज राज पहुंच

गये हैं। दोनो रणसज्जासे सुसज्जित हैं,—दोनो एक दूसरेको लाल लाल नेत्रासे घूर रहे हैं। तीसरे, इस समय काबुलमें शान्ति रहनेपर भी वहांसे समय समयपर आशङ्काप्रद समाचार मिला करता है। इस देशके इतिहाससे प्रमाणित है, कि यह देश कभी बहुत दिनोंतक सुख शान्तिकी गोदमें नहीं सोया। इसलिये कौन कह सकता है, कि रूस और अङ्गरेजोंके बीचमें आ पड़नेवाले अफगानस्थानमें कबतक शान्ति विराजती रहेगी?

कलकत्ता;
१२ वीं सितम्बर १६०५ ई०। } प्रकाशक।

अफगानस्थानका इतिहास।

अफगानस्थान-वृत्तान्त।

——:(०):——

फारसी भाषामें अफगानस्थानको अफगानिस्तान कहते हैं। अफगान और स्तां, इन दो शब्दोंकी सन्धिसे इसकी उत्पत्ति है। स्तां मानी रहनेकी जगह और अफगान जाति विशेषका नाम है। अफगान नामके सम्बन्धमें कई कहानियां हैं। बेलिउ साहब अपने जरनलमें कहते हैं, कि बैतुलमुकद्दस वा इरूशली-मके प्रतिष्ठापक अफगनाकी माताको अफगनाके जननेके समय बड़ी पीड़ा हुई। उसने परमेश्वरसे कष्टमोचनकी प्रार्थना की। इसके उपरान्त ही पुत्र प्रसव किया और कहा,—"अफ-गना।" यानी "मैं बचो!" इसी बातपर शिशुका नाम अफगना पड़ा। अफगना अफगानोंका पूर्व्वपुरुष था। उसीके नामपर उसकी जातिका नाम अफगान रखा गया। बेलिउ साहब ही दूसरी कहानी कहते हैं, कि अफगनाकी जननी अफगनाको प्रसव करनेके समय "फिगां" यानी "हाय हाय" करती थी। इस वजहसे नवजात शिशुका नाम "अफगना" रखा गया। नैरङ्गे अफगानके लेखक मीर साहब फरिश्ताके आधारपर तीसरी जो कहानी कहते हैं। अगले जमानेमें विदेशी

लोग अफगान जातिसे जब कुशल मङ्गल पूछते थे, तो अफगानोंके जवाबका मर्म इस प्रकार होता था ; दर "अफगानिस्तान बगोयन्द, कि बजुज फरियादो फिगां व गांगा दरां चीजे दीगर नेस्त।" यानी, अफगानस्थानमें लोग कहते हैं, कि उनके देशमें रोने चिल्लानेके अतिरिक्त और कुछ नहीं है। जो हो ; भिन्न भिन्न ऐतिहासिकोंने भिन्न भिन्न रीतिसे अफगान शब्दकी कहानी कही है। इसमें सन्देह नहीं, कि अफगानोंके एक सुप्रसिद्ध पूर्वपुरुषका नाम अफगना था और खूब सम्भव है; कि उसीके नामपर उनके जातिवालोंका नाम अफगान पड़ा।

अफगानस्थान साधारणतः पहाड़ी भूभाग है। यह समुद्र-तलसे ऊंचा है और इसका नीचासे नीचा भाग भी समुद्र-तलसे ऊंचा है। ६२ दरजेसे लेकर ७० तक पूर्व दिशामें लम्बा और ३०से लेकर ३५तक उत्तर दिशामें चौड़ा है। इसकी पूर्वीय सीमा बरोघिल दर्रेसे आरम्भ होकर चित्राल, पेशावर और डेराजात प्रान्तसे होती हुई कोटेके समीप बोलन दर्रेतक पहुंची है। बरोघिल दर्रेके समीप ही अङ्गरेज चीन और रूस इन तीनों बादशाहोंकी बादशाहतें आपसमें मिल गई हैं। अफगानस्थानकी उत्तरीय सीमापर रूसी तुरकस्थान है। इसके पश्चिम फारस और दक्षिण बलूचस्थान है। यह पूर्वसे पश्चिम कोई ६ सौ मील और उत्तरसे दक्षिण लगभग ८ सौ ५० मील लम्बा है। दो लाख ६० हजार वर्गमीलमें फैला हुआ है।

मान लीजिये, कि समुद्र अपनी वर्त्तमान स्थितिकी अपेक्षा ८ हजार फुट ऊंचा हो जाय। ऐसी दशामें भी पूर्वकथित

चौपहल भूभाग पानीमें डूब न सकेगा। सिर्फ काबुल नदीकी नीची घाटियोंका कुछ भाग और एक त्रिकोण भूभाग जल-मग्न होगा। इस त्रिकोणका नोकदार कोना सुदूर दक्षिण-पूर्व्वकी सीस्तान झील बनेगी और उसकी आधार-रेखा हिरातसे कन्धार पहुंच जावेगी। अवश्य ही इस त्रिकोणके बीचमें असंख्य चोटियां और टीले मौजूद होंगे। फिर मान लीजिये, कि समुद्र अपने वर्त्तमान स्थानसे ७ हजार फुट और ऊंचा हो जावे। इतनेपर भी इतना बड़ा भूभाग डूबनेसे बच जावेगा, कि हिन्दूकुश-पर्व्वतके कोशान दर्रेसे कन्धार और गजनीके बीचकी सड़कके रङ्क स्थानतक दो सौ मील लम्बी एक सीधी रेखा तय्यार हो सकेगी।

यदि अफगानस्थानकी नैसर्गिक विभक्ति की जावे, तो सम्भवत: ६ टुकड़ोंमें होगी। उन ६ टुकड़ोंके नाम इस प्रकार हैं,—(१) काबुल-खाल; (२) मध्य अफगानस्थानका वह उच्च भूभाग, जिसपर गजनी और कलाते-गिलजई अवस्थित है और जो कन्धारकी ऊपरी घाटियोंका आलिङ्गन करता है; (३) उच्च हलमन्द-खाल; (४) निम्न हलमन्द-खाल, जो गिरिश्क, कन्धार और अफगानके सीस्तानको वेष्टित किये हुआ है; (५) हिरात-नदीकी खाल; (६) मध्य अफगानस्थानके उच्च भूभागका पूर्व्वीय किनारा। सिन्धनदमें कभी कभी बाढ़ आने होपर इस भूभागमें जल पहुंचता है। इन ६ भागोंकी प्राकृतिक दशामें बड़ा अन्तर है। कहीं शीत अधिक है, कहीं गर्म्मी। कहीं जलकी प्रचुरता है, कहीं अभाव। कहीं हरियाली ढूंढे नहीं मिलती और कहींकी भूमि सदैव

सुजला सुफला और सुश्यामला रहती है। इनसाइक्लोपीडिया बृटानिकामें लिखा है,—"काबुल-खालकी नैसर्गिक विभक्ति जलालाबादसे ऊपर गण्डमकके समीप पहुंचते ही स्पष्ट दिखाई देने लगती है। इस जगह भूमि कोई ३ हजार फुट नीची हो जाती है। इसीके विषयमें बाबर बादशाह कहते हैं,—'जिस समय तुम नीचे उतरोगे, तो तुम्हें नई ही दुनिया दिखाई देगी। वनवृक्ष, फसल, पशु, मनुष्य और उनके परिच्छद सभी नये दिखाई देंगे।' जलालाबादमें बरनेसने गेहूंकी फसल तय्यार पाई, किन्तु २५ मील आगे, गण्डमकमें जाकर देखा, कि उक्त फसल वहां आरम्भिक अवस्थामें है। इसी जगह प्रकृतिने भारतवर्षका फाटक तय्यार किया है। अफगानस्थानके उच्च भागमें युरोपकीसी पैदावार होती है और निम्न भागमें भारतवर्षकीसी।

काबुलके पर्व्वतोंके विषयमें नैरङ्गे अफगानमें इस प्रकार लिखा है,—"अफगानस्थानकी उत्तर ओर बहुत ऊंचे पर्व्वत नीचे मैदान और हरे भरे स्थान हैं। नहरें और जलस्रोत अधिक हैं। दक्षिण ओर ऐसा नहीं है। वहां घास पात और पानी दुष्प्राप्य है। उत्तर ओरकी पर्व्वतमालामें हिन्दूकुश एक पर्व्वत है। यह भारतवर्षके हिमालयसे लेकर अफगानस्थानके पश्चिमतक चला गया है। इसकी ऊंची चोटियां बरफसे ढंकी रहती हैं। इसके समीप ही कोहिबाबाकी श्रेणि क्रिम उफगा पश्चिमीय सीमापर्य्यन्त चली गई है। इसके समीप कितने ही पर्व्वत हैं। इनमें अधिकांश उच्च गिरिशृङ्ग तुषाराच्छादित हैं। इन्हीं पर्व्वतोंकी तराईसे हलमन्द नदी

बहती है। हिन्दूकुश और कोहेबाबाके बीचमें बामियान दर्रा है। कोहेबाबाके पश्चिम ओर कोहेगोर है। यह हिराततक चला गया है और यही गुरजस्थान और हरीरोदके मैदानोंको अलग करता है। अफगानस्थानकी पूर्व ओर, उत्तरसे लेकर दक्षिणतक, कोहेसुलेमानका सिलसिला है। काबुलकी दक्षिण ओर कोहेसुफेद पर्व्वत-माला है।" अफगानस्थानके पर्व्वत तो इतने ही हैं। पर इनकी शाखा प्रशाखा देशभरमें फैला हुई है। कोई कोई शाखा स्वतन्त्र नामसे पुकारी जाती है।

अफगानस्थानमें नदियां बहुत नहीं हैं। जितनी हैं, उनमें अधिकांश बहुत छोटी हैं। बेलिउ साहब अपने जरनलमें कहते हैं,—"काबुलकी कोई नदी समुद्रतक नहीं पहुंचती। जिस देशसे वह निकलती है, उसकी सीमाके बाहर भी नहीं पहुंचती। कुल नदियां वर्षके अधिक भागमें न्यूनाधिक पायाब रहती हैं। सब दक्षिण और पश्चिम ओर बहती हैं। सिर्फ कुर्रम और गोमलके जलस्रोत कोहेसुलेमानसे निकलकर दक्षिण-पूर्व्व ओर बहते हैं। इनमें गोमल-स्रोत पर्व्वतसे बाहर निकलनेके पहले ही जमीनमें समा जाता है। पायाब कुर्रमस्रोत ईसाखेलके समीप सिन्धनदमें गिरता है। पश्चिम ओर कन्धार और हिरातके सम भूभागको सींचती हुई तारनक अरगन्दाब, खासरूद, फरहरूद, और हरीरूद नाम्नी नदियां बहती हैं। यह सब सीस्तान झील वा "आबिस्तादये हामू" की ओर जाती हैं। इन नदियोंमें हलमन्द सबसे बड़ी है। इसीमें तारनक अरगन्दाब और खासरूद मिल गई है। गर्म्मीके

दिनोंमें सिवा हलमन्दके बाकी सब नदियां सूख जाती हैं।
नेके कई कारण हैं। इनका बहुतसा जल आबपाशीके लि
लिया जाता है। जो बचता है, कुछ तो भाफ बनकर उड़
है और कुछ पोली भूमिमें समा जाता है। गर्म्मियोंमें सी
झीलका भी बड़ा अंश सूख जाता है। बरसातमें
नदियां और झील सब बढ़ती हैं। कभी कभी बढ़कर किन
बाहर निकल आती हैं। जमीनके जल्द जल्द पानी से
गर्म्म वायुकी वजहसे, पानीके भाफ बनकर उड़ जानेसे
नदियोंकी बाढ़ अस्थायी और उतनी कामकी नहीं हो
खुरासानकी अपेक्षा काबुलप्रान्तमें नदियां बहुत काम
लोगार, काशगर और स्वात प्रान्तीय प्रधान जलस्रोत हैं।
तीनों काबुल-नदीमें मिल जाते हैं और काबुल-नदी अटकके
सिन्धनदमें जा गिरती है। लोगार और काशगर-जल
अनेक ऋतुओंमें पायाब रहते हैं। किन्तु स्वात और क
नदी सिर्फ अपने उद्गमके समीप ही पायाब है।"

झीलके विषयमें इनसाइक्लोपीडियामें लिखा है,—"हम
जानते, कि लोरा नदी अफगानस्थको किस झीलमें जाकर
है। दूसरी, माकान झील है। इसका बड़ा भाग अफगानस्था
बाहर है। रह गया गिलजई प्रान्तका आबिस्तादा या "
इस्तादा" "स्थिरजल।" यह गजनीसे दक्षिण-पश्चिम ६५ मी
फासलेपर है। इसकी स्थिति ७००० फुटकी ऊंचाई
और उपजाऊ और सुनसान स्थानमें है। वहां न तो पेड़
और न घासके तख्ते। बस्तीका तो चिन्ह भी दिख
नहीं देता। ४४ मीलके घेरेमें इसका छिछला पानी फै

हुआ है। बीचमें भी मुश्किलसे १२ फुट गहरा होगा। यही झील गजनीकी नदियोंकी प्रधान जननी है। अफगानोंका कहना है, कि एक नदी इस झीलमें आकर गिरती है। किन्तु यह ठीक नहीं है। झीलके जलका खार और कड़वापन कहा-वतका खण्डन करता है। जो मछलियां गजनी नदीसे चढ़कर झीलके खारे जलमें पहुंच जाती हैं, वह ठहरत नहीं, मर जाती हैं।"

अफगानस्थानकी खानियोंके विषयमें परलोकगत अमीर, अपनी पुस्तक "तुजुक अब्दुरहमानी"में लिखते हैं,—"अफ-गानस्थानमें इतनी खानियां हैं, कि सबसे प्रतिपत्तिशाली देश उसको ही होना चाहिये।" सचमुच ही अफगानस्थान खानि-योंसे भरा हुआ है। लघमान और उसके निकटवर्त्ती जिलोंमें सोना पाया जाता है। हिन्दूकुशके समीप पञ्चशीर दर्रेके सिरेपर चांदीकी खानि है। पेशावरसे उत्तर-पश्चिम स्वतन्त्र देश बाजारके अन्तर्गत, उच्च कुर्रम और गोमलके मध्यस्थ जिलोंमें बहुत बढ़िया लोह-चूर्ण मिलता है। बामियान घाटी और हिन्दूकुशके अनेक भागोंमें लोहा मिलता है। तांबा अफगानस्थानके कितने ही अंशोंमें देखा गया है। कुर्रम जिलेके बङ्गश जिलेमें, सुफेदकोहके शिनकारी देशमें और काकाप्रदेशमें सीसा धातु मिलती है। हिरातके समीप भी सीसेकी खानि है। अरगान्दा, बारदक पहाड़ी, गोरबन्द दर्रा और अफरीदियोंके देशमें भी सीसा मिलता है। अधि-कांश सीसा हजारा देशसे आता है। वहां यह धातु जमीन-परसे बटोर ली जाती है। कन्धारसे ३० मील उत्तर शाह

मकरूद स्थानमें सुरमा मिलता है। काकार देशके झोब जिलेमें जस्ता मिलता है। हिरात और हजारा देशके पिर-किसरी स्थानमें गन्धक मिलता है। पिरकिसरीमें नौसादर भी मिलता है। कन्धारके मैदानोंमें खड़िया मट्टी मिलती है। जरमत और गजनीके समीप कोयला मिलता है। अफगान-स्थानके दक्षिण-पश्चिम प्रदेशोंमें शोरा बहुतायतसे मिलता है। बदखशां-सीमाके समीप चाल स्थानमें नमककी चट्टानें हैं।

अफगानस्थानमें भिन्न भिन्न प्रकारका जल वायु है। बेलिउ साहब लिखते हैं,—"गजनी, काबुल और उत्तर-पूर्वके देशोंमें अधिक शीत पड़ती है। कन्धार और दक्षिण-पश्चिम अफगान-स्थानमें उसका जोर उतना अधिक नहीं है। इन स्थानोंके मैदानोंमें और छोटे पहाड़ोंपर कभी कदाचित ही बरफ पड़ती है। जब पड़ती है, तो जमी नहीं रहती, शीघ्र ही पिघल जाती है। जैसा शीतका आधिक्य है, वैसा ही गर्म्मीका भी। काबुल और गजनीकी गर्म्मी, चारों ओरके तुषारधवलित गिरिशृङ्गोंसे टकराकर आते हुए समीरणसे बहुत कुछ शान्त हो जाती है। इसके अतिरिक्त वहां भारतकीसी कड़ी धूप भी नहीं पड़ती। समुद्रसे उठकर हिन्दुस्थान पार करके दक्षिण-पूर्वसे आये हुए बादल भी कभी कभी पानीके छींटे दे देकर इन स्थानोंको ठण्ढा किया करते हैं। किन्तु ठण्ढक पहुंचानेके यह कुल सामान एक ओर, और खुरासानकी जलती बलती लू एक ओर है। खुरासान देशकी जलवायु बहुत गर्म्म है। उसके नाम ही से वहांकी उष्णता प्रकट होती है। खुरासान

असलमें खुरशिस्तान वा "मार्त्तण्डनिवास"का अपभ्रंश है। वहां गर्दसे भरी हुई आंधियां चला करती हैं। कभी कभी सम्मूम नाम्नी प्राणनाशकरी आंधी भी बहने लगती है। नङ्गी चट्टानों, और सूखे रेगस्थानकी तपनसे वहांकी गर्म्मी बहुत बढ़ जाती है। बरसात नहीं होती। इसलिये न तो कभी ठण्डी हवा चलती है और न कभी झुलसी हुई पृथिवी शीतल होती है।

जरनलमें लिखा है,—"अफगानस्थानकी उपज कुछ तो भारतकीसी, कुछ योरोपकीसी और कुछ खास उसी देशकी होती है। गेहूं, जव, बाजरा, मूङ्ग, उर्द, चना, मसूर, अरहर, और चावलके अतिरिक्त कहीं कहीं गन्ना तथा खजूर भी उत्पन्न होता है। रूई, देशके मसरफ लायक थोड़ीसी जगहमें तय्यार कर ली जाती है। तम्बाकू देशभरमें उत्पन्न होता है। कन्धारका तम्बाकू बहुत अच्छा और रफ्तनी लायक समझा जाता है। नगरोंकी इर्द गिर्द, चरस निकालनेके लिये, पटुएकी खेती की जाती है। कितने ही जिलोंमें जलाने, पाक प्रस्तुत करने और औषधमें डालनेके तेलके लिये रेंडी और तिल अधिकतासे उत्पन्न किया जाता है। यह हुई भारतकीसी उपजकी बात, अब युरोपकीसी उपजका हाल सुनिये। सेब, नाश्पाती, बादाम, जर्दालू, बिही, बेर, शाहालू, किशमिश, कागजीनीबू, तुरञ्ज, अङ्गूर, इञ्जीर और शहतूत यह सब फल भी उत्पन्न होते हैं। यह बड़ी सावधानीके साथ उत्पन्न किये जाते हैं। इङ्गलण्डकी अपेक्षा घटिया होनेपर भी अन्य स्थानोंकी अपेक्षा बढ़िया होते हैं। इन सब सूखे वा

ताजे फलोंकी बड़ी रफ्तनी होती है और देशके रफ्तनीके व्यापारमें इन्हींका प्राधान्य है। इनके अतिरिक्त देशमें सर्व्वत्र ही नीनृ-घास और गुल्हरीका भूसा तय्यार किया जाता है। अफगानस्थानकी खास पैदावार पिश्ता, खाने लायक माजार और अनाफिउटगा है। इनकी भी रफ्तनी होती है। इस देशमें खेती करनेके दो मौसम हैं। एक रबी और दूसरी खरीफ। रबीकी फसल खरीफतक तय्यार हो जाती है और खरीफकी फसल गर्म्मियोंतक।

अफगानस्थानमें यूसुफजईमें बन्दर, कन्धारमें चीता, और उत्तर-पश्चिमकी पहाड़ियोंमें शेर मिलते हैं। स्यार सर्व्वत्र होते हैं। वीरानोंमें झुण्डके झुण्ड भेड़िये रहते हैं। पालतू पशुओंको उठा ले जाया करते हैं और अकेले दुकेले सवारोंपर आक्रमण किया करते हैं। लकड़बग्घे भी सर्व्वत्र होते हैं। इनका झुण्ड नहीं होता। यह कभी कभी बैलोंपर आक्रमण किया करते हैं और भेड़ें पकड़ ले जाते हैं। दक्षिणीय अफगानस्थानके युवक कभी कभी लकड़बग्घेकी मांदमें निहत्थे घुसकर लकड़बग्घे बांध लाते हैं। जङ्गलीकुत्ते और लोमड़ियां सभी जगह मिलती हैं। न्योला और ऊद भी मिलता है। भालू दो प्रकारके होते हैं। एक काला और दूसरा पीला। जङ्गली बकरियां, बारहसिङ्गा और हरिन भी मिलते हैं। निम्न हलमन्दमें जङ्गली सूअर मिलते हैं। रेगस्तानमें गोरखर मिलते हैं। चमगीदड़ और छछून्दर हर जगह होते हैं। गिलहरी नेवला और खरगोश भी मिलते हैं। १ से २३ तरहके पक्षी मिलते हैं। इनमें ६५

तरहके युरेशियन, १७ तरहके हिन्दुस्थानी और शेष सब युरेशियन और हिन्दुस्थानी हैं। एक टरटरेसरस और दूसरी बुकेनट खास इस देशकी चिड़िया है। अण्डा देनेके मौसममें भारत और अफरिकाके मरुस्थलकी कितनी ही चिड़ियां अफगानस्थान जाती हैं। जाड़ेके दिनोंमें अफगानस्थान युरेशियन पच्छियोंसे भर उठता है। अफगानस्थानमें भारतवर्ष-केसे कितनी ही तरहके सांप और बिच्छू हैं। यहांके सांपोंसें कम और बिच्छूमें अधिक विष होता है। अफगानस्थानके मेंडक कुछ तो युरेशियन ढङ्गके और कुछ हिन्दुस्थानी ढङ्गके होते हैं। कछुए सिर्फ काबुलमें होते हैं। मछलियां बहुत कम हैं। जितनी हैं, उनमें हिन्दुस्थानी और युरेशियन इन्हीं दो किस्मोंकी हैं।

पलुए पशुओंमें ऊंट सुदृढ़ और मोटा ताजा होता है। भारतके दुबले लम्बे डग्गे ऊंटोंकी अपेक्षा बहुत अच्छा होता है और अत्यन्त सावधानीपूर्व्वक पाला जाता है। कहीं कहीं दो कोहानके भी ऊंट दिखाई देते हैं, किन्तु यह देशी नहीं होते। यहांके घोड़े भारतवर्ष भेजे जाते हैं। अच्छे घोड़े, मैमना, खुरासान और तुर्कमान आदि स्थानोंमें मिलते हैं। यहांके याबू सुन्दर और सुदृढ़ होते हैं। इनसे बोझ लादने और सवारीका काम लिया जाता है। यह लदुए जानवरोंका काम बहुत अच्छी तरहसे कर सकता है, किन्तु शीघ्रगामी घोड़ेका काम नहीं। कन्धार और सीस्तानकी गायें बहुत दूध दिया करती हैं। अफगानस्थानका दूध, घी, दही और मक्खन बहुत अच्छा होता है। देशमें दो

तरहकी बकरियां होती हैं। एक श्वेत और दूसरी काली। दोनों तरहकी बकरियोंकी पूंछ बहुत मोटी और लम्बी चौड़ी होती है। वहांवाले इन्हें दुम्बा कहते हैं। दुम्बोंका बाल फारस और अब बम्बईकी राहसे युरोप जाता है। नोमाद जातिका धन दुम्बोंके गल्ले हैं और भोजन उनका मांस। गर्म्मियोंमें बहुसंख्यक दुम्बे हलाल किये जाते हैं। उनके मांसके टुकड़े नमकमें लपेटे जाकर धूपमें सुखा लिये जाते हैं। ऊंट तथा अन्यान्य पलुए पशुओंका मांस भी इसी तरहसे सुखा लिया जाता है। भेड़ें काली वा कृष्ण-श्वेत रङ्गकी होती हैं। इनके ऊनसे शाल प्रभृति तय्यार किये जाते हैं। अफगानस्थानमें नाना प्रकारके कुत्ते होते हैं।

वरगलमें लिखा है,—"अफगानस्थानमें भिन्न भिन्न जातिके लोग बसते हैं और नाना प्रकारकी भाषायें बोली जाती हैं। वहांके अफगानों और अरबोंकी भाषा 'पखतू' तथा 'पश्तू' है। यही भाषा अफगानी भाषा है। ताजीक और किजल-बाशोंकी भाषा फारसी है। हजारा और कितनी ही जाति-योंकी भाषा फारसीमिश्रित है। हिन्दकी वा हिन्दू और जाट, हिन्दुस्थानीभाषासे मिलती जुलती भाषा बोलते हैं। कुछ काश्मीरी और अरमनी भी काबुलमें जा बसे हैं, किन्तु इन लोगोंकी संख्या बहुत थोड़ी है।

"इनके अतिरिक्त कितनी ही और जातियां हैं, जिनकी उत्पत्तिका पता नहीं चलता। उनकी भाषा भी निराली है। मैं जहांतक अनुमान करता हूं, उनकी भाषा हिन्दीसे बहुत मिलती जुलती है और उसमें कहीं कहीं संस्कृत शब्द भी

पाये जाते हैं। इन जातियोंका बहुत बड़ा भाग काबुलप्रान्तके ऊंचे स्थानोंमें और हिन्दूकुश पर्व्वतमालाकी तराईमें बसता है। इनमें कुछ प्रधान जातियोंके नाम इस प्रकार हैं,—देगानी, लभ-घानी, साधु, कवल और नीमचाकाफिर। सम्भवतः यह सब जातियां पहले हिन्दू थीं, किन्तु पीछे मुसलमान बना ली गईं। अफगानस्थानकी सम्पूर्ण जातियोंमें अफगान जाति सर्व्वप्रधान है। पहले तो उसकी संख्या अधिक है,—दूसरे, वही देशका शासन करती है।" इनसाइक्लोपीडिया वृटानिकामें लिखा है,— "भारतकी फौजके सुयोग्य अफसर करनेल मेकग्रेगरने अफ-गानस्थानवासियोंको जनसंख्याका अन्दाजा लगानेकी चेष्टा की थी। उनकी जानमें अफगानस्थानकी जनसंख्या ४६ लाख एक हजार है। इसमें अफगान-तुरकस्थानवासी, चित्रालवाली, काफिर और यूसुफजईके स्वतन्त्र लोग सभी शामिल हैं। कर-नेल साहबके अन्दाजेका नकशा देखिये,—

ईमाक और हजारा	४००,०००
ताजीक	५००,०००
किजलबाश	१५०,०००
हिन्दू और जाट	५००,०००
कोहस्थानी इत्यादि	२००,०००
अफगान, पठान और चालीस हजार स्वतन्त्र यूसुफजई इत्यादि ...	२,३५६,०००
कुल	४,१०६,०००

अफगान जातिका वर्णन आरम्भ करनेसे पहले हम वहांकी कुछ प्रधान जातियोंकी बात कहते हैं। अफगानोंके उपरान्त "ताजीक" नामकी बड़ी और जबरदस्त जाति है। यह प्रधानतः देशके पश्चिमीय भागमें बसती है। ईरानी और देशकी आदि जाति समझी जाती है। इन लोगोंकी भाषा और आजकलकी फारसी भाषामें थोड़ा सा प्रभेद है। पोशाक, व्यवहार चेहरामुहरा अफगानोंसे मिलता जुलता है। इनमें और अफगानोंमें एक प्रत्यक्ष प्रभेद यह है, कि यह लोग एक जगह रहकर खेती बारी और नाना प्रकारके रोजगार करते हैं, किन्तु अफगान एक जगह स्थिर होकर रहना नहीं जानते। इस जातिके कितने ही लोग फौजमें भरती हैं। अफगान-सैन्यका बड़ा अंश इन्हीं लोगोंसे बना है। "किजलबाश" जाति भी ताजीकोंकी तरह ईरानी है। किन्तु इन दोनो जातियोंकी भाषामें थोड़ासा प्रभेद है। किजलबाश जातिकी उत्पत्ति फारसकी मुगल जातिसे हुई है। यह लोग आजकलकी फारसी भाषा बोलते हैं। कहते हैं, कि सन १७३७ ई०में हम लोग नादिर शाहके साथ फारससे काबुल आये थे। उस समय शाहने इस लोगोंको काबुलमें बसा दिया था। यह जाति सुन्दर और मजबूत है। अफगानिस्तानके सिपाही और तोपखानेमें बहुसंख्यक किजलबाश नौकरी करते हैं। "हजारा" जाति तुर्कीभाषा मिश्रित फारसीभाषा बोलती है। यह अपनी सूरतसे तातार-वंशकी जान पड़ती है। इन लोगोंकी कोई भी गुजरान बनती नहीं है। यह सर्वत्र देशमें फैले हुए हैं और सिह-

नत मजदूरी करके पेट पालते हैं। हजारा-पर्व्वतमालामें रहते हैं और शीतकाल उपस्थित होनेपर कुछके कुछ नौकरी वा मिहनत मजदूरीकी तलाशमें निकलते हैं। हजारा जातिके लोग बहुत ही गरीब हैं। सिर्फ गजनीके समीप इस जातिके कुछ लोग जमीन्दारी करते हैं। "हिन्दू" और "जाट" भी अफगानस्थानकी प्रधान जाति है। अफगानस्थानके अधिकांश हिन्दू क्षत्रिय हैं और वहां "हिन्दकी" के नामसे प्रख्यात हैं। यह व्यवसाय करते हैं और अफगास्थानके बड़े बड़े नगरोंसे लेकर किसी भी गिनती लायक देहाततकमें मौजूद हैं। देशके लेनदेनका रोजगार इसी जातिकी मुट्ठीमें है। यह अफगानोंको रुपये पैसेकी सहायता दिया करती हैं और अफगान इनको यत्नपूर्व्वक अपने देशमें रखते हैं। हिन्दू अफगानस्थानमें खूब निश्चिन्तताके साथ रहनेपर भी कई बातोंमें तकलीफ पाते हैं। उनपर "जजिया" नामक टिकस सिर्फ इसलिये लगा हुआ है, कि वह मुसलमान नहीं; हिन्दू हैं। वह अपना कोई भी धार्म्मिक उत्सव खुल्लमखुल्ला नहीं कर सकते, न काजीके सामने गवाही देने पाते हैं। घोड़ेकी सवारी भी नहीं करने पाते; यदि कर सकते हैं, तो नङ्गी पीठवाले घोड़ेपर। हिन्दू इतने कष्ट सहकर भी चार पैसेके रोजगारकी लालचसे वहां पड़े हुए हैं। दूसरी बात यह है, कि सिर्फ अपने धर्म्मकी बदौलत इतनी तकलीफें सहा करते हैं, किन्तु धर्म्म नहीं छोड़ते। वास्तवमें काबुलके हिन्दुओंके लिये यह कम प्रशंसाका विषय नहीं है। "जाट" सुन्नी जातिके मुसलमान हैं। उनकी उत्पत्तिका

हाल अज्ञात रहनेपर भी वह देशके आदि निवासी समझे जाते हैं। उनका रङ्ग पक्का और चेहरा सुन्दर होता है। काबुलके उत्तर भागमें कितनी ही जातियां रहती हैं। उनका हाल बहुत कम मालूम है। कारण, वह अपने पड़ोसियोंसे भी मिलना पसन्द नहीं करतीं। उनमेंकी बहुतसी जातियां अपने गल्ले लिये पहाड़ों पहाड़ों फिरती रहती हैं। कुछ जातियां स्थायी रूपसे बसकर कृषिकार्य्य करती हैं। कुछ अफगान सैन्यमें भरती हैं और कुछ अमीरों रईसोंकी गल्ले-बानी, खिदमतगारी प्रभृति नौकरियां करती हैं। यह सब जातियां खास अपनी भाषा बोलती हैं और एक जातिकी भाषा दूसरीकी भाषासे नहीं मिलती। इन जातियोंके लोग अपनेको कहते तो मुसलमान हैं, किन्तु अपना धर्म्मकर्म्म बिलकुल नहीं जानते। जान-पड़ता है, कि यह सब जातियां पहले हिन्दू थीं।

अब हम देशकी सर्व्वप्रधान और राजा जाति "अफगान"की बात कहते हैं। ऊपर उनकी गणना लिख चुके हैं। इस जातिकी चालचलन, पोशाक, रीति व्यवहार आदि सभी बातें देशकी अन्यान्य जातियोंसे अलग हैं। वह अपनी निजकी भाषा "पश्तो" वा "पख्तो" बोलती हैं। असलमें यह भाषा विदेशियोंके लिये बहुत कठिन है। भाषाका विचार किया जावे, तो उसमें फारसी, अरबी और संस्कृत शब्द मिलेंगे। इससे जान पड़ता है, कि इसकी उत्पत्ति इन्हीं तीनो भाषाओंसे हुई है। इस भाषाकी बोली है, किन्तु इसके अक्षर नहीं हैं। अरबी अक्षरोंको कुछ

और टेढ़ा सीधा करके लिख ली जाती है और इन्हीं अक्षरोंमें इसका साहित्य है। अफगान भाषाका व्याकरण अत्यन्त सरल है। किन्तु इसकी क्रिया वा फेल बहुत कठिन है। कारण, पश्तोकी क्रिया "हिब्रू" भाषाकी क्रियाके अनुसार बनी हुई है। पश्तो भाषामें कुछ ऐसे स्वर हैं, जैसे एशियामात्रकी भाषाओंमें नहीं मिलते। ऐसे स्वर लिखनेके लिये अरबीके अक्षर नये ढङ्गसे तोड़े मरोड़े गये हैं। यह स्वर किसी कदर संस्कृतके मिले हुए अक्षरके स्वरसे मिलते जुलते हैं। कानोंको इतने विचित्र जान पड़ते हैं, कि जल्द निकलते नहीं,—उनमें बसे रहते हैं।

अफगान जातिके दो भाग हैं। एक तो वह जो सपरिवार और गल्लोंके साथ अच्छी अच्छी चरागाहें और रमणीक स्थान ढूंढता हुआ, इधर उधर भटकता फिरता है। दूसरा वह, जो एक जगह जमकर बसा हुआ और खेती बारी अथवा अन्यान्य चलते धन्धोंमें लगा हुआ है। पहले तरहके खानाबदोश अफगानोंकी जातिको नोमाद कहते हैं। यह काबुल प्रान्त और खुरासान प्रान्तमें बसती है। यह जाति झगड़े बखेड़ोंसे बचती हुई शान्तिपूर्व्वक समय काटा करती है। सिर्फ कभी कभी भीषण रक्तपात भी कर बैठती है। यह जाति खेती नहीं करती। सिर्फ अपने गल्लेकी रक्षा करती और उन्हींकी बदौलत अपना जीवन निर्व्वाह करती है। खूब तन्दुरुस्त और मिहनती होती है। बहुत परहेजके साथ रहती है। साथ साथ अज्ञान और शक्की भी होती है। मवेशी चराने और सड़कोंपर डाके

डालनेमें कमाल रखती है। सरलहृदय होती और अपने घर आये अतिथिका सत्कार करती है। इसकी अतिथिसेवा देशप्रसिद्ध है। किन्तु इसका व्यवहार उसके घर वा पड़ावके भीतर ही होता है। जब अतिथि उसके पड़ावसे बाहर निकल जाता है, तो सोनेकी चिड़िया वा लूटका शिकार समझा जाता है। अफगान कुछ देर पहले जिस अतिथिको आश्रय और भोजन देते हैं,—कुछ देर बाद, सड़कपर, उसीको लूट लेते और मार भी डालते हैं। नोमाद जाति काबुल सरकारको अपने अपने सरदारोंकी मारफत राजकर भेजा करती है। यह जाति अफगान सैन्य और मिलिशियामें भी भरती है। इसके अलावा शान्तिके समय काबुल-सरकारसे बहुत कम सम्बन्ध रखती है। फिर भी अपने अपने सरदारोंके अधीन रहती है, और सरदार काबुल-सरकारकी आज्ञा प्रतिपालन किया करते हैं। जातिके बड़े बड़े झगड़े सरदार मिटाया करते हैं, छोटे छोटे झगड़ोंका निबटेरा मुल्ले काजी कर दिया करते हैं।

यह हुई खानाबदोश अफगानोंकी बात। अब नगरवासी अफगानोंका हाल सुनिये! खानाबदोशोंकी अपेक्षा इन लोगोंकी संख्या अधिक है। अफगान-फौजमें यही लोग अधिक हैं। इस जातिके प्रायः समस्त अफगान जमीन्दार हैं। सिवा फौजी नौकरी और खेती बारीके दूसरा काम नहीं करते। व्यापार करते लजाते हैं। लाखो अफगानोंमें जो गिनतीके अफगान रोजगार करते हैं, वह स्वयं रोजगारके समीप नहीं जाते, नौकरोंसे कराते हैं। अफगान खूबसूरत और मजबूत होते

हैं। स्वदेशमें भांति भांतिकी कठिनाइयां बरदाश्त कर सकते हैं। शिकार और घोड़ेकी सवारीके बहुत शौकीन होते हैं। बन्दूक और ढेलेसे बहुत अच्छा निशाना लगाते हैं। प्रसन्नवदन और आह्लादित रहते हैं। उनमें अय्याशी खूब फैली हुई है। विदेशियोंके सामने बहुत घमण्ड दिखाते हैं। अफ़गान सुन्नी सम्प्रदायके मुसलमान हैं।

मध्यश्रेणी वा निम्नश्रेणीके अफगानोंकी पोशाक तो वही है, जो इस देशमें आनेवाले व्यापारी अफगानोंकी होती है। वहांके रईसोंकी पोशाकका भी ढङ्ग ऐसा ही होता है। फर्क इतना है, कि इनकी पोशाकका कपड़ा मोटा और उनकी पोशाकका पतला होता है। रईस और मध्यश्रेणीके लोग चुगा पहनते हैं। मध्यश्रेणीके लोगोंके लिये यह कपड़ा भेड़के अच्छे ऊन अथवा ऊंटके रूयेंसे तय्यार किया जाता है। चुगा अफगानोंकी जातीय पोशाक है। बड़े बड़े रईस शालका चुगा पहनते हैं। अफगानोंका कमरबन्द १६ से लेकर बीस फुटतक लम्बा और कोई चार फुट चौड़ा होता है। रईस लोग शालदोशालोंसे कमर कसते हैं, मध्यश्रेणी वा निम्नस्थितिके लोग सूती चादरोंसे। कमरबन्दमें अफगानी "छुरा" तथा एक वा अनेक पिस्तौलें लगी होती हैं। अफगान कभी कभी ईरानी पेशकब्ज भी कमरसे लगा लेते हैं। अपने शिरपर पहले कुलाह रखते हैं, और कुलाहकी गिर्द पगड़ी लपेटते हैं। रईसोंकी पगड़ी कीमती और अन्य श्रेणीवालोंकी साधारण होती है। अमीर लोग चमड़े, ऊन और कपड़ेका, तथा सर्वसाधारण सिर्फ चमड़ेका जूता पहनते हैं। अफगान जातिकी उच्चकुलकी रमणियां भीतर

बेगियन वा फतुहीमा एक तङ्ग वस्त्र पहनती हैं। उसपर एक ढीलाढाला चौड़ी बांहोंका कुरता पहनती हैं। यह कुरता रेशमी सुत्थनपर भूलता रहता है। साधारणत: रेशमी रूमाल शिरपर बांधती हैं। रूमालके दो सिरे ठुड्डीके पास ग्रापसमें बांध देती हैं। कभी कभी ऊनी शाल कन्धोंपर डाल लिया करती हैं। जब बाहर निकलती हैं, तो श्वेत वा नीले रङ्गका बुरका पहन लेती हैं। इससे उनका सर्व्वाङ्ग ढंक जाता है। सिर्फ आंखें खुली रहती हैं। कोई कोई उच्चकुलकी ललना बाहर निकलनेपर मुलायम मोजे और स्लिपर जूते पहनती हैं।

अफगान जातिकी उत्पत्तिके विषयमें नेरङ्गे अफगानमें इस तरहसे लिखा है,—"ऐसा नियम है, कि जबतक कोई जाति राजनीतिक गौरव प्राप्त नहीं करती, तबतक उसकी उत्पत्तिके विषयमें बिलकुल ध्यान नहीं दिया जाता। इस तरहकी कितनी ही जातियोंमें अफगान भी एक जाति है, जिसकी उत्पत्ति जाननेका खयाल सैकड़ों सालतक किसी ऐतिहासिकको नहीं हुआ। यह खयाल हुआ तो उस समय, जब ईरानमें सफवियोंका घराना और भारतवर्षमें मुगलशासनका सितारा ऊंचाईपर चमक रहा था। कन्धारका सूबा, ईरान और अफगानस्थानमें लड़ाई झगड़ेका कारण बना हुआ था। उस समय अफगान जाति इतनी शक्तिशालिनी हो गई थी, कि वह जिस राजाको अपना राजा मानती, उसीका प्रभाव समस्त अफगानस्थानपर फैलता था। उस जमानेमें केवल, अफगानस्थान हीमें झगड़े फिसाद नहीं हुआ करते थे, वरञ्च अफगान जातिके

विषयमें भी झगड़ा पड़ा हुआ था। भारतके मुगल-सम्राट जहांगीरके शासनकालमें ईरानके राजदूतने कहा था, कि अफगान दैत्य वंशोत्पन्न हैं। उसने प्रमाणमें एक किताब दिखाई। उसमें लिखा था, कि जुह्हाक बादशाहको किसी पाश्चात्य देशमें कुछ सुन्दर स्त्रियोंके राज्य करने और लूट ताराजका पेशा करनेकी खबर मिली। जुह्हाकने एक बहुत बड़ी फौज उस देशपर अधिकार करनेके लिये भेजी। घोर युद्ध हुआ। स्त्रियां जीतीं जुह्हाककी फौज परास्त हुई। इसके उपरान्त जुह्हाकने नरीमानके सेनापतित्वमें एक बड़ी फौज स्त्रियोंके देशमें भेजी। इसबार जुह्हाककी सैन्य जीती। स्त्रियोंने एक सहस्र क्वांरी लड़कियां जुह्हाक बादशाहके लिये देकर शाही फौजसे सन्धि कर ली। वापसीके समय एक पर्व्वतके समीप नरीमानने डेरा डाला। रातको एक विशालाकार दैत्य पर्व्वतसे निकला। इसको देखकर बादशाही लश्कर भागा। दैत्य उन स्त्रियोंके पास रहा। भागी हुई फौज जब फिर उस जगह वापस आई, तो उसने स्त्रियोंको गर्भिणी पाया। यह बात जुह्हाकको मालूम हुई। उसने आज्ञा दी, कि उन स्त्रियों-को उसी पर्व्वत और वनमें रहने देना चाहिये, वह यदि नगरमें आवेंगी, तो उनके सन्तान नगरवासियोंको कष्ट पहुंचावेंगे। उन स्त्रियोंसे जो लड़केबाले हुए, उन्हींको अफगान जाति बनी।

"ईरानके राजदूतकी यह बात सुनकर खानेजहान लोदीने कुछ आदमियोंको अफगानोंकी उत्पत्ति जाननेके लिये अफगा-नस्थान भेजा। उन लोगोंकी जांचसे जान पड़ा, कि अफगान

याकूब पैगम्बरके लड़के यहूदाके वंशसे हैं। खानेजहान लोदीने इस जांचपर अफगानस्थानका एक इतिहास लिखा। उसमें ईरानी राजदूतका खण्डन हो जानेपर भी अफगान जातिकी उत्पत्तिका यथार्थ निर्णय नहीं हो सका। इसमें यहांतक लिखा गया है, कि कैस अब्दुररशीद एक मनुष्यका नाम था। वह मदीनेमें मुसलमान हुआ। वहीं उसने मुसलमानोंके बहुत बड़े सेनापति खालिद बिन वलीदकी कन्या मुसम्मात सारासे विवाह किया। इस कन्यासे तीन पुत्र उत्पन्न हुए। यही तीनो अफगानोंके पूर्व पुरुष हैं। किन्तु पुस्तकमें यह नहीं लिखा है, कि कैस अब्दुररशीद मुसलमान होनेसे पहले किस जातिका मनुष्य था।"

नैरङ्गे अफगानमें जो बात अधूरी छोड़ दी गई, वेलिउ साहब अपने जरनलमें उसीको पूरी करते हैं। वह भी कैसको अफगानोंका आदि पुरुष बताते हैं और अफगानस्थानके सात प्रामाणिक इतिहासोंके आधारपर कहते हैं, कि कैस यहूदी था। यहूदीसे वह मुसल्मान हुआ। वेलिउ साहबने अपनी इस बातके प्रमाणमें बहुतसी बातें कही हैं। जिन्हें स्थानाभाववश हम प्रकाश नहीं कर सकते। अफगान भी कहते हैं, कि मुसलमान होनेके पहले हम यहूदी थे। इनसाइक्लोपीडियामें भी अफगान यहूदियोंकी औलाद कहे गये हैं। जो हो; सम्भव है, कि अफगान यहूदी ही हों और बहुत पहलेसे अफगानस्थान आकर बसे हों।

अफगानस्थानके साहित्यके विषयमें अधिक कहना नहीं है। कारण, अफगान बड़ी ही अपढ़ जाति है। काजी मुल्लाओं-

को छोड़कर ऐसे बहुत कम लोग हैं, जो अपने देशकी भाषा लिख पढ़ सकते हों। अफगानोंकी भाषा पश्तोमें गिनती-की किताबें हैं। अफगास्थानमें जो कुछ साहित्य मौजूद है, वह फारसी भाषाका है। चिट्ठी-पत्री, व्यापार सम्बन्धी लिखा पढ़ी, सरकारी काम प्रभृति सब फारसी भाषामें किय जाता है। पश्तो साहित्यमें सिर्फ धर्म्म, काव्य, कहानियां और इतिहासकी कुछ पुस्तकें हैं! ग्रन्थकर्त्ताओंकी गणना बहुत थोड़ी है और उनकी किताबें थोड़ेसे आदमी पढ़ते हैं।

अफगानस्थानमें नाव चलाने लायक नदी नहीं हैं और गाड़ियां भी नहीं हैं। इसलिये वहांकी पहाड़ी राहोंपर लदुए जानवर, विशेषतः ऊंट माल ले आने और ले जानेका काम किया करते हैं। कारवान और काफिले सौदागरी माल लेकर इधर उधर आते जाते हैं। व्यापारकी प्रधान राहें इस तरह अवस्थित हैं,—(१) फारससे मशहद होती हुई हिराततक (२) बुखारेसे मर्व होती हुई हिराततक (३) उसी जगहसे करशी, बलख और खुलम होती हुई काबुलतक, (४) पञ्जाबसे पेशावर और अबखजाके दर्रेसे होती हुई काबुल-तक, (५) पञ्जाबसे घावालारी दर्रेसे होती हुई गजनीतक, (६) सिन्धसे बोलन दर्रेसे होती हुई कन्धारतक। इसके अतिरिक्त पूर्व्वीय तुरकस्थानसे चित्राल होती हुई जलाला-बादतक और पेशावर होती हुई दीरतक भी एक राह है। किन्तु यह नहीं मालूम, कि इस राहसे काफले चलते हैं, वा नहीं। अफगानस्थानसे सिन्धकी और ऊन, घोड़े, रेशम, फल, madder और assafoetida जाते हैं। भारतवर्षसे

अफगानस्थानमें पेशावरकी राहसे रुई ऊन और रेशमी कपड़े जाते हैं। इनके अलावा रूस और इङ्गलण्डकीभी कितनी ही चीजें अफगानस्थानमें खपती हैं। सन १८९२ ई०में अफगानस्थान और भारतवर्षमें जो आमदनी और रफतनी हुई, उसका नकशा इस प्रकार है,—

	भारतमें आया	भारतसे गया।
पेशावरकी राहसे ...	२३४७६९५ ...	१८०६६४५
बावाजरी दर्रेकी राहसे ...	१६५०००० ...	२४६००००
बोलन दर्रेसे	४७०८०५० ...	२८३३८०
	कुल—४७७५७४५ ...	४५५३०२५

अफगानस्थान काबुल, जलालाबाद, गजनी, कन्धार, हिरात और अफगानतुर्कीस्थान प्रदेशमें विभक्त है। काबुल, गजनी, कन्धार और हिरातकी बात यथासमय कहेंगे। प्रत्येक प्रधान प्रधान प्रदेशोंके नगरोंका हाल नीचे प्रकाश करते हैं,—

काबुल-नदीकी उत्तर ओर समुद्र वक्षसे १ हजार ९ सौ ४६ फुटकी ऊंचाईपर एक लम्बे चौड़े मैदानमें जलालाबाद बसा है। यह सड़कके फासलेसे काबुलसे नौ मील और पेशावरसे ९१ मीलके फासलेपर अवस्थित है। जलालाबाद और पेशावरके बीचमें खैबर और उसके पासके दर्रे हैं। जलालाबाद और काबुलके बीचमें जगदलक और खुर्दकाबुल आदि दर्रे हैं। सन १८४२ ई०में पालक साहब नामक पहले अंगरेज इन स्थानतक गये थे। शहरकी शहरपनाह २ हजार एक सौ गजमें फैली हुई है। शहरमें कोई ३ सौ मकान और कोई २ हजार मकीन होंगे। शहरपनाहके

बाहर बागोंकी चहारदीवारियां हैं। इनकी आड़से किसी आक्रमणकारी शत्रुका आक्रमण रोका जा सकता है। पालक साहबने शहरपनाह तोड़ दी थी, किन्तु वह फिर बना ली गई। जलालाबादकी गिर्द कोई २५ मीलकी लम्बाई और तीन वा चार मीलकी चौड़ाईमें खेती होती है। यहां चारो ओर जल मिलता है। जलालाबादप्रदेश कोई ८० मील लम्बा और ३५ मील चौड़ा है। जलालाबादके पार्श्ववर्ती दर्रोंमें अनेकानेक टूटे फूटे बुद्धमन्दिर मौजूद हैं। बाबर बादशाहने यहां कितने ही बाग लगवाये थे और उन्हींके लगाये "जलालुद्दीन" बागके नामपर शहरका नाम जलालाबाद पड़ा। (२) काबुलसे २० मील उत्तरपूर्व्व कोहदामनमें इतालीफ नाम्नी बसती है। सन १८४२ ई०में अङ्गरेजसेनापति मेकासरिलने यह गांव बरबाद कर दिया था। इसके बाद फिरसे बसा। यह चित्रसदृश स्थान अत्यन्त मनोरम है। पहाड़की तराईमें एक स्वच्छ जलस्रोत किनारे नगरकी बसती है। बसतीकी चारो ओर अङ्गूरकी टट्टियां और उत्तमोत्तम फलोंके बाग हैं। बसतीके ऊपर हिन्दूकुश पर्व्वतकी बरफसे ढंकी हुई चोटी अति शोभाको प्राप्त होती है। प्रत्येक नगरवासीके पास एक एक बाग है और प्रत्येक बागमें बुर्ज बना हुआ है। फलोंकी फसलमें लोग फल खानेके लिये घर छोड़कर बागमें जा बसते हैं। बसती और उसके निकटवर्त्ती गांवोंमें कुल १८ हजार मनुष्य बसते हैं। (३) चारीकार नगरमें कोई पांच हजार मनुष्य बसते हैं। यह इतालीफसे बीस मील उत्तर और कोहदामनकी

छोरपर बसा हुआ है। बारा नदीकी गोरबन्द शाखासे इनमें जल पहुंचता है। इसी जगह बखतरिया, हस्तिराब और पिलबोकी राहें मिलकर तिराहा बनाती हैं। इसी जगहसे तुरकस्थानको काफले जाते हैं और यहीं कोहस्थानका गवरनर रहता है। यहां अङ्गरेजी फौजका कबजा था। सन १८४१ ई०में काबुलके गदरके जमानेमें यहांकी अङ्गरेजी फौज काबुल चली, किन्तु राह हीमें नष्ट कर दी गई। फौजका सिर्फ एक सिपाही जान लेकर काबुल पहुंचा था। (४) कलाते गिलजई प्रदेशकी कोई खास बसती नहीं है। प्रदेशके नामका सिर्फ एक किला तारनक नदीके दाहने किनारेपर बना है। यह कन्धारसे ८६ मीलके फासलेपर और समुद्रजलसे ५ हजार ७ सौ ७६ फुटकी ऊंचाईपर बना है। सन १८४२ ई०में इसपर भी अङ्गरेजोंने अधिकार कर लिया था। (५) गिरिश्क भी किला ही है, किन्तु नाममात्रके लिये इसके साथ एक बसती भी लगी हुई है। यह किला बड़े मौकेका है। हिरात और कन्धारके बीचकी शाहराह, कितनी ही छोटी छोटी राहें और हलमन्द नदीका गर्मियोंके मौसमका घाट इसकी मारपर है। सन् १८३९ ई०के अगस्त महीनेसे सन् १८४२ ई०तक इसपर अङ्गरेजोंका कबजा रहा। कबजेके आखरी नौ महीने बड़ी मुश्किलसे कटे थे। [६] फरह नगर फरह नदीके किनारेपर हिरात-कन्धारकी सड़क किनारे सीस्तान-खालमें बना है। हिरातसे १ सौ ६४ मील और कन्धारसे २ सौ ३६ मील दूर है। शहरकी गिर्द बुर्जदार शहरपनाह है और शहरपनाहके

नीचे चौड़ी और गहरी खाई है। प्रयोजन होनेपर खाई पानीसे भर दी जा सकती है। खाईपर पुल पड़ा रहता है। शहर लम्बा है। इसके दो फाटक हैं। लड़ाई भिड़ाईके लिये मौक़ेकी जगह है, किन्तु यहांका जलवायु खराब है। शहरमें गिनतीके मकान हैं। इसको शाह अब्बास और नादिरने यथासमय बरबाद किया था। सन् १८३७ ई०में कोई ६ हजार नगरवासी नगर छोड़कर कन्धार बसाने चले गये थे। (७) सब्जार नगरका नाम फ़ारसीके "अस्पेजार" शब्दका अपभ्रंश है। यह नगर हिरातसे ८५ और फ़रहसे ७१ मीलके फ़ासलेपर है। सन् १८४५ ई०में नगरमें कोई एक सौ मकान और एक छोटासा बाजार था। नगरका बड़ा भाग वीरान पड़ा था। इससे जान पड़ता है, कि किसी जमानेमें वह बहुत आबाद रहा होगा। कितनी ही नहरें हारूत नदीसे नगरमें पहुंचाई गई हैं। यह नहरें शत्रुकी चढ़ाईमें बहुत बाधा उपस्थित कर सकती हैं। [८] हिरातकी पूर्व और गोर प्रदेशमें जरनी छोटासा नगर है। गोर प्रदेशके गोरीदवंशने कई पुश्ततक अफ़गानस्थानपर राज्य किया था। फेरियर साहबके कथनानुसार जरनी गोरकी पुरानी राजधानी है। शहरपनाहकी मेखला पहने हुए जरनीके खण्डर उसकी भूतपूर्व विशाल बस्तीका पता बताते हैं। यह घाटीमें बसा है और कितने ही घुमावदार जलस्रोत इसको स्थान स्थानसे चूमते हैं। सन् १८४५ ई०में इसकी जनसंख्या कोई बारह सौ थी। अधिकांश नगरवासी फ़ारसकी प्राचीन जातिके हैं। [९] क़न्दज प्रदेश अफ़गान-तुरकस्थानमें है। इसके पूर्व

बदखशां, पश्चिम खुल्म, उत्तर अक्ष नदी और दक्षिण हिन्दू कुश है। कुन्दुजके जिले इस प्रकार हैं,—[क] कन्दज पांच वा छः सौ छोटे छोटे कच्चे मकानोंकी बसती है। बसतीके समीप कुछ बाग और खेत हैं और एक किनारे, टीलेपर एक कच्चा किला है; (ख) हिरातिइमाम अक्ष नदीके किनारे एक उपजाऊ भूभागपर बना है; यह बसती भी कन्दजकीसी ही है; सिर्फ यहांका किला अपेक्षाकृत अच्छा है और उसकी चारों ओर दलदलकी खाई है; [ग] बागलान और [घ] गोरीसुरखाब नदीकी आर्द्र घाटीमें बसे हुए हैं; [ङ] दोशी बसती इसी घाटीमें अन्दराब नामक जलस्रोतके किनारे बसी है; [च] किलगाई और खिननान बसतियां इसी नदीके छोरपर बसी हुई हैं; [छ] अन्दराब बसती हिन्दूकुश पर्व्वतके तल और खावाक दररेके समीप बसी हुई है। मशहूर है, कि दशवीं शताब्दिमें परयानमें चांदीकी खानि रहनेकी वजहसे यह बसती बहुत गुलजार थी; (ज) खोस्त बसती अन्दराज और कन्दजके बीचमें बसी हुई है। बादशाह बाबर और उनके वंशधरोंके समय यह बसती बहुत मशहूर थी; (झ) नारिन और इशकिमिश बस्तियां बघलानके पूर्व्व, बघलान नदीके उपसपर और कन्दज नदीकी शोराब नाम्नी शाखापर बसी हुई हैं; [ञ] फरहङ्ग और चाल दोनों बसती बदखशांकी सरहद्दपर बसी हुई हैं और इनका हाल विदेशी ऐतिहासिकोंको मालूम नहीं है; (ट) तालीकान बसती भी बदखशांकी सरहद्दपर है। यह कन्दज और बदखशांकी राजधानी फैजाबादके बीचकी शाहराहपर बसी हुई है। अब यह गिरी

हुई दशामें हैं, किन्तु पुरानी और खूब मशहूर है। बसतीके समीप एक किला भी है। चङ्गेज खांने इसका घेरा किया था। कुन्दजवाले मुरादबेगके शासनकालमें यह बदखशांकी राजधानी थी; (ठ) खानाबाद खान नदीके किनारे बसा है और किसी जमानेमें इस प्रान्तके रईसोंका ग्रीष्मनिवास था। [१०] खुल्म प्रदेश कुन्दज और बलखके बीचमें है। जहांतक मालूम है, इसके जिले इस प्रकार हैं;—[क] ताशकरघान वा खुल्म बसती अच्च नदीके मैदानपर बसी है। इसकी चारो ओर जलसे सींचे हुए अच्छे अच्छे बाग हैं। इससे ४ मील दक्षिण कुछ गांव हैं। गांवों और कसबेकी मिली जुली जनसंख्या कोई १५ हजार है; (ख] हैबक बसती किसी कदर सुदृढ़ किलेकी गिर्द बसी हुई है; बसतीके मकान प्रायः गुम्बजदार और बेढङ्गे बने हैं। खुल्म नदीकी घाटी यहां खुलती है। स्थान उपजाऊ है। नदीके दोनो किनारे फल वृक्षोंसे ढंके हैं। इसी जगह एक बुद्ध-स्तूप है; [ग] खुल्म नदीके सिरेपर खुर्रम और सरबाग नामकी दो बसतियां हैं। [११] बलख प्रदेशका बल्ख बहुत पुराना नगर है। नगरकी चारो ओर कोई बीस मीलतक खण्डर पड़ा हुआ है। भीतरी नगर ४ वा ५ मीलके घेरेकी टूटी फूटी शहरपनाहके भीतर बसा हुआ है। शहरपनाहके बाहर खण्डरोंमें भी कुछ लोग बसते हैं। सन् १८५८ ई०में अमीर दोस्त मुहम्मद खांका लड़का, तुरकस्थानका गवरनर अफ़जल खां अपनी राजधानी बलखसे तख्तपुल ले गया। तख्तपुल बल्खसे ८ मील पूर्व है। इस जिलेमें मजारेशरीफ़ भी

वर्णनयोग्य बसती है। वहांवाले कहते हैं, कि मजारेशरीफमें मुसलमान पैगम्बर मुहम्मदके दामाद अलीकी कब्र है। दूर दूरके मुसलमान कब्रका दर्शन करने आते हैं और वहां साल साल बहुत बड़ा मेला लगता है। नाम्बरी नामक लेखकका कहना है, कि कब्रपर एक तरहके गुलाबके पेड़ हैं। इनकी रङ्गत और सुगन्धिको संसार भरके गुलाब नहीं पहुंचते। पहाड़के भीतर बल्ख नदीके किनारेके जिलोंका हाल अङ्गरेज ग्रन्थकारोंको मालूम नहीं है; [ख] आकचा बसती बल्खसे ४० वा ४५ मील पश्चिम है। बसती छोटी होनेपर भी जल और मनुष्योंसे भरी पुरी है। बसती मोरचाबन्द है और उसमें एक किला भी है। (१२) चहारअकलीम वा चार प्रदेशके जिले इस प्रकार हैं,—(क) शिबरघन बसती आकचेसे २० मील पश्चिम है। बसतीमें कोई बारह हजार उजबक और पारसीवान बसते हैं। बसतीके मोरचाबन्द न होनेपर भी उसमें एक किला है। यह अच्छे अच्छे बागीचों और खेतोंसे घिरी हुई है। सिरीपुल बसतीसे यहां पानी आता है। कभी कभी सिरीपुलवाले पानी रोक देते हैं। इससे दोनो बसतियोंके रहनेवालोंमें युद्ध हो जाता है। यहांकी भूमि उपजाऊ और यहांके रहनेवाले दृढ़ तथा पराक्रमी हैं; [ख] अन्दखुई शिबरघनसे बीस मील उत्तर-पश्चिम रेगस्थानमें है। बसतीमें, मैमना और सिरीपुलसे जल आता है। किसी जमानेमें यहां कोई ५० हजार मनुष्य बसते थे। किन्तु सन् १८४० ई०में हिरातके यारमुहम्मदके हाथसे ऐसी तबाह हुई, क आजतक न सुधरी; [ग] मेमना बसती बल्खसे एक सौ

पांच मीलके फासलेपर और अन्दखुईसे ५० मील दक्षिण-पश्चिम है। राजधानीके सिवा कोई दश गांव इसके समीप हैं। राजधानी और गांवोंकी मिली जुली जनसंख्या कोई एक लाख है। इस प्रान्तमें रोजगार और व्यापार खूब चलता है, (घ) सिरीपुल वसती बलखसे उत्तर-पश्चिम और मैमनेसे पूर्व्व है। इसकी जनसंख्या मेमना जिलेकी अपेक्षा कुछ कम है। वसतीके दो तिहाई मनुष्य उजबक हैं और शेषके हजारा।

प्राचीन इतिहास।

बेलिउ साहब जरनलमें लिखते हैं,—"आठवीं शताब्दिके आरम्भमें अफगानजाति इतिहासमें लिखी जाने लायक हुई। उस समय यह गोर और खुरासानके पश्चिमीय किनारेपर वसती थी। इसी समय या इससे कुछ पहले अरबोंने अफगान राज्यपर आक्रमण किया। उस समय अरबोंके एक हाथमें कुरान और दूसरेमें तलवार रहती थी। इसी सूरतसे उन लोगोंने कितने ही देशोंमें सरलतापूर्व्वक प्रवेश करके अपना धर्म्म प्रतिष्ठित किया था। असलमें उन लोगोंने अफगानोंको धर्म्म परिवर्त्तनके लिये उत्सुक पाया। थोड़े ही समयमें जातिका बहुत बड़ा भाग मुसलमान बन गया।

"इस घटनाके दो शताब्दि बाद देशके उत्तरीय और पूर्व्वीय भाग—काबुलके वर्त्तमान प्रदेशोंपर उत्तर ओरसे तातार बादशाह

सुबुक्तगीनने आक्रमण किया। उसके साथ कट्टर मुसलमान तातार थे। उसने विना विशेष कठिनाईके कावुलके प्राचीन शासनकर्त्ता हिन्दुओंको कावुलप्रान्तसे मार भगाया। सुबुक्तगीन कावुलमें जमकर बैठ गया और कुछ सालके उपरान्त सन् ९७५ ई॰में उसने गजनी नगर बसाया और उसीको अपनी राजधानी बनाया। इसमें सन्देह नहीं, कि सुबुक्तगीनका अधिकार प्रतिष्ठित करनेमें अफगानोंने भी खासी सहायता दी होगी। कारण, एक तो वह लोग कावुलप्रान्तके किनारे नये नये आबाद हुए थे,—दूसरे, तातारोंकी तरह वह भी मुहम्मदी धर्मके अनुयायी थे। सन् ९९७ ई॰में सुबुक्तगीनके मरनेपर उसका पुत्र महमूद सिंहासनारूढ़ हुआ। उस समय बहुसंख्यक अफगान उसकी फौजमें भरती हुए। महमूदने जिस जिस ओर आक्रमण किया, उसी उसी ओर अफगान सैन्यने उसे बहुत सहायता दी। विशेषतः भारतवर्षपर बारबार आक्रमण करनेमें अफगान सिपाहियोंने और ज्यादा सहायता पहुंचाई। अन्तमें अफगान सैन्य हीकी सहायतासे सन् १०११ ई॰में महमूदने दिल्लीपर कबजा कर लिया! महमूदने अफगान सिपाहियोंको बहुत पसन्द किया। उसने बहुसंख्यक अफगानोंको अफगानस्थानसे भारतवर्ष भेजकर वहां उनका उपनिवेश बनाया। रुहेलखण्ड, मुलतान और डेराजातमें अफगानोंके उपनिवेश बने। इन स्थानोंमें प्रवासी-अफगानोंके वंशधर आज भी पाये जाते हैं।

"सन् १०३० ई॰में महमूदकी मृत्यु हुई। तिग्रिससे लेकर गङ्गा किनारेतक फैला हुआ महमूदका लम्बा चौड़ा राज्य

उसके बेटे मुहम्मदके हाथ लगा। मुहम्मद नालायक था। उसने अपने जोड़ा भाई मसऊदके साथ झगड़ा किया। मसऊदने महमूदको सिंहासनसे उतार दिया। इस प्रकार राज घरानेमें झगड़ा चला और सालोंतक चलता रहा। अन्तमें लाहोरमें मुहम्मद नामे मनुष्यने सुबुक्तगीन घरानेके अन्तिम बादशाह खुसरो मलिकको हत्याकरके यह बादशाही घराना निर्वंश कर दिया। असलमें महमूदकी मृत्युके उपरान्त होसे इस घरानेका पतन आरम्भ हुआ। उसी समयसे उसके फारस और भारतवर्षमें जीते हुए प्रदेश एक एक करके स्वतन्त्र होने लगे थे।

"गजनीका साम्राज्य कुल १ सौ ८८ साल जीया। इसकी उत्पत्तिके समय अफगान मातहत सिपाही बने। जैसे जैसे यह मरने लगा अफगान अपने शौर्य्य वीर्य्यके प्रतापसे उन्नत होते गये और थोड़े ही दिनोंमें सैनिक तत्त्वावधान करने योग्य बन गये। यह शक्ति वह अपने मसरफमें लाये। सन् ११५० ई०में अफगान अपने देशकी गोर जातिसे मिल गये। गोर जातिका राजकुमार सुरी अफगानों और गोर लोगोंकी फौज लेकर गजनीपर चढ़ गया। गजनीपर कबजा किया और उसको फौजसे अच्छी तरह लुटवा लिया। सन् ११५१ ई०में गजनवी घरानेके बैरम नामे मनुष्यने गजनी विजय किया और सुरीको गिरफ्तार करके मरवा डाला। इसके अनन्तर सुरीके भाई अलाउद्दीनने गजनीपर आक्रमण करके अधिकार कर लिया। बैरमखां भारतवर्ष भाग आया। अलाउद्दीनने अपनी सैन्यसे सात दिनोंतक गजनी नगरको लुटवाया। इसके उपरान्त उसने

इस नगरको आग लगाकर भस्मकर दिया और ध्वंस गजनीपर नया गजनी नगर बनाया। इसी नगरको अपनी राजधानी बनाई।

"यह राजघराना अल्पकालमें नष्ट हो गया। सिर्फ छः या सात बादशाह हुए। सन् १२१४ ई०में महम्मद गोरीकी मृत्यु-के साथ साथ इस घरानेका राज्य भी मर गया। गोर घरानेका राज्य अफगानस्थानके भीतर ही भीतर रहा और वहीं नष्ट हो गया। इस घरानेकी एक शाखाने भारतवर्ष विजय किया था और सन् ११९३ ई०में गोरवंशीय इबराहीम लोदीने भारतवर्षकी उस समयकी राजधानी दिल्लीपर अधिकार कर लिया। भारतवासी इसी घरानेको पठान घराना कहते हैं। सन् १२२२ ई०में चङ्गेज खांने और सन् १३९८ ई०में तैमूर लङ्गने भारतवर्षपर आक्रमण करके इस घरानेके शासनपर बड़ा धक्का लगाया। खूब धक्के खानेपर भी इस घरानेकी प्रभुता लुप्त नहीं हुई। अन्तमें सन् १५२५ ई०में बाबर बादशाहने गोर घरानेको पददलित करके दिल्लीपर कबजा कर लिया। बाबर बादशाहने इससे बारह वर्ष पहले काबुलपर अधिकार कर लिया था। बाबरने दिल्लीपर अधिकार करके भारतमें मुगल वा तुर्क-फारस घरानेके शासनकी नीव डाली। सन् १५३० ई०में दिल्लीमें बाबरका देहान्त हुआ और उसके उपदेशानुसार उनकी लाश काबुलमें गाड़ी गई। आज भी वह कब्र काबुलमें मौजूद है और अफगान उसकी बड़ी प्रतिष्ठा करते हैं। मानो वह उनकी जातिके किसी साधु महात्माकी कब्र है।

"अफगानस्थान भारतवर्ष और फारसके बीचमें है। बाबरकी मृत्यु के उपरान्त उधर फारसके बादशाह और इधर भारतसम्राटके दांत अफगानस्थानपर लगे। एक जमानेतक कभी अफगानस्थान फरसके अधीन रहा और कभी भारतवर्षके। समय समयपर फारस वा भारतवर्षमें राजनीतिक झगड़े उठनेकी वजहसे अफगानस्थान स्वतन्त्र हो जाता था। उसी देशका कोई आदमी अफगानस्थानका शासनकार्य्य करने लगता था। अन्तमें सन् १७३६ ई०में फारसके बादशाह नादिर शाहने अफगानस्थान फतह किया। इसके दो वर्ष बाद भारतवर्षपर आक्रमण किया और दिल्ली फतह करके फारससे लेकर भारतवर्षतक फारसका राज्य फैला दिया। इसी बादशाहने सन् १७३७ ई०में दिल्लीमें मशहूर कत्ले आम कराया था। किन्तु नादिरकी जय अधूरी, शीघ्रतापूर्व्वक और बहुत लम्बी चौड़ी होती थी। इससे वह उतनी मजबूत नहीं होती थी। सन् १७४७ ई०में नादिर भारतवर्ष लूटकर और लूटका माल साथ लेकर फारस वापस जा रहा था। मशहदके समीप रात्रिके समय कुछ लोगोंने उसकी हत्या की और नरपिशाच नादिरने अपनी पैशाचिक लीला सम्वरण की।

"नादिरकी मृत्यु के उपरान्तसे अफगानस्थान प्रकृतरूपसे स्वतन्त्र हुआ। अबदाल जातिका अहमद खां अफगान-सरदार था। वह नादिरकी सैन्यमें ऊंचे दरजेपर आरूढ़ था। उस समय उसके अधीन वही फौज थी, जो भारतवर्षके लूटका माल फारस ले जा रही थी। नादिरशाहका मृत्यु समाचार पाते ही अहमद खांने कन्धारमें नादिरके खजानेपर कबजा कर लिया। इस धनकी सहायतासे उसने अपनेको अफगान-

स्थानका बादशाह प्रसिद्ध किया। उस समय कन्धार प्रान्तमें अब्दाली जातिके अफ़गान बसते थे। उन सबने अहमद शाहका प्राधान्य स्वीकार किया। इसके उपरान्त ही हजारा जाति और बलूचियोंने भी अहमद शाहको अपना बादशाह माना। एक दिन कन्धारके समीप यथाविधि अहमद शाहका राज्याभिषेक हुआ। प्रजाने उसको अहमद शाह दुर्रे दुरानकी उपाधि दी। इसके उपरान्त उसने एक नया नगर बसाया। 'अहमद शाही' वा 'अहमद शहर' उसका नाम रखा। नया शहर नये बादशाहकी राजधानी बनी। फिर उसने अन्तरस्थ और बाहरी झगड़ोंसे बिगड़े हुए देशके बनानेकी ओर ध्यान दिया। अपने सुदृढ़ हाथमें सुदृढ़ रूपसे राजदण्ड धारण किया। इसी नीतिके अवलम्बसे वह देशको बहुत कुछ सुधार सका।

"अन्तमें अहमद शाहके शासनकालमें अफ़गानस्थान सैकड़ों सालसे चलते हुए बाहरी और भीतरी झगड़ोंसे साफ़ हुआ! वह पहलीबार पृथक देश बना और उसने ऐसी स्वतन्त्रता पाई, जैसी और कभी नहीं पाई थी। कोई २६ सालतक उत्तम रीतिसे शासनकार्य करके, सन् १७७३ ई०में अहमद शाहने शरीरत्याग किया। वह गया और उसके साथ साथ नये साम्राज्यकी नई सुख शान्ति भी चली गई। उसके बाद उसका पुत्र तैमूर सिंहासनारूढ़ हुआ। सन् १७८३ ई०में उसकी मृत्युके उपरान्त उसका पुत्र ज़मान शाह राज्याधिकारी बना। ज़मान शाह अपने पिताकी तरह लम्पट, दुर्बलचित्त और अत्याचारी था। इसके प्रतिद्वन्द्वियोंने इसको अपने चक्रमें

फंसाया। सौतेले भाई महम्मूदने उसे राज्यच्युत तथा अन्धा करके कैदखानेमें डाल दिया। अनन्तर अभागे जमानशाहके भाई शुजाउलमुल्कने अपने भाईका बदला महम्मूदसे लिया। उसने उसे सिंहासनसे उतारकर कैद कर दिया।

"शुजाउलमुल्क वा शाहशुजाको सिंहासनारूढ़ हुए बहुत दिन नहीं बीते थे, कि देशमें बलवा हुआ। बारकजई जातिका सरदार फतह खां बलवाइयोंका सरदार बना। शाहशुजा बलवाइयोंसे इतना दुःखी और भीत हुआ, कि सन् १८०९ ई०में अपना राज्य छोड़कर भारतवर्ष भाग आया। भागा हुआ बादशाह पहले सिखोंकी शरण गया। पञ्जाबकेशरी रणजित सिंह उस समय सिखोंके महाराज थे। मशहूर है, कि महाराजने पदच्युत बादशाहके साथ सुव्यवहार नहीं किया। आज जो सुप्रसिद्ध 'कोहिनूर' नामे हीरा हमारे राजराजेश्वर सप्तम एडवर्डके पास है, वह उस समय शाह शुजाके पास था। कहते हैं, कि सिखनरेशने शाह शुजासे यह हीरा छीन लिया। इससे हृदयभग्न होकर शाहशुजा अङ्गरेजोंके पास चला आया। उस समय अङ्गरेजोंकी सरहद्दी छावनी लोधियानेमें थी। वहीं शाहशुजा सिखोंके राज्यसे भागकर अङ्गरेजोंकी शरण आया।"

उधर शाह शुजाके अफगानस्थानसे भाग आनेके उपरान्त महम्मूद कैदखानेसे छूटा। बलवाइयोंके सरदार फतह खांके उद्योगसे अफगानस्थानका बादशाह बना। उसने फतह खांको अपना वजीर बनाकर उसकी खिदमतका बदला दिया। इसके थोड़े ही दिनों बाद फतह खांके भतीजों दोस्तमुहम्मद खां

और कुहनदिल खांको काबुल और कन्धारका गवरनर यथाक्रम बनाया। फतह खांकी बढ़ती हुई शक्ति महम्मदके बेटे युवराज कामरानको कांटा बनकर खटकी। सन् १८१८ ई०में गजनी शहरके समीप हैदरखेलमें फतह खां बुरी तरह मारा गया। अमीर अब्दुररहमान अपने तुजुकमें इस वजीरकी प्रशंसा इस प्रकार करते हैं,—"विलायतके अले आफ वार्वकको 'बादशाह बनानेवाला' की उपाधि दी गई थी, किन्तु यह विचित्र पुरुष बहुत ज्यादा 'बादशाह बनानेवाला' कहे जानेके योग्य है। यह अफगानस्थाके इतिहासमें कोई १८ सालतक श्रेष्ठ आसनपर आसीन था।" अमीर इसकी मृत्युके विषयमें इस तरह लिखते हैं,—"शाह शुजाके परास्त होनेके उपरान्त वजीर फतह खांने शाह महम्मदके राज्यका शासन करना आरम्भ किया। अपने स्वामीके लिये हाजी फीरोजसे हिरात छीना और ईरानियोंने जब उस नगरपर आक्रमण किया, तो उसे रोका। इस आक्रमणका कारण यह था, कि ईरानी उस नगरका राजकर वसूल करना और वहां अपना सिक्का चलाना चाहते थे। इस सेवाका बदला यह मिला, कि उस अभागे, कृतघ्नी, कर्त्तव्याकर्त्तव्य ज्ञानशून्य शाह महम्मदने अपने दगाबाज बेटे तथा अन्यान्य मनुष्योंके कहनेसे फतह खांकी आंखें निकलवा डालीं। फिर जब वजीरने अपने भाइयोंका हाल बताने और उनका भेद खोलनेसे इनकार किया, तो एक एक करके उनके अङ्ग प्रत्यङ्ग कटवा डाले। उसी मनुष्यकी इतनी दुर्दशा की, जिसकी बदौलत महम्मदने दुबारा राज्य प्राप्त किया था। इस प्रकार इस अद्वितीय मनुष्यका अन्त हुआ।"

इस गन्दे कामसे महमूदके सोते हुए शत्रु जागे। उधर मारे गये वजीरके सम्बन्धी भी बिगड़ खड़े हुए। फतहखांके बीस भाई थे। उनके नाम इस प्रकार हैं,—"मुहम्मद आजम खां, तैमूर कुली खां, पुरदिल खां, शेरदिल खां, कुहनदिल खां, रहमदिल खां, मिहरदिल खां, अता मुहम्मद खां, सुलतान मुहम्मद खां, पीर मुहम्मद खां, सईद मुहम्मद खां, अमीर दोस्त मुहम्मद खां, मुहम्मद खां, मुहम्मद जमान खां, जमीर खां, हैदर खां, तुर्रहवाज खां, जुमा खां और खैरल्लह खां। यह बीसो भाई शाह महमूद और उससे लड़के कामरानसे बिगड़ गये। देशमें बदअमली फैल गई। चारो ओर मार काट और लूट होने लगी। इसका फल यह हुआ, कि अफगानस्थानमें चारो तरफ बगावत फैल गई। सरदारोंने देशके टुकड़े टुकड़ेपर कबजा कर लिया और एक सरदार दूसरेको नीचा दिखानेकी घातमें रहने लगा।

इस दुर्घटनाके उपरान्त शाह महमूद हिरात चला गया। सिर्फ यही देश उसके पास रह गया था। यहां कुछ साल रहकर उसने शरीरत्याग किया। इसके बाद कामरान अपने पिताके आसनपर आसीन हुआ और केवल हिरात प्रदेशका राज्य करने लगा। इसने कई सालतक अन्यायपूर्व्वक राज्य किया। आखिर सन् १८४२ई०में इसके वजीर यार मुहम्मद खांने अपने बादशाह कामरानकी हत्या की और स्वयं सिंहासनपर बैठा। यह स्वामिहन्ता अलिकोजई जातिका कलङ्क था।

इधर फतह खांकी मृत्युके उपरान्त ही मारे गये वजीर फतह खांके भाई कुहनदिल खांने कन्धारपर कबजा कर लिया।

उनके भाई पुरदिल खां, रहमदिल खां और मिहरदिल खां भी उसके साथ थे। फतह खांके छोटे भाई दोस्त मुहम्मद खांने काबुलपर कब्जा कर लिया। देशका बाकी भाग, जैसा हम ऊपर लिख चुके हैं,—भिन्न भिन्न जातियोंके भिन्न भिन्न सरदारोंके हाथ लगा। सन् १८३८ ई० तक अफगानस्थानकी ऐसी ही दशा रही। ऐसे ही समय अङ्गरेज महाराज शाहशुजाको काबुलकी गद्दी दिलानेके लिये अफगानस्थानमें घुसे। इसी जमानेमें प्रथम अफगानयुद्ध हुआ और इसी जमानेसे अफगानस्थानका ध्यान देने योग्य मनोहर इतिहास आरम्भ होता है।

प्रथम अफगान-युद्ध।

किन्तु इतिहासका सिलसिला जारी करनेसे पहले अङ्गरेज-अफगान सम्बन्धके विषयमें थोड़ीसी बातें कहना चाहते हैं। आज जिस तरह रूस भारतपर आक्रमण करने और उसको ले लेनेकी बातमें लगा हुआ है, कोई सौ साल पहले,—उन्नीसवीं शताब्दिके आरम्भमें फ्रान्स भारतके भाग्यका विधाता बननेकी चेष्टामें लगा हुआ था। फलतः आज अङ्गरेज महाराज जिस तरह रूसका मुंह फेरनेकी तय्यारीमें लगे हुए हैं, उन्नीसवीं शताब्दिके आरम्भमें उन्हें फ्रान्सीसियोंको भारतसे दूर रखनेकी चिन्तामें फंसना पड़ा था। उस जमानेमें शाह जमान अफगानस्थानका बादशाह था और वह पञ्जाबपर बार-

वार आक्रमण करता था। अङ्गरेजोंको शाहेजमानकी ओरसे भी थोड़ी बहुत चिन्ता थी। इस प्रकार नाना राजनीतिक कारणोंसे वाध्य होकर उस समय अङ्गरेज महाराजने ईरानसे सन्धि की। सन् १८०१ ई०के जनवरी महीनेमें अङ्गरेजोंके राजदूत मेलकम साहबने ईरान जाकर ईरानपति फतहअली शाहसे सन्धि की। नैरङ्गे अफगानमें सन्धिकी जो नकल प्रकाश की गई है, वह इस प्रकार है,—

"(१) अफगानस्थानका बादशाह यदि अङ्गरेजोंके अधीन हिन्दुस्थानपर चढ़ाई करे, तो ईरान एक सुदृढ़ सैन्य भेजकर अफगानस्थानको नष्ट कर देनेकी चेष्टा करेगा।

(२) अफगानस्थानका बादशाह यदि ईरानसे सन्धि करे, तो उसको इस बातकी प्रतिज्ञा करना होगी, कि हम अङ्गरेजोंसे युद्ध न करेंगे।

(३) अफगानस्थान अथवा फ्रान्स यदि ईरानपर चढ़ाई करेगा, तो अङ्गरेज लोग ईरानको अस्त्र शस्त्रसे यथोचित सहायता देंगे।

(४) फ्रान्स यदि ईरानके किनारेके पास किसी टापूपर पैर जमाना चाहेगा, तो अङ्गरेजोंकी सैन्य उसे वहांसे भगा देगी। कोई फ्रान्सीसी यदि ईरानमें वा ईरानके अधीन किसी टापूमें बसना चाहेगा, तो ईरान-सरकार उसको बसनेकी आज्ञा न देगी।

(५) ईरान यदि अफगानस्थानपर आक्रमण करेगा, तो अङ्गरेज, ईरान और अफगानस्थान दोनोंमें किसीका भी साथ न देंगे। दोनो बादशाह यदि सन्धि करानेके लिये अङ्गरेजोंको

मध्यस्थ बनाना चाहेंगे, तो अङ्गरेज बनेंगे।"

इस सन्धिके उपरान्त फ्रान्सके सुप्रसिद्ध सम्राट् नेपोलियन बोनापार्टने रूसको परास्त किया। फिर रूस और फ्रान्समें सन्धि हुई। दोनो देशके सम्राटोंने मिलकर भारतपर आक्रमण करनेकी सलाह की। सन् १८०७ ई०में फ्रान्सीसियोंने भी ईरानसे सन्धि की। इस सन्धिकी नकल "नासिखुल तवारीख"में प्रकाश हुई थी। सैरङ्ग अफगानने उसीकी नकल इस प्रकार की है,—

सन्धि-पत्र।

(१) शाह ईरान आला हजरत फतह अलीशाह काचार और हिज इम्पीरियल मेजेष्टी फ्रान्स-सम्राट् इटलीराज नेपोलियन बोनापार्ट सदैवके निमित्त सन्धि करते हैं। दोनो नरपति पारस्परिक प्रेम स्थिर रखनेकी चेष्टा करेंगे और दोनो राज्योंमें, सदैव साम्य-सम्बन्ध रहेगा।

(२) फ्रान्स-सम्राट ईरानसे प्रण करते और जिम्मेदार होते हैं, कि इस सन्धि-पत्रके उपरान्त रूस कभी ईरानमें उपद्रव न करेंगे। कोई दूसरी शक्ति जब ईरानपर आक्रमण करेगी, तो फ्रान्स-सम्राट ईरानके साथ होकर वैरीको मार भगानेकी चेष्टा करेंगे। इस विषयमें कभी बेपरवाही और स्वार्थसे काम न लेंगे।

(३) फ्रान्स-सम्राट गुरजस्थान देशको ईरानका मानते हैं।

(४) फ्रान्स-सम्राट ईरानको गुरजस्थान और ईरानसे रूसियोंके निकालनेमें यथोचित सहायता देंगे। इसके उपरान्त जब रूस और ईरानमें सन्धि होगी, तो सन्धि यथानियम करा देनेमें फ्रान्स-सम्राट ईरानको सहायता देंगे।

(५) फ्रान्स-सरकारका एक राजदूत ईरानमें रहेगा और प्रयोजन उपस्थित होनेपर ईरान-सरकारको सलाह देगा।

(६) ईरान यदि चाहेगा, तो फ्रान्स-सम्राट ईरानी सैन्यको युरोपकी युद्धविद्या सिखानेका प्रबन्ध कर देंगे और ईरानी किलोंको युरोपीय किलोंके ढङ्गपर बनवा देंगे। ईरानकी इच्छा होनेपर फ्रान्स-सम्राट युरोपकी तोपें आदि भी ईरानमें भेज देंगे। ईरानको अस्त्र शस्त्रका मूल्य देना पड़ेगा।

(७) ईरानके शाह यदि अपनी फौजमें फ्रान्सीसी अफसर नियुक्त करना चाहेंगे, तो फ्रान्स-सम्राट उनके पास अफसर और उहदेदार भेज देंगे।

(८) फ्रान्सकी मैत्रीके खयालसे ईरानको उचित है, कि अङ्गरेजोंको शत्रु समझे। उन्हें भगानेकी चेष्टा करे। ईरानके जो राजदूत भारतवर्ष और इङ्गलण्ड गये हैं, ईरानको उन्हें वापस बुलाना चाहिये। इङ्गलण्ड और ईष्ट इण्डिया कम्पनीकी ओरसे जो दूत ईरानमें हैं, ईरानको उन्हें निकाल देना चाहिये। अङ्गरेजोंकी सम्पत्तिपर अधिकार कर लेना चाहिये और उनका जल और स्थलका व्यापार बन्द कर देना चाहिये। इसके अतिरिक्त इस विषयका एक आज्ञापत्र निकालना चाहिये, कि विलायतका जो दूत ईरान आना चाहेगा, वह आने न पावेगा।

(९) भविष्यमें रूस और इङ्गलण्ड मिलकर यदि ईरान वा फ्रान्सपर चढ़ाई करनेकी चेष्टा करें, तो ईरान और फ्रान्स मिलकर उन्हें भगानेकी कोशिश करेंगे! रूस और अङ्-

रेज मिलकर यदि किसी शक्तिपर चढ़ाई करें, तो ईरान और फ्रान्स मिलकर उनके रोकनेकी फिक्र करेंगे ।

(१०) ईरान अपनी सैन्य तय्यार करे और निर्दिष्ट समयपर भारतके अङ्गरेजी राज्यपर अधिकार करनेके लिये भारतकी ओर रवाना हो ।

(११) जिस समय फ्रान्सीसी जहाज ईरानके समुद्रमें आवें, तो ईरानको उन्हें हर तरहकी सहायता देना पड़ेगी ।

(१२ फ्रान्स-सम्राट जब भारतपर आक्रमण करनेके लिये अपनी फौज स्थल मार्गसे ले जाना चाहेंगे, तो शाह ईरानको अपने देशमें फ्रान्सकी सैन्यको राह देना पड़ेगी। ईरानी सैन्य भी इस सैन्यके साथ हो लेगी। जब कभी ऐसा समय उपस्थित होगा, तो फ्रान्स-सम्राट ईरान-सम्राटसे और एक सन्धि कर लेंगे।

(१३) ईरानके लोग समुद्र किनारे अथवा देशके भीतर फ्रान्सीसियोंके हाथ अपना माल और रसदका सामान बेचनेमें सङ्कोच न करें ।

१४) ऊपरके बारहवें नियममें ईरानने फ्रान्सके साथ जो प्रण किया है, वह वही प्रण ईरान रूस वा इङ्गलैण्डके साथ न कर सकेगा ।

(१५) दोनो देशोंमें व्यापारके सम्बन्धमें भी एक सन्धि की जायगी ।

(१६) चार महीनेमें इस सन्धिपत्रपर फ्रान्स-सम्राट और शाह ईरानकी मुहरें लग जावेंगी। दो मुहरदार सन्धिपत्र तय्यार किये जावेंगे। एक फ्रान्स-सम्राट और दूसरा शाह फ्रान्सके पास रहेगा ।"

नैरङ्ग अफगानमें लिखा है,—“ इस फ्रान्सीसी सन्धिसे इङ्गलण्डकी सन १८०१ वाली सन्धि कुछ न रही। ईरानमें फ्रान्सका प्रभाव बढ़ गया। सन् १८०२ ई०में भारतके गवरनर जनरल लार्ड मिराटोने जब मलकम साहबको दुबारा ईरान भेजा, तो ईरानियोंने उनको बूशहरसे आगे बढ़नेकी आज्ञा न दी। ईरानमें फ्रान्सीसी प्रभाव फैल जानेसे लण्डन और भारतवर्षमें हलचल पड़ गई थी। जब ईरानियोंने मलकम साहबके साथ ऐसा व्यवहार किया, तो वह हलचल और बढ़ गई। इसके उपरान्त ही इङ्गलण्डने हरफर्ड साहबको अपना दूत बनाकर ईरान भेजा। मलकम साहब तो आगे बढ़ न सके थे, किन्तु हरफर्ड साहब बेखटके आगे बढ़ गये। इस अवसरमें और एक दुर्घटना हुई। फ्रान्स और ईरानमें जो सन्धि हुई थी, उसके तीसरे और चौथे नियममें रूसको ईरानसे निकालनेकी बात कही गई थी। यह नियम ईरानकी ओरसे किये गये थे। किन्तु फ्रान्ससे और रूससे मैत्री हो चुकी थी। इसलिये फ्रान्स इन विषयोंको स्वीकार करनेमें सङ्कोच कर रहा था। इसलिये फ्रान्स और ईरानके सन्धि-पत्रपर हस्ताक्षर नहीं हो सके। फ्रान्सीसी मिशन ईरान राजधानी तिहरानसे वापस चली गई। इसके उपरान्त ईरानमें इङ्गलण्डको अपना प्रभाव फैलानेका समय मिल गया। ईरानके मन्त्री मिरजामुहम्मद शफी और हरफर्ड साहबने मिल जुलकर एक नया सन्धि-पत्र तय्यार किया।”

इसके उपरान्त फ्रान्सके साथ साथ रूस भी भारतवर्षपर आक्रमण करनेकी धमकी देने लगा। कारण, वह उस समय

मध्य एशिया पार करके अफगानस्थानकी सीमाके समीप पहुंच रहा था। इसलिये सन् १८०६ ई०में अङ्गरेजोंने ईरान और अफगानस्थान दोनोंसे सन्धि की। सन् १८०६ ई०में शाहशुजा काबुलका अमीर था। अङ्गरेजोंने एलफिंष्टन साहबको शाहशुजाके पास सन्धिके लिये भेजा था। यह पहले पहल अङ्गरेजों और अफगानोंका सम्बन्ध हुआ था। इसके उपरान्त सन् १८१५ ई०में फ्रान्सके वाटरलू स्थानमें सम्राट् नेपोलियनका पतन हुआ। नेपोलियन-पतनके उपरान्तसे अङ्गरेज फ्रान्सकी ओरसे निश्चिन्त हो गये। उन्होंने ईरानके साथ भी उतना मेल जोल रखनेकी जरूरत नहीं देखी। उनको सिर्फ रूसका खटका रह गया। रूस अफगानस्थान हीकी राहसे भारतपर चढ़ाई कर सकता है। इसलिये अङ्गरेजोंने ईरानको छोड़कर अफगानस्थानकी ओर अधिक ध्यान दिया।

रूसके भारतवर्षकी ओर धीरे धीरे बढ़नेके विषयमें लार्ड राबर्टस अपनी पुस्तक "फार्टीवन इयर्स इन इण्डिया"में इस प्रकार लिखते हैं,—"कोई दो सौ साल पहले अङ्गरेजोंके पूर्वीय राज्य और रूसराज्यमें कोई चार हजार मीलका अन्तर था। उस समय रूसकी सबसे आगे बढ़ी हुई चौकी ओरनबर्ग और सेटरोपावलस्कमें थी, इधर इङ्गलण्ड दक्षिणीय भारतके समुद्रतटपर अनिश्चित रूपसे पैर जमा रहा था। भारतवर्षमें सिर्फ फ्रान्स हमारा प्रतिद्वन्दी था। उस समय हमें सिन्धकी ओर बढ़नेका उतना ही कम खयाल था, जितना रूसका आक्स नदीकी ओर बढ़नेका।

"तीन सालके उपरान्त सौ सालके परिश्रमके उपरान्त रूस

किरगिज हड़प करता हुआ आगे बढ़ने लगा। इधर इङ्गलण्ड भी निश्चिन्त नहीं बैठा था। उसने बङ्गालपर अधिकार किया, मन्द्राजमें प्रेसिडेन्सी स्थापित की और बम्बईको प्रयोजनीय बसती बसाई। इस तरह दोनो शक्तियोंके आगे बढ़नेसे दोनोका फासला चार हजार मीलसे घटकर सिर्फ दो हजार मील रह गया।

"अब हम लोग जल्द जल्द तरक्की करने लगे। उधर रूस एक गैरआबाद रेगस्थान पार कर रहा था। हम लोगोंने अवध, पश्चिमोत्तर प्रदेश "युक्तप्रदेश", करनाटक, पेशवाके राज्य, सिन्ध और पञ्जाबपर क्रमश: अधिकार किया। सन् १८५० ई०तक हमारा अधिकार सिन्धनदके पारतक पहुंच गया।

"उधर रूस रेगस्थान पार करके अरल झील और सिर-दारियाके समीप अरलस्क स्थानतक पहुंच गया। इस तरह एशियामें दो बढ़ती हुई शक्तियोंके बीचमें सिर्फ एक हजार मीलका फासला रह गया।"

पाठकोंने देख लिया, कि अङ्गरेज रूसकी ओरसे अकारण ही सशङ्क नहीं थे। एक ओर तो रूस अफगानस्थानपर और दूसरी ओर फारसपर अपना प्रभाव डालना चाहता था। सम्राट नेपोलियनके जमानेमें ईरानपर रूसका असर जम नहीं सका। रूसने ईरानसे युद्ध करके ईरानके सिर्फ कई स्थानोंपर अधिकार कर लिया था। किन्तु नेपोलियनका पतन होनेके उपरान्त होसे उसने ईरानपर अपना असर जमाया। सन् १८३७ ई०में रूसके अनुरोधसे ईरानने हिरात घेर लिया। इसके उपरान्त ही रूसके लिह-

रानस्थ राजदूतने कप्तान विटकेविचको काबुल भेजा। वजीर फतहखांके भाई दोस्त मुहम्मदखां उस समय काबुलके शासक थे। रूसी कप्तान विटकेविच अमीरके पास चिट्ठी लेकर पहुंचे। चिट्ठीमें ज़ारने लिखा था, मैं आशा करता हूं, कि भारतपर आक्रमण करनेमें आप मेरा और ईरानका साथ देंगे।

अङ्गरेजोंने रूसकी इच्छा पहले हीसे समझ ली थी। इसलिये भारतके गवरनर जनरल लार्ड आकलण्डने सन् १८३७ ई०में कप्तान बरनेसकी प्रधानतामें एक मिशन काबुल भेज दी थी। रूसदूत विटकेविच सन् १८३७ ई०के अन्तमें काबुल पहुंचा। बरनेस साहब उससे तीन महीने पहले काबुल पहुंच चुके थे। प्रत्यक्षमें तो यह काबुल-मिशन अफगानस्थानसे व्यापार सम्बन्धी सन्धिके लिये गई थी, किन्तु यथार्थमें इसका अभिप्राय यह था, कि काबुलमें रूसकी प्रभाव-प्रतिपत्ति रोके। इससे कुछ पहले पञ्जावपति महाराज रणजितसिंहने अफगानस्थानके पश्चिमीय भागपर और उसके काश्मीर देशपर अधिकार कर लिया था। अङ्गरेजोंकी मिशन जब काबुल पहुंची, तो अमीर दोस्त मुहम्मदने उसकी बड़ी खातिरदारी की। कारण, अमीरको आशा थी, कि अङ्गरेज हमसे मिलकर हमें हमारा छिना हुआ देश सिखोंसे वापस दिला देंगे। अङ्गरेजोंसे मैत्री करनेके ख़याल हीसे अमीर दोस्त मुहम्मदने रूसदूतके काबुल पहुंचनेपर भी उससे अट्ठारोंतक मुलाकात नहीं की। इससे रूसदूत कुछ उदास भी हो गया।

किन्तु अमीरकी आन्तरिक आशा पूर्ण नहीं हुई। अङ्गरेज सिखोंको छेड़कर लड़ना झगड़ना नहीं चाहते थे। इसलिये उन्होंने सिखोंसे अफगानस्थानका देश वापस दिलानेका वादा नहीं किया। इतना ही नहीं,—अमीर दोस्त मुहम्मदने अङ्गरेजोंसे जब यह कहा, कि हम जब रूस और ईरानसे सन्धि न करेंगे, तो खूब सम्भव है, कि दोनो शक्तियां हमपर चढ़ाई करें। ऐसी दशामें क्या आप हमें अस्त्र शस्त्रकी सहायता देंगे और हमारे दुर्ग सुदृढ़ कर देंगे? अङ्गरेजोंने इससे भी इनकार कर दिया। अङ्गरेजोंका यह उत्तर पाकर अमीर दोस्त मुहम्मदने रूसदूत विटकीविचकी ओर ध्यान दिया। उसपर इतनी दया प्रकाश की, कि उसकी पिछली उदासी मिट गई। बरनेस सन् १८३८ ई०के अन्तपर्यन्त काबुल रहे। इसके उपरान्त उन्होंने भारत वापस आकर भारत-सरकारको समाचार दिया, कि अमीर पूर्ण रूपसे रूसके तरफदार हैं। इसपर विलायती सरकारने भारतके गवरनर जनरलको लिखा, कि दोस्त मुहम्मदको काबुल-सिंहासनपर बैठा रखना उचित नहीं। कारण, वह हमारा विरोधी है। उसकी जगह वह अमीर बैठाना चाहिये, जो हमसे मिला रहे। प्रथम अफगान-युद्ध होनेका यही कारण था।

कितने ही अङ्गरेजोंने ब्रटिश-सरकारका यह काम पसन्द नहीं किया। "कन्धार केम्पेन" नाम्नी पुस्तकमें मेजर एश लिखते हैं,—"अमीरने कप्तान बरनेससे अपने दिलकी बातें साफ साफ कह सुनाईं। किन्तु बरनेसकी राजनीतिक विष-

विषय बातचीत करनेका अधिकार नहीं दिया गया था। अमीरने अङ्गरेजोंके साथ सम्बन्ध स्थापन करनेमें अङ्गरेजोंसे सहायता लेनेके लिये यथाशक्य चेष्टा की। यह चेष्टा करनेके समय रूस-दूतको मुंह नहीं लगाया। जब उसने देखा, कि लार्ड आकलण्ड किसी तरह नहीं पसीजते, तो उसने अपनेको रूसकी गोदमें डाल दिया। विटकोविचने अमीरको रुपये देने, हिरात दिला देने और रणजित सिंहसे बातचीत करनेकी आशा दिलाई। अमीरकी इच्छासे उसने कन्धारके शाहजादोंसे बातचीत की। कन्धारके शाहजादों और अमीर काबुलमें सन्धि हो गई। शाहजादोंने अमीरको सैनिक, सहायता देनेकी प्रतिज्ञा की। रूसकी छायामें अफगानस्थान और फारसका सम्बन्ध हो जानेसे भारत-सरकार डरी और उसने इस विषयमें उचित काररवाई करनेका दृढ़ सङ्कल्प किया। उस समय लिबरल दल प्रधान था। हमारे माननीय करनेल मैलेसन उस समयकी कारखाईपर तीव्र कटाक्ष करते हैं। वह कहते हैं, कि लिबरेल दलकी उस समयकी कारखाई ध्यान देने योग्य थी। उनका कहना है,—

'इन लोगोंने उस शासकको पदच्युत करनेका सङ्कल्प किया, जिसने लोटकटयोंकी फैलाई हुई अशान्ति दबाकर देशमें शान्ति स्थापित की थी। उसकी जगह एक ऐसा शासक नियुक्त करना चाहते थे, जो शान्तिके समय भी अफगानस्थानका शासन नहीं कर सका था। उसके अफगानस्थानसे चले जानेके उपरान्त बारकजई सरदारोंने जब उसको फिर वापस बुलाया, तो उसने ऐसे ऐसे नियम करना चाहे, जिससे प्रमाणित हुआ,

कि इतने बड़े तजबसे भी वह न तो कुछ भूला और न सीख सका * * *।"

अङ्गरेजोंने काबुलपर चढ़ाई करनेसे पहले सन् १८३८ ई०के जून महीनेमें रणजितसिंह और शाहशुजासे एक सन्धि की। सन्धिपत्रपर महाराज रणजितसिंह, शाहशुजा और गवरनर जनरल आकलण्ड साहबने हस्ताचर किये। गैरङ्गे अफगानमें यह सन्धि इस प्रकार प्रकाश की गई है,—

"(१) शाहशुजा अपनी ओरसे और अपने जातिवालोंकी ओरसे सिन्धकी दोनो ओरके देशोंको छोड़ते है। उसपर सिखनरपतिका अधिकार रहे। छोड़े हुए स्थानोंके नाम इस प्रकार हैं,—(क) काश्मीर प्रदेश, (ख) अटक, भच्छर, हजारा, केथल और अम्बके किले, (ग) यूसुफ जई, खटक, हशतनगर, मचनी और कोहाटके साथ पेशावर जिला। इसमें खेबर दर्रा, वजीरस्थान, दौरेनानक, कूजानक और कालाबाग शामिल हैं, (घ) डेराजात, (ङ) अमठन और उसके पासके इलाके; और (च) मुलतान जिला। शाहशुजा अब इन जगहोंसे किसी तरहका वास्ता न रखेंगे। इन जगहोंके मालिक महाराज हैं।

(२) जो लोग खैबर घाटीकी दूसरी ओर रहते हैं, वह घाटीकी इस ओर आकर चोरी या लूट पाट न करने पावेंगे। दोनो राज्योंका कोई बाकीदार यदि रुपये हजम करके एक राज्यसे दूसरे राज्यमें चला जावेगा, तो शाह शुजा और महाराज रणजितसिंह दोनो नरपति प्रण करते हैं, कि उन्हें एक दूसरेको दे देंगे। जो नदी खैबर दर्रेसे निकलकर

[illegible] नदमें पानी पहुंचाती है, दोनों कोई नरेश उसको न रोकेंगे।

(३) अङ्गरेज सरकार और महाराजमें जो सन्धि हो चुकी है, उसके अनुसार कोई मनुष्य बिना महाराजका परवाना लिये सतलजके बांये किनारेसे दाहने किनारे नहीं जा सकता। सिन्धनदके विषयमें भी, जो सतलजसे मिलता है, ऐसा ही समझना चाहिये। कोई मनुष्य बिना महाराजकी आज्ञाके सिन्धनद पार न कर सकेगा।

(४) सिन्धनदके दाहने किनारेके सिन्ध और शिकारपुरकी बस्तियोंके विषयमें महाराज जो उचित समझेंगे, करेंगे।

(५) जब शाह शुजा कन्धार और काबुलपर अपना कबजा कर लेंगे, तो महाराजको प्रतिवर्ष निम्नलिखित चीजें दिया करेंगे,—सजे सजाये सुन्दर घोड़े ५५; ईरानी तलवार और खञ्जर ११; सूखे और ताजे मेवे; अङ्गूर, अनार, सेव, [illegible] बादाम, किशमिश और पिश्ता ढेरके ढेर; रङ्गबिरङ्गे साटनके थान; चुगे; समूर; किमखाब और सुनहरे रुपहले ईरानी गलीन एक सौ।

(६) पत्र-व्यवहारमें दोनों ओरसे बराबरीका बर्ताव किया जायेगा।

(७) महाराजके देशके व्यापारी अफगानस्थानमें और अफगानस्थानके पञ्जाबमें बेरोकटोक व्यापार किया करेंगे।

(८) प्रतिवर्ष महाराज शाहशुजाके पास मित्रभावसे निम्नलिखित चीजें भेजा करेंगे;—दुशाले ५५; मलमलके थान [illegible]; दुपट्टे ११; किमखाबके थान ५; रूमाल ५; पगड़ी ५ और पेशावरके चावल [illegible] ५५।

(९) महाराजका कोई नौकर यदि ग्यारह हजार रुपयेतकका माल खरीदने अफगानस्थान जावे वा शाहका नौकर इतने ही रुपयेका माल खरीदने यदि पञ्जाब आवे, तो दोनो ओरकी सरकारें ऐसे नौकरोंको खरीदनेमें सहायता देंगी।

(१०) जब दोनो ओरकी सैन्य एक जगह जमा होंगी, तो वहां गोवध न होने पावेगा।

(११) शाह यदि महाराजकी सैन्यसे सहायता लें, तो लूटका जो माल मिलेगा, उसमें आधा महाराजकी सैन्यको देना होगा। यदि शाह बिना महाराजकी सैन्यकी सहायताके बारकजइयोंको लूटें, तो लूटका चौथा भाग अपने नौकरोंकी मार्फत महाराजके पास भेज दें।

(१२) दोनो ओरसे बराबर पत्र-व्यवहार होता रहेगा।

(१३) महाराजको यदि शाही सैन्यका प्रयोजन होगा, तो शाह किसी बड़े अफसरकी अधीनतामें सैन्य भेजनेका वादा करते हैं। इसी तरह महाराज भी अपनी मुसलमान फौज किसी बड़े अफसरकी अधीनतामें काबुल भेज देंगे। जब महाराज पेशावर जाया करेंगे, तो शाह किसी शाहजादेको महाराजसे मिलनेके लिये भेजा करेंगे। महाराज शाहजादेके पदके अनुसार उसका आदर सत्कार करेंगे।

(१४) एकके मित्र और शत्रु, दूसरेके भी मित्र और शत्रु, समझे जावेंगे।

(१५) महाराजके पांच हजार मुसलमान सिपाही शाहके साथ रहेंगे। शाह अङ्गरेजोंकी सलाहसे उन सिपाहियोंको

जहां जरूरत होगी, रवाने करेंगे। जिस तारीखसे यह सिपाही शाहके पास जायेंगे, उसी तारीखसे शाह महाराजको दो लाख रुपये साल दरसाल देंगे। जब महाराजको शाहकी फ़ौजकी जरूरत होगी, तो महाराज भी शाहको इसी हिसाबसे रुपये देंगे। अङ्गरेज महाराज शाहके रुपये अदा करनेकी जमानत करते हैं।

(१६) शाह वादा करते हैं, कि वह सिन्धकी मालगुजारी सिन्धके अमीरोंको छोड़ देते हैं। जब सिन्धके अमीर अङ्गरेजोंकी बताई हुई रकम अदा कर देंगे और महाराजको पन्द्रह लाख रुपये दे चुकेंगे, तो सिन्ध देशपर अमीरोंका कबजा हो जायगा। इसपर भी अमीरों और महाराजके बीचमें नियमित पत्रव्यवहार और भेंट उपहारादिका देना दिलवाना जारी रहेगा।

(१७) शाह शुजा अफ़गानस्थानपर अधिकार करके भी हिरातपर आक्रमण न करेंगे।

(१८) शाह शुजा वादा करते हैं, कि वह बिना अङ्गरेजों और सिखोंकी सम्मतिके किसी दूसरी शक्तिके साथ किसी तरहका सम्बन्ध न करेंगे। जो कोई अङ्गरेजोंके अथवा सिखोंके राज्यपर आक्रमण करेगा, उससे लड़ेंगे। तीनों सरकारें, यानी अङ्गरेज-सरकार, सिख-सरकार और शाह शुजा इस सन्धिपत्रके नियमोंको स्वीकार करती हैं। इस सन्धिपत्रके अनुसार उसी दिनसे काम होगा, जिस दिनसे इसपर तीनों सरकारके दस्तख़त होंगे।"

सन् १८३८ ई० की १५वीं जुलाईको शिमलेमें तीनों नरपतियोंके हस्ताक्षर सन्धिपत्रपर हो गये।

अङ्गरेज महाराज काबुलपर चढ़ाईके लिये तय्यार हुए। पहले उन लोगोंने पञ्जाबकी राहसे काबुलपर चढ़नेका इरादा किया। किन्तु महाराज रणजितसिंहने अपने देशसे अङ्गरेजी सैन्यको जाने नहीं दिया। अन्तमें अङ्गरेजी सैन्य सिन्धकी ओरसे काबुलपर चढ़नेको तय्यार हुई। पहले अङ्गरेजोंने सिन्धके अमीरोंको परास्त किया। अनन्तर सन् १८३८ ई० के मार्च महीनेमें अङ्गरेजी फौजके २१ हजार सिपाही बोलन दर्‌रेसे अफगानस्थानमें दाखिल हुए। सर जानकन साहब इस सैन्यके प्रधान सेनापति थे। राहमें बड़ी कठिनाइयां मिलीं, किन्तु बाधा नहीं। कन्धारके हाकिम और अमीर दोस्त मुहम्मदके भाई कुहनदिल खां ईरान भाग गये। सन् १८३८ ई० के अपरेल महीनेमें अङ्ग-रेजी फौजने इस शहरपर कबजा किया। शाह शुजा अपने दादेकी मसजिदमें सिंहासनपर बैठाया गया। २१वीं जुलाईको अङ्गरेजी फौज गजनी पहुंची। अङ्गरेजी सैन्यके इञ्जीनियरोंने शहरपनाहका फाटक उड़ा दिया। अङ्गरेजी सैन्य नगरमें घुस पड़ी। खासी मारकाटके उपरान्त नगरका पतन हुआ। दोस्त मुहम्मदखां अपनी फौजके पैर उखड़ते देखकर काबुलसे भागकर हिन्दूकुश पार कर गया और ७ वीं अगस्तको शाह शुजा राजधानी काबुलमें दाखिल हुआ। अङ्ग-रेजोंने समझा, कि इतने हीमें झगड़ा मिट गया। सैन्यके प्रधान सेनापति कीन साहब भारत लौट आये। उनके साथ अङ्गरेजी सैन्यका बहुत बड़ा भाग काबुलसे वापस आ गया। सिर्फ आठ हजार सिपाहियोंकी अङ्गरेजी फौज काबुलमें रह

गई। इसके अतिरिक्त शाहशुजाके पास उसके ६ हजार सिपाही थे। मेकनाटन साहब अङ्गरेजोंका राजदूत होकर और बरनेस साहब उसका साथी बनकर काबुलमें रहा।

कोई दो सालतक अङ्गरेजों और शाहशुजाने मिलकर काबुलपर राज्य किया।

यह हुई शाहशुजाकी बात। अब अमीर दोस्तमुहम्मदका हाल सुनिये। नैरङ्ग अफगानमें लिखा है,—"जब गजनी फतह हो गया और अमीर दोस्त मुहम्मदका लड़का गजनीमें बड़ी लड़ाई लड़नेके उपरान्त कैद हो गया, तो शाहशुजा काबुलकी ओर बढ़ा। इधर अमीर दोस्तमुहम्मद खांको जब मालूम हुआ, कि शाह शुजा काबुलके समीप आ गया, तो उसने अफगान सरदारोंको अपने खेमेमें बुलाया और अपना साथ देनेके लिये सबसे कसमें लीं। सबने शपथ किया, कि जबतक शरीरमें प्राण हैं, हम आपके वैरीसे लड़ेंगे। इसके उपरान्त अमीरने प्रण किया, कि जबतक शाहको पकड़ न लूं, या लड़ाईमें मारा न जाऊं और अपने पुत्रको छुड़ा न लूं तलवार नियाममें न करूंगा! शाह शुजाकी ओर जब इस दृढ़ प्रणका समाचार पहुंचा, तो उदासी छा गई। लोगोंने कानाफूसी की, कि हैदरखांने बिना अधिक सैन्यके गजनीमें घोर युद्ध किया था। अमीरके पास तो सैन्य है—उसके भाई बेटे हैं। वह और भी भयङ्कर युद्ध करेगा। उचित है, कि जिन लोगोंने अमीरकी ओरसे युद्ध करनेका प्रण किया है, शाह उन्हें अपने पास बुलावें। उनको रुपये देकर अपनी ओर मिला लें। वह लोग बुलाये गये और

वह शाहसे रुपये और जागीरें पाकर अमीरके विरुद्ध हो गये। शाह बहुत प्रसन्न हुआ और अमीरको अकेला समझकर तुरन्त ही काबुलकी ओर रवाना हुआ। किन्तु एक खैरखाह नौकरने अमीरको सूचित कर दिया, कि यदि आजकी रात आप यहांसे चले न जावेंगे, तो आप मारे जावेंगे, वा पकड़ लिये जावेंगे। अमीरने अपने अकेले होनेपर बहुत दुःख किया। यह भी खयाल किया, कि यहांसे यदि चला न जाऊंगा, तो मारा जाऊंगा और मेरे लड़केवाले पकड़ लिये जावेंगे। इससे यही उचित है, कि अपने परिवारको किसी सुरक्षित जगह भेजकर मैं कहीं चला जाऊं! कहीं जाकर और ठहरकर देखूं, कि मेरे अदृष्टमें क्या बदा है। उसने अपने लड़के मुहम्मद अकबर खांसे सलाह की। यह स्थिर हुआ, कि मुहम्मद अकबर खां परिवार लेकर बल्ख चला जावे। अमीर बामियानको रवाना हो। ऐसा ही हुआ। रातोरात मुहम्मद अकबर बल्खकी ओर और अमीर बामियानकी ओर रवाना हुआ। इधर सवेरे शाह शुजा काबुलमें दाखिल हुआ। उसने सुना, कि अमीर दोस्त मुहम्मद बामियान चला गया। अमीरकी गिरफ्तारीके लिये फौजका एक दस्ता भेजा। किन्तु शाहके लश्करके एक आदमीने अमीरके पड़ावमें जाकर उसको खबर दी, कि आपको पकड़नेके लिये फौज आ रही है। आप होशियार रहें! यह समाचार पाते ही अमीर रात हीको चल खड़ा हुआ। प्रातःकाल जब अङ्गरेजी फौज पहुंची, तो उसने अमीरके पड़ावपर घोड़ोंकी लीद, घास और चूल्होंकी राख पड़ी

देखो। वामियान पहुंचकर अमीरने अपने सम्बन्धियोंको बेगाना पाया। अमीरने देखा, कि एक ओर सम्बन्धियोंने आंखे बदल लीं—दूसरी ओर शाहकी फौज पीछा करती चली आ रही है, तो वह बामियानसे कान्दजकी ओर भागा। जब उस नगरके समीप पहुंचा और वहांके हाकिमको मालूम हुआ, तो उसने अपने अफसरोंको साथ लेकर अमीरका स्वागत किया और उसे मानसंभ्रमके साथ शहरमें ले गया। एक सजे सजाये मकानमें ठहराया। रात दिन अमीरकी सेवा करने लगा। उसकी शानके अनुसार दावत करता रहा। उसको धीरज देता और सहानुभूति प्रकाश करता रहा। उसने एक रात अमीर दोस्त मुहम्मदसे पूछा, कि आपके पास किजलवाशों और अफगानोंकी बहुत बड़ी फौज थी। फिर क्या कारण है, कि आप अकेले निकल आये और अपने कुटुम्ब तथा देशसे जुदा हुए? अमीरने एक ठण्डी सांस खींची और कहा, कि भाई! मैं क्या कहूं, कि इन दिनों मुझपर क्या बीती। पहले यह हुआ, कि शाह शुजाने कन्धार और काबुल विजय करनेके इरादेसे बोलन दर्रा तय किया। कुहनदिल खां कन्धारका हाकिम था। उसने कालाड़ तथा कितने ही किलों-के हाकिमोंकी फूटकी बदौलत अपनेको लड़ने लायक न समझा। इसलिये वह भागकर ईरान चला गया। शाहने कन्धार लिया फिर मुहम्मद हैदर खांसे लड़कर गजनीपर कब्जा किया। फिर काबुलपर चढ़ाई की। मैंने अपने लश्करको साथ लेकर काबुल शहरके बाहर डेरा डाला। दो तीन दिन न बीते होंगे, कि मेरे साथियोंने शपथपूर्वक किये हुए प्रणको तोड़-

र मेरा साथ छोड़ दिया। धनकी लालचसे शाहसे
मिल गये। जब मैं अकेला रह गया, तो अपने कुटुम्बको
अकबर खांके साथ बलख भेज दिया! मेरा इरादा था, कि
कुछ दिन बामियान और काबुलके पड़ोसमें ठहरूं। पर दो
तीन दिन भी न बीते थे, कि शाहकी फौज आ पहुंची। मैं
एक, शाहके सिपाही अनेक। इसलिये मैं वहांसे कन्दज
चला आया। आगे देखें, कि अदृष्ट कौनसा तमाशा दिखाता
है। कन्दजके हाकिमने यह सुनकर अमीरको ढाढ़स दी। उसने
यह भी कहा, कि मैं फौज तय्यार कराऊंगा और काबुलपर
आक्रमण करूंगा। काबुल जीतकर आपको आपके सिंहासनपर
बैठा दूंगा। अमीर उसकी बातोंसे प्रसन्न हुआ। कन्दजमें रहने
लगा। शाहशुजाको जब खबर मिली, कि अमीर कन्दजमें है,तो
कन्दजके हाकिमके नाम एक पत्र लिखा। पत्रमें लिखा था,
कि यदि आप अमीरको पकड़कर मेरे पास भेज देंगे, तो मैं
आपके साथ अच्छा सलूक करूंगा और आपको धन दौलत
दूंगा। पर यदि आप मेरी बात न मानेंगे, तो मैं जबरदस्त फौज
भेजकर आपका देश नष्ट भ्रष्ट कर दूंगा। कन्दजके हाकिमने
इस चिट्ठीका कोई खयाल नहीं किया। जो दूत पत्र लेकर गया
था, उसको इनाम दिया और चिट्ठीके जवाबमें यह लिख
दिया, कि मुझमें अमीरको पकड़नेकी शक्ति नहीं है। जब
दूत बिदा होने लगा, तो हाकिम कन्दजने उससे कहा, कि
मैंने चिट्ठीमें भी लिख दिया है और तुम जुबानी भी शाहसे
यही कह देना। उस तारीखसे हाकिम अमीरकी सेवा अधिक
यत्न और उत्साहके साथ करने लगा!

"अमीर दोस्तमुहम्मद बुखारे न जाता। किन्तु जब शाह बुखाराने उसको बुलाया, तो वह वहां गया। इसका वृत्तान्त इस प्रकार है, कि शाह बुखाराको मालूम हुआ, कि शाह शुजाके डरसे अमीर दोस्त मुहम्मद खां काबुल चला आया है। इसपर उसने अपना एक दूत काबुल भेजा। उसकी मारफत अमीर दोस्त मुहम्मदको कहला भेजा, कि आपकी विपत्तिका हाल सुनकर मुझे बड़ा दुःख हुआ। मैं बहुत दिनोंसे आपका दर्शन करना चाहता हूं। बहुत दिनोंसे आपका नाम और वीरताका हाल सुनता हूं; अमीर शाह बुखाराका पत्र पढ़कर और पैगाम सुनकर बुखारे चला। राहमें दो तीन दिनोंतक बलखमें ठहरा। अपने परिवारसे मिला। मुहम्मद अकबर खां अपने बड़े बेटेको साथ लेकर पांच सौ सवारोंके साथ बलखसे बुखारेकी ओर रवाना हुआ। मञ्जिलें तय करके जब बुखारा नगरके समीप पहुंचा, तो शाहकी आज्ञासे शाही अफसरोंने उसका स्वागत किया। अफसर अति प्रतिष्ठापूर्वक अमीर और उनके लड़केको शाह बुखाराके पास ले गये। अमीरने यथानियम भेंट करनेके उपरान्त शाहको आशीर्वाद दिया। अमीरने शाहकी और शाहने अमीरकी प्रशंसा की। शाहने अमीरको अच्छी खिलअत और कितनी ही बहुमूल्य चीजें दीं। शाहने कहा, कि आप कुछ दिनोंतक यहां आराम करें। मैं आपकी सहायताके लिये अपने सन्धियोंसे सलाह लूंगा और तुरन्तोंकी फौज आपके सुपुर्द करके काबुल फिर आपको दिलवाऊंगा। बुखारेसे तीन कोसके अन्तरपर एक किला

था। शाह बुखाराने अमीरको उसीमें उतारा। अमीरके आरामके लिये किलेमें रसद भर दी गई। अमीरने यह कायदा रखा था, कि सप्ताहमें एकबार अपने पुत्र सरदार मुहम्मद अकबर खांके साथ शाह बुखाराके दरबार जाता था। एक दिन दरबारमें शाह बुखाराने दरबारियोंके सामने कहा, कि शाह शुजाने अमीरको गृहविहीन करके काबुलसे निकाल दिया है। वह अकेला काबुलसे बामियान और बामियानसे कन्दज आया। फिर यह वीर यहां पहुंचा। इसकी सहायता करना चाहिये। मन्त्रियोंने कहा, कि ऐसा करनेसे यश और कीर्त्ति अवश्य ही मिलेगी, किन्तु काबुलकी चारो ओर और कोहस्थानमें इतनी बरफ पड़ी है, कि राह बन्द हो गई है। फौजका जाना कठिन है। जब बरफ पिघलेगी, उस समय अमीरकी सहायता की जा सकती है। अमीरने इस बातको बहाना समझा और कहा, कि तुर्कोंकी जाति कायर है। पोस्तीन और दुशालोंके होते हुए भी बरफसे डरती है। जान पड़ता है, कि इन लोगोंने अपने देशसे बाहर कभी पैर नहीं रखा। स्त्रियोंकी भी अपेक्षा अधिक शरीरपालनमें रत रहते हैं। इनसे बहादुरीकी आशा नहीं की जा सकती। शाह बुखाराको इन बातोंसे बहुत दुःख हुआ और उसने अमीरको नसीहत की, कि अमीर तुम्हारी बुद्धि ठिकाने नहीं है। इसीलिये तुम ऐसी बातें मेरी जाति और मेरे सैन्यके बारेमें कहते हो। तुमको पदमर्य्यादाका विचार नहीं। अमीरके साथ साथ उनके पुत्र मुहम्मद अकबर खांने भी ऐसी ही बात कहना शुरू कीं। अन्तमें दोस्त मुहम्मद खां बहुत क्रुद्ध हुआ।

कहा, कि अब मुझे बुखारेका दानापानी हराम है। यह कहकर अमीर उठा। शाह बुखाराको समझाने बुझानेका खयाल नहीं किया। जिस किलेमें ठहरा था, वहांसे अपने साथियोंसहित चल खड़ा हुआ। इधर शाह बुखाराको खयाल हुआ, कि मैं आश्रयदाता था और अमीर आश्रित। मुझसे असन्तुष्ट होकर उसका चला जाना अच्छा नहीं। उसको राहसे वापस बुलाना चाहिये।

"इस विचारसे उसने अपने सईद नामक पहलवानको पांच सौ सवारोंके साथ अमीरको वापस लानेके लिये भेजा। अमीरने सईद और सवारोंको देखकर अनुमान किया, कि शाह बुखाराने यह फौज मेरे पकड़नेके लिये भेजी है। यह भी अनुमान किया कि, मेरी दरबारकी बातोंसे असन्तुष्ट होकर शाह मुझको कैद करना चाहता है। पिता पुत्र इसी विचारमें थे, कि सईद पहुंच गया और कहा, कि अमीर! ठहर जा, कहां जाता है। बादशाहने तुझे बुलाया है। तुझे मेरे साथ बुखारे चलना पड़ेगा। अमीरने जवाब दिया, कि अब मैं शाह बुखारापर विश्वास नहीं करता और मैं बुखारे न जाऊंगा। न मैं उसका गुलाम हूं, न नौकर और न प्रजा। सईदने अमीरसे अनुरोध किया और उसकी कमरमें हाथ डालकर अपनी ओर खींचा। अन्तमें दोनो ओरसे तलवारें निकल पड़ीं और मार काट हुई।

"कहते हैं, कि इस लड़ाईमें कोई दो सौ तुर्क हताहत हुए। अमीरके भी कुछ आदमी मारे गये। अमीरका घोड़ा घायल हुआ। मुहम्मद अकबर खां जखमी होकर घोड़ेसे गिर

पड़ा और बेहोश हो गया। घोड़ेके घायल हो जानेसे अमीर एक जगह ठहर गया। इसी समय बुखारेके सवारोंने अमीरको घेर लिया और इसी दशामें उसको बुखारे ले गये। सईदने अमीर और उसके बेटेको शाह बुखाराके सामने पेश किया। साथ साथ दोनोंके शौर्य्य वीर्य्यकी प्रशंसा की। कहा, कि अमीर दोस्त मुहम्मद खां और सरदार मुहम्मद खांकासा कोई अफ़गान बहादुर नहीं देखा। यह दोनो जिसपर तलवार मारते, उसके दो टुकड़े होते थे। अमीरने एक भालेमें दो सवारोंको छेदकर जीनसे उठा लिया था। यही बात उसके लड़के मुहम्मद अकबर खांने की। मैं नहीं कह सकता कि यह मनुष्य हैं, वा दैत्य। युद्धके समय यह अपनी जान ढगावत समझ रहे थे। अमीरका घोड़ा यदि घायल न हो जाता, तो अमीर कदापि पकड़ा न जाता। शाह बुखाराने अमीरके पराक्रमका हाल सुनकर अपने दिलमें कहा, कि ऐसे बहादुरोंको मारना वा कैद करना शाहाना शानके खिलाफ़ है।

"शाहने उनका अपराध क्षमा किया। उनके घावकी दवा कराई। जब सरदार मुहम्मद खांके भी जखम अच्छे हो चुके, तो अमीर दोस्त मुहम्मदने शाहसे कहा, कि अब आप मुझे आज्ञा दीजिये। बलख जाकर अपने बाल बच्चोंसे मिलूं। शाह बुखाराने कहा, कि मैंने आपको इसलिये बुलाया था, कि आपकी सहायता करके आपको फिर काबुलके सिंहासनपर बैठा दूं। किन्तु आपकी कठोर बातोंसे कुल तुर्क दुःखी हो गये हैं। आपके सईदके साथ लड़नेसे वह और भी असन्तुष्ट हो गये हैं। इसलिये यहां आपका ठहरना उचित नहीं।

आप जिस तरफ जाना चाहते हैं, जाइये। भगवान आपके सहाय होंगे। फिर कहा, कि अशरफियोंकी थैलियां, दो घोड़े और माल सामान अमीर और उनके पुत्रको दे दिये जावें। शाहने अमीरको राहदारीका परवाना देकर विदा किया।

"अमीर दोस्त मुहम्मद खां अकबर खांके साथ बुखारेसे कन्दज वापस आया। वहां अपना कुटुम्ब देखकर बहुत प्रसन्न हुआ। कुछ दिनोंतक वहीं ठहरा। फिर एक दिन उनके मनमें आया, कि अपने परिवारको किसी सुरक्षित जगह भेज देना चाहिये। कुश उसको सुरक्षित जान पड़ा। अमीर वहांके हाकिमपर विश्वास करता था। अमीरने अपने भाई जब्बार खांके साथ अपना परिवार कुश भेजा। जब्बार खां जब तीन या चार मंज़िल पहुंचा, तो उसने शाह शुजाको चिट्ठी लिखी, कि यदि आप मुझे रुपये और जागीर दें, तो मैं अमीरका परिवार कुश न ले जाकर आपके पास लाऊं। यह चिट्ठी पाते ही शाह शुजाने अपना एक विश्वस्त कर्मचारी जब्बारके पास भेजा। जब्बारको कहलाया, कि तुम शीघ्र ही दोस्त मुहम्मदके कुटुम्बसहित काबुल चले आओ। मैं तुमको इतना धन दूंगा, जितना तुमने कभी स्वप्नमें भी देखा न होगा। अमीरने जब्बारके पास अपने कर्मचारीकी मारफत बहुतसी अशरफियां भेज दीं। जब्बार खां अशरफियां पाकर बहुत सन्तुष्ट हुआ और अन्तमें अमीरके परिवारसहित काबुल पहुंचा।

"इधर अमीर अपना परिवार कन्दजसे भेजकर निश्चिन्त हो गया। यह सैर और शिकारमें लगा। एक दिन एक

मनुष्यने अमीरको खबर दी, कि आप तो चैन कर रहे हैं, किन्तु आपके भाई जब्बारने रुपयेको लालचसे आपका परिवार काबुल पहुंचा दिया। यह सुनकर अमीर बहुत घबराया। जब घबराहट कम हुई, तो परमेश्वरसे सहायता पानेकी प्रार्थना करने लगा। इस घटनासे वह इतना विकल हुआ, कि एक दिन यमधर मारकर आत्महत्या करनेपर उद्यत हुआ। ऐसे ही समय कन्दजका हाकिम वहां आ गया। उसने अमीरका हाथ पकड़ लिया और समझाया, कि अपमृत्यु अच्छी नहीं। मरना ही है तो सम्मुख समरमें मरिये। यदि जीत गये तो अच्छा है, मारे गये तो शहादत पाइयेगा। मेरे पास जो खजाना है, उसे आपको देता हूं। मेरी फौज अपनी फौज समझिये। कुछ दिन धीरज धरिये। मैं सुप्रसिद्ध वीरों और पहलवानोंको एकत्र करके आपके साथ किये देता हूं। हाकिमने अपनी बात पूरी की। जब कुल फौज अमीरके पास जमा हो गई, तब वह कन्दजसे काबुलकी ओर चला। बुतेनाभियानमें पहुंचकर पड़ाव किया। फौजमें प्रत्येक जातिके सिपाहियोंपर उसी जातिका अफसर नियुक्त किया। कुछ फौज दाहने रखी, कुछ बांये। बीचमें आप हुआ। कह दिया, कि लड़नेके समय इसी कायदेसे युद्ध करना होगा। उधर शाह शुजाने अमीरके आनेका समाचार पाकर एक फौज मुकाबिलेके लिये भेजी। पांच अङ्गरेज अफसरोंकी अधीनतामें कोई बीस हजार सिपाही बुते-बामियानकी ओर रवाना हुए। जब यह फौज अमीरकी फौजके समीप पहुंची, तो सरदारोंने सलाह करके अमीरके

पास एक सरदार भेजा और कहलाया, कि आप वृथा ही अपनी जान देना और शाही फौजसे सामना करना चाहते हैं। आप जङ्गल जङ्गल पहाड़ पहाड़ भटकते फिरते हैं। उचित तो यह था, कि आप शाहकी सेवामें चले आते। शाह आपको शरण देंगे और आपका देश आपको लौटा देंगे। सरदारकी यह बात सुनकर अमीरको बहुत क्रोध आया। उसने सरदारसे कहा, कि यह बादशाह अन्यायी और अत्याचारी है। वह इस योग्य नहीं, कि मैं उसकी सेवा स्वीकार करूं। कप्तान साहबसे कह देना, कि कल मैं युद्ध करूंगा। अब कभी ऐसा सन्देसा मुझे न भेजा जावे।

दूसरे दिन अमीर तुर्की फौज लेकर अङ्गरेजी फौजके सामने आया। अङ्गरेजोंकी शिक्षित सैन्यकी गोली गोलोंकी मारसे अमीरके हृष्टपुष्ट सिपाही भागे। अमीरका पड़ाव लुट गया। इस पराजयसे अमीर बहुत दुःखी हुआ। रात्रिके समय भगवानसे प्रार्थना करने और रोने लगा। अमीरके रोनेकी आवाज सुनकर तुरकी अफसर अमीरके पास आये। कहा हम लोगोंने पहले अङ्गरेजोंके युद्ध करनेका ढङ्ग देखा नहीं था। इसीलिये गोली गोलोंके सामने ठहर नहीं सके। दूसरी लड़ाईमें हम लोग जीतेंगे और बन पड़ेगा, तो अङ्गरेजी फौजका एक भी आदमी जीता न छोड़ेंगे। इसके उपरान्त सबने अमीरके सामने शपथपूर्वक प्रण किया, कि जबतक हमारे शरीरमें प्राण हैं हम युद्ध करेंगे। इस प्रणसे अमीरके निर्बल हृदयमें बलका सञ्चार हुआ। उसने अपनी फौज फिरसे दुरुस्त की और युद्धस्थलमें आ डंटा।

"दूसरी लड़ाईमें अङ्गरेजी फौजने बड़ी चेष्टा की। खूब गोली गोले बरसाये। किन्तु अमीरकी सैन्य अग्निवृष्टिकी परवा न करके आगे बढ़ी और अङ्गरेजी सैन्यसे भिड़ गई। घोर युद्ध हुआ। काटन साहबकी फौजके आधे आदमी मारे गये। युद्ध देखनेवालोंका बयान है, कि अमीरकी फौजके सिपाही जिसपर तलवारका भरपूर हाथ मारते, उसके ककड़ी-कैसे दो टुकड़े करते। अन्तमें अङ्गरेजी फौजके पैर उखड़े। वह भागकर एक पहाड़पर चढ़ गई। अमीर दोस्त मुहम्मद खां इस युद्धमें बहुत थक गया था। वह अङ्गरेजी फौजका पीछा नहीं कर सका। उसने दूसरे पहाड़पर चढ़कर दम लिया। दोनो ओरकी फौज एक सप्ताहतक सुस्ताती रही। सिर्फ गश्ती सिपाहियोंमें छोटी मोटी लड़ाइयां हो जाया करती थीं। उधर अमीर यह सोच रहा था, कि या तो लड़ते लड़ते मारा जाऊं या काबुल पहुंचकर शाह शुजासे अपना बदला लूं और अपना परिवार कैदसे छुड़ाऊं। इसके उपरान्त किसी ऐसी जगह चला जाऊं, कि फिर मेरा हाल किसीको मालूम न हो। अमीर न तो गोलेसे डरता था और न गोलियोंसे। वह अपनी जान हथेलीपर रखे हुआ था।

एक पक्षके उपरान्त अङ्गरेजी फौज पहाड़से उतरकर मैदानमें आई। फौजके अफसरने अमीरको कहला भेजा, कि या तो आप उतरकर युद्ध करें, अन्यथा मैं आपपर आक्रमण करूंगा। अमीरने जवाब दिया, कि कलसे मैं युद्धमें प्रवृत्त हूंगा। दूसरे दिन दोनो फौजोंका सामना हुआ। एक ओरसे गोले गोलियां चलती थीं,—दूसरी ओरसे सवार और

पैदल सिर्फ तलवारें खींचकर धावा मारते हुए आक्र-मण करते थे। अमीरके सवारोंने अङ्गरेजोंके तोपखानेपर आक्रमण किया। तोपखानेने गोले मार मारकर आते हुए सवार उड़ाना आरम्भ किये। अधिकांश सवार उड़ गये अन्तमें जो बचे, वह तोपखानेतक पहुंचे। उन लोगोंने वह पहुंचते ही तोपखानेके सिपाहियोंके टुकड़े टुकड़े उड़ा दिये। इसके उपरान्त वही सवार अङ्गरेजोंकी शिक्षित सैन्यपर टूट पड़े! अङ्गरेजी सैन्य सङ्गीनों और तमञ्चोंसे सवारोंको मारने लगी। इसी अवसरमें अमीरकी सैन्यने अङ्गरेजी फौजपर पीछे और आगेसे आक्रमण किया। उस समय अङ्गरेजी फौज बहुत चिन्तित हुई। फौजने अपने खजानेके कोई पैंतीस लाख रुपये नदीमें फेंक दिये और वह भागकर एक पर्व्वतपर चढ़ गई। अमीरकी फौजने अङ्गरेजी फौजका पड़ाव लूट लिया। अमीर भी दूसरे पहाड़पर चला गया और अपने घायलोंकी औषधि करने लगा।

"अब अमीरने दृढ़ सङ्कल्प किया, कि मैं काबुलपर अवश्य ही आक्रमण करूंगा। इधर अङ्गरेजी सैन्यके सेनापति बहुत चिन्तित थे। उन्होंने रात्रिके समय कमान बाकरको उस अङ्ग-रेजी फौजमें भेजा, जो युद्धस्थल और काबुलके बीचमें पड़ी थी। यह कुमकी फौज थी। कमान बाकरने कुमकी सैन्यके सेनाप-तिसे जाकर कहा, कि जो सैन्य अमीरसे लड़ रही है, वह आधी मारी जा चुकी है। जो बची है, घायल पड़ी हुई है। हम लोग अपना खजाना पानीमें डाल चुके हैं। अमीर मनुष्य नहीं, वरञ्च दैत्य जान पड़ता है। गोला गोलीकी दृष्टिमें बेध-

ड़क घुस आता है। यही दशा उसके तुरकी सिपाहियोंकी है। लड़ाईके समय वह अपनी दाढ़ियां मुंहमें दबा लेते हैं और तलवारें खींचकर हमारी फौजपर आ टूटते हैं। घोर युद्ध करते हैं। हम लोगोंने दो सप्ताहतक युद्ध किया। तोप बन्दूकसे खूब काम लिया। पर लड़ाईमें अमीर हीक पल्ला भारी रहा। प्रत्येक वार उसने हमारे सिपाहियों और अफसरोंको मारा। अब हम सिपाहियोंका छोटासा झुण्ड लिये दो पहाड़ोंके बीचमें पड़े हुए हैं। उन्होंने मुझे आपके पास भेजा है। आप शीघ्र ही कुमकी फौज लेकर चलिये। न चलियेगा, तो हमारी थोड़ीसी फौज मारी जायगी।" कप्तान वाकरकी बात सुनकर कुमकी सैन्यके सेनापतिको चिन्ता हुई। उसने इस घटनाका समाचार काबुल भेजा।

"इधर अमीरने अपनी छोटीसी फौज और नाममात्रके खजानेपर निगाह की। खयाल किया, कि इस दशासे मैं काबुल कैसे पहुंच सकूंगा। किन्तु वह अपनी जिन्दगीसे हाथ धो चुका था। इस लिये सिर्फ दो हजार सवार लेकर काबुलकी ओर रवाना हो गया। राहमें उसको यशद नामे नगर मिला। सय्यद मसजिदी नगरका हाकिम था। वह अगवानी करके अमीरको अपने किलेमें ले गया। वहां अमीरकी दावतें कीं। हाकिमकी हठसे अमीर कुछ दिनोंतक किलेमें रहा। सेनापति काटन साहबको जब यह हाल मालूम हुआ, तो उन्होंने सय्यद मसजिदीके पास अपना एक दूत भेजा। दूतकी मारफत सय्यदको कहलाया, कि अमीरको गिरफ्तार करके मेरे पास भेज दो। भेज दोगे तो पारितोषिक पाओगे, न भेजोगे,

तो आफ़तमें फंसोगे। सय्यद मसजिदीने दूतको जवाब दिया, कि साहबकी इस बातका जवाब मैं तलवार और खञ्जरसे देना चाहता हूं। दूत यह सुनकर चला गया। दूसरे दिन अमीर दोस्त मुहम्मद और सय्यद मसजिदी तुरकी फौज लेकर काटनकी फौजके सामने पहुंचे। सामने पहुंचते ही नियमानुसार अमीरकी फौजने बादशाही फौजपर आक्रमण किया। दोनो ओर सङ्गीनें तलवारें चलने लगीं। कहीं कहीं सिपाही इतने भिड़ गये, कि आपसमें कुश्ती होने लगी। एकको दूसरेकी खबर नहीं थी। यह नहीं मालूम, कि काटन साहब कहां मारे गये। रेट साहब गुम हो गये। अङ्गरेजी सैन्यके कुल सिपाही हताहत हुए। अमीरने अङ्गरेजी फौजका कुल माल सामान लूट लिया। इसके बाद अमीर सय्यद मसजिदीके साथ अपने डेरेपर वापस आया। जब सेनापति सीलको यह हाल मालूम हुआ, तो वह स्वयं अपनी फौज लेकर अमीरसे लड़ने और अपनी फौजकी सहायता करनेके लिये चला। राहमें उसको अपनी फौजके परास्त होने और दो अङ्गरेज अफसरोंके मारे जानेका हाल मालूम हुआ। इस समाचारसे उसे बहुत दुःख हुआ। जारेंस साहब हिन्दूकुश पर्व्वतपर अपनी फौज लिये पड़ा था। सीलने उसको सैन्यसहित अपने पास बुला लिया। अङ्गरेजी फौजमें बहुत सिपाही हो गये। इस फौजने आगे बढ़कर चपाद किलेको घेर लिया। किलेपर इतने गोले बरसाये, कि किलेके बुर्ज आदि टूट गये। यह देखकर अमीर और सय्यद मसजिदी चिन्तित हुए। उनको भय हुआ, कि किसी समय अङ्गरेजी फौज किलेमें घुस आवेगी।

"एक दिन अमीर और सय्यद मसजिदीने किलेका खजाना अपने साथ लिया और बाकी सामान फूंक दिया। इसके उपरान्त वह अपनी फौजके साथ किलेके बाहर निकले और अङ्गरेजी फौजसे लड़ भिड़कर निकल गये। एक पहाड़पर चढ़कर दम लिया। रात्रिके समय युद्ध नहीं हुआ। अङ्गरेजी फौजने घग्नद नगरमें आग लगाकर उसको भस्म कर दिया। प्रातःकाल सय्यद मसजिदी पर्व्वतपरसे उतरा और गम्नती सिपाहियोंको मारकर सीलकी सैन्यपर आक्रमण करनेके लिये बढ़ा। किन्तु कर न सका। कारण, सीलको सय्यदके आनेका समाचार पहले ही मिल चुका था। उसने तोपें लगवा दी थीं और एक किलासा बनवा लिया था। इसके उपरान्त फिर यह न मालूम हुआ, कि सय्यद मसजिदीका क्या हुआ। वह मारा गया वा किसी ओर चला गया। प्रातःकाल अमीर भी पहाड़से उतरा और अङ्गरेजोंकी फौजसे लड़कर फिर पहाड़पर चढ़ गया। एक सप्ताहतक अमीर इसी प्रकार लड़ता रहा। किन्तु रात्रिके आक्रमणके डरसे एक जगह नहीं ठहरता था। एक पर्व्वतसे दूसरेपर चला जाता था। इधर अङ्गरेजी फौज रात्रिके आक्रमणसे डरती थी। उसका अधिकांश रातभर कमर कसे तय्यार रहता था। जब अमीरने देखा, कि उसके सिपाही इस तरह लड़ते लड़ते थक गये हैं, तो वह अपने सिपाहियोंको लेकर आलीहिसार नामे किलेमें पहुंचा। आलीहिसारके हाकिमने प्रत्यक्षमें अमीरका बहुत सन्मान किया। अमीरकी जियाफत की—कुछ सामान नजर किये और दिनरात नौकरोंकी तरह अमीरके पास रहने लगा। किन्तु उसका यह सब काम

नकली था। वह अमीरसे प्रायः कहता था, कि यह दुर्ग बहुत सुदृढ़ है। आप किसी तरहकी चिन्ता न करें। निश्चिन्त होकर यहां रहें। आपका वैरी यदि यहां आवेगा, तो मैं अपनी सैन्यसे उसका सामना करूंगा। किन्तु अमीर दोस्त मुहम्मदने उसकी बातोंसे उसको ताड़ लिया था। वह उसपर विश्वास नहीं करता था और बहुत सावधानीके साथ रहता था।

अमीरकी यहांकी स्थितिका हाल भी सेनापतिको मालूम हुआ। यह भी मालूम हुआ, कि अमीर वहां लड़नेका सामान एकत्र कर रहा है। सामान एकत्र करते ही वह काबुलपर चढ़ाई करेगा। सेनापतिने ख़याल किया, कि अमीर यदि काबुलपर चढ़ गया, तो पहले वह शाह शुजाको मार डालेगा। इसके उपरान्त काबुलमें आग लगाकर उसे भस्म कर देगा। यह सोचकर उसने दृढ़ सङ्कल्प किया, कि अमीरको काबुल न जाने दूंगा। उसने बहुतसे सिपाही और तोपें एकत्र कीं। इसके उपरान्त वह आलीहिसार पहुंचा और उसने किला घेर लिया। अमीरने किलेपरसे देखा, कि बहुत बड़ी फौज किला घेरे पड़ी है। इसपर वह अपनी मुट्ठीभर फौज लेकर किलेसे निकल आया और अङ्गरेजी फौजपर टूट पड़ा। घमसान युद्ध करनेके उपरान्त फिर किलेमें वापस गया। इधर अङ्गरेज सेनापतिने किलेको गिर्द मोरचे बना दिये और कोई सात दिनोंतक किलेपर गोलोंकी वृष्टि की। इसका कोई फल नहीं हुआ। अन्तमें अमीर किलेमें घिरा घिरा घबराया। उसकी रसद भी घट गई थी और तोपोंके लड़-

नेसे किलेमें बहुत बदबू फैल गई थी। एक रात उसने किलेमें आग लगा दी और अपनी फौजके साथ अङ्गरेजी फौज चीरता फाड़ता थरूर किलेकी ओर चला। इस किलेके हाकिमने भी अमीरका स्वागत किया, किन्तु स्वच्छ हृदयसे नहीं। अमीरने किलेमें पहुंचकर अपने घोड़े चरागाहोंमें चरने और मोटे होनेको छोड़ दिये। आप सैन्यसहित दम लेने लगा। इधर किलेके दगाबाज हाकिमने सेनापति सील साहबको समाचार दिया, कि अमीर मेरे किलेमें उतरा है। आप शीघ्र ही आवें। किला घेर लें। किलेके फाटककी ताली मेरे पास है। मैं द्वार खोल दूंगा। अमीरको इस घटनाकी खबर न मिली। एक दिन सवेरे अमीरका एक सिपाही किलेसे बाहर निकला। उसने अङ्गरेजी फौजको किला घेरे पाया। वह उलटे पैर लौटकर अमीरके पास गया। उसने उन्हें जगाकर अङ्गरेजी फौजके आनेकी खबर दी। अमीर तुरन्त ही किलेकी दीवारपर आया। उसने अपनी आंखों अङ्गरेजी फौज देखी। यह देखकर अपने सिपाहियोंको कमर कसने और किलेके हाकिमसे किलेके फाटककी ताली ले लेनेके लिये कहा। इसपर दगाबाज हाकिम अमीरके पास आया। कहने लगा, कि मै हैरान हूं, कि आपके यहां आनेकी खबर किसने अङ्गरेजी फौजको दी। आज्ञा दीजिये, तो मै किलेका फाटक खोलकर बाहर जाऊं और अङ्गरेजी फौजका हाल मालूम करूं। अमीर हाकिमका चेहरा देखते ही उसकी दगाबाजी समझ गया। कहा, बदमाश! तूने ही यह सब किया है। मैं तेरा मेहमान था

और तूने मेरे मरवा डालनेकी फिक्र की। तूने जैसा किया; अब उसका फल चख! यह कहकर तलवारसे उसका सिर काट डाला। फिर उसके घरमें घुसकर उसके घरानेमें किसीको भी जीता न छोड़ा। इसके उपरान्त अपनी फौज लेकर किलेके फाटकपर आया और दरवाजा खुलवाकर अङ्गरेजी फौजपर आक्रमण किया। अमीर जान हथेलीपर लिये गोला गोलीकी वृष्टिसे होता हुआ साफ निकल गया और एक पहाड़पर पहुंच गया। दो सप्ताहतक पहाड़पर ठहरा रहा। वहां पहाड़ी जवानोंकी एक फौज तय्यार की।

"इधर अङ्गरेज-सेनापतिको जब अमीरका पता लगा, तो अपना दलबल लेकर अमीरके सामने पहुंच गया। अमीर भी सेनापतिको देखकर पहाड़से उतरा। युद्ध आरम्भ हुआ। वह युद्ध प्रातःकालसे लेकर सन्ध्यापर्य्यन्त हुआ। युद्धस्थल लाशोंसे भर गया। अन्तमें दोनो फौजें अलग हुईं और अपने अपने पड़ावपर लौट गईं। दूसरे दिन अमीर फिर पहाड़से उतरा और अङ्गरेजी फौजसे लड़कर पहाड़पर वापस चला गया। कुछ दिनोंतक ऐसा ही हुआ। दिनको युद्ध होता और रातको दोनो फौजें अलग हो जातीं। सेनापति सील इस युद्धसे बहुत हैरान हुआ। कारण, उसकी फौज रातको आराम नहीं कर सकती थी। दिनको लड़नेहीसे फुरसत नहीं पाती थी। वह स्वयं हर घड़ी कमर कसे रहता था। न मुसलमानोंकी लाशोंको कफन और कब्र मिलती थी—न हिन्दुओंको लाशोंको आग। सील अमीरके लिये दुःखी था। वह जानता था, कि अमीरका देश छिन गया है—उसके बाल बच्चे काबुलमें

कैद हैं—इसीलिये वह अपनी जानकी परवा न करके लड़ रहा है और इसी तरह लड़ता लड़ता एक दिन मारा जावेगा। उसने विचार किया, कि क्या ही अच्छा हो, यदि यह वीर पुरुष अकालमृत्यु से बच जावे और हमारी शरण चला आवे। सेनापतिने एक दूतकी मारफत यही बात अमीरसे कहलाई। अमीरने दूतको प्रतिष्ठापूर्व्वक अपने सामने बुलाया। सेनापतिका पैगाम सुना और जवाब दिया, कि सील साहबके इस विचारसे मैं अनुगृहीत हुआ। किन्तु शाह शुजासे अत्याचारी बादशाहकी शरण जाना पसन्द नहीं करता। सील साहब यदि मुझपर अहसान करना चाहते हैं, तो मेरे बालबच्चोंको कैदसे छुड़ाकर मेरे पास भेज दें। मैं उन्हें लेकर ऐसी जगह जा बसूंगा, कि फिर मेरा नाम निशान किसीके सुननेमें न आवेगा। किन्तु जबतक मेरा कुटुम्ब कैद है और मेरे शरीरमें प्राण हैं, तबतक मैं बिना युद्धके न रहूंगा! दूतने वापस आकर सील साहबको अमीरकी उक्त बात सुनाई। सील समझ गया, कि अमीर साधारण मनुष्य नहीं है। फिर उसने फ्रेजर साहबके सेनापतित्वमें एक फौज अमीरसे युद्ध करनेके लिये नियुक्त की। अमीर भी फ्रेजरके मुकाबले डट गया।

"इस युद्धमें कुछ नयापन हुआ। अङ्गरेजोंने अमीरसे कहला भेजा, कि दोनो सैन्यका एक एक मनुष्य युद्धस्थलमें आवे। वही लड़े, बाकी सिपाही दूर खड़े रहें। फ्रेजर साहबने सोचा था, कि इस पुराने ढङ्गके युद्धमें बिना विशेष मारकाटके अमीर मारा जा सकता है। अमीरको जो आदमी मार लेगा,

उसकी नामवरी भी कम न होगी। यह विचारकर स्वयं फ्रेजर साहब अपनी फौजसे अकेला निकलकर युद्धस्थलमें आया और अपने मुकाबलेके लिये अमीरको बुलाया। अमीर अपना नाम सुनते ही उसके सामने आ गया। कहा, साहब! अपनी हिम्मत दिखाइये, जिसमें आपके मनमें कोई हौसला बाकी न रहे। फ्रेजरने अमीरपर तलवारकी दो चोटें कीं। अमीर खुफ्तान पहने था, इसलिये उसपर कोई असर न हुआ। अमीरने हंसकर कहा, इसी बल और हथियारके भरोसे मेरे सामने आये थे। अब ठहरो और मेरा भी जोर देखो। यह कहकर अमीरने तलवारका वार किया। पहले ही वारमें फ्रेजरका हाथ कटकर जमीनपर गिर पड़ा। फ्रेजरने पीठ फेरी। चाहा, कि भागे, किन्तु अमीरने उसकी पीठपर और एक घाव लगाया। इसके उपरान्त कप्तान मस्रूली (?) अमीरके सामने आया। अमीरने इसकी कमरपर वार किया। कप्तान कमरसे दो टुकड़े हो गया। नीचेका धड़ घोड़ेकी पीठपर रह गया, ऊपरका नीचे गिर पड़ा। इसके उपरान्त कप्तान नाकर आया। इसने आते ही अमीरपर बरछी चलाई। अमीरने उसकी बरछी खाली दी और उसके घोड़ेकी बराबर अपना घोड़ा ले जाकर उसके शिरपर ऐसा खञ्जर मारा, कि दिमागतक घुस गया। इसपर कप्तान नाकर भागने लगा। किन्तु अमीरने उसको पकड़ लिया और घोड़ेसे उठाकर जमीनपर इस जोरसे पटका, कि कप्तानका दम निकल गया। यह देखकर एक मोटे ताजे डाक्टर अमीरके सामने आये। अमीरने डाक्टरका सामना करना अपनी अप्रतिष्ठा समझी।

इसलिये अपने लड़के अफजल खांको उसके मुकाबलेके लिये भेज दिया। इससे डाक्टर बहुत क्रुद्ध हुआ। बड़े क्रोधसे उसने अफजल खांपर आक्रमण किया। डाक्टरने अफजलपर तलवारका वार करना चाहा, किन्तु अफजलने इससे पहले ही डाक्टरके घोड़ेपर एक गदा मारी। डाक्टरका घोड़ा तड़प कर गिर पड़ा और डाक्टर भाग गये। इसी तरहसे अमीर-का दूसरा लड़का सेखेन नामे अफसरने लड़ा और उसने भी अपनी वीरता प्रकट की।

"जब इसतरह युद्ध समाप्त न हुआ, तो दोनो ओरकी फौजें भिड़ गईं। एक ओरसे अङ्गरेजी फौज अमीरकी फौजपर गोले गोली बरसा रही थी,—दूसरी ओरसे अमीरके सिपाही अङ्गरेजी तोपखानेकी तरफ टूटे पड़े थे और बरछी तलवार छरे आदिसे लड़ रहे थे। इस युद्धमें कोई एक हजार सिपाही और अफसर अङ्गरेजोंकी ओरके और कोई एक सौ सवार अमीरकी तरफके हताहत हुए। अब अमीरके पास उसके कुछ सिपाही और दो लड़के रह गये। इसी दशामें उसने एक पहाड़पर जाकर डेरा डाला। अङ्गरेजी फौज इतना थक गई थी, कि वह अमीरका पीछा न कर सकी।

"जब अमीरने देखा, कि मेरे अधिकांश सिपाही और मेरे इष्ट मित्र मारे जा चुके हैं। मेरे पास खजाना भी नहीं है, कि मैं दूसरी फौज तय्यार कर सकूं। एक ओर मेरी यह दशा है; दूसरी ओर अङ्गरेजी फौज प्रति दिवस मुझपर आक्रमण कर रही है। मैं तो अङ्गरेजी फौजसे सामना करने लायक नहीं

हूं और ऐसा कोई सुरक्षित स्थान वा सहायक भी नहीं है, जिसकी शरण जाकर आत्मरक्षा कर सकूं। मैंने तो बहुत चाहा था, कि लड़ते लड़ते मारा जाऊं, किन्तु बिना मृत्युके कोई कैसे मर सकता है। मैं यही उचित समझता हूं, कि यहांसे अकेला काबुल जाऊं। वहां अङ्गरेज राजदूत मेकनाटन साहबके हाथ आत्म-समर्पण कर दूं। आशा है, कि वह मेरे साथ न्याय करेगा—मेरी दशापर दया प्रकाश करेगा। यह स्थिर करके उसने अपने लोहेके कपड़े उतारे और एक नौकर साथ लेकर रात ही रात वह काबुलकी ओर चला। काबुल पहुंचकर मेकनाटन साहबके घर गया। सन्तरीसे कहा, वजीरको मेरे आनेकी खबर दे दो। मेकानटन अमीरका नाम सुनते ही बाहर निकल आया। साहबको देखकर अमीर घोड़ेसे उतरा। मेकानटन अमीरको अपने घरमें ले गया। उसने उसकी बड़ी प्रतिष्ठा की और आनेका कारण पूछा। कहा, अमीर! कलतक तो आप युद्ध कर रहे थे,—आज इस तरह यहां क्यों चले आये? कल राततक आपके काबुल आनेकी खबरसे नगरमें हलचल पड़ी हुई थी। काबुलवासी बहुत चिन्तित थे। मेकनाटन साहबने यह बात पूछते पूछते कुछ अफगान सरदारोंको अमीरके पहचाननेके लिये वहां बुलाया। सरदारोंने अमीरको देखते ही सलाम किया और उसके हाथ पैर चूमे। इसके बाद वह अमीरके पीछे जा खड़े हुए। अब मेकनाटनको निश्चय हो गया, कि यही अमीर है। उसने अमीरकी प्रतिष्ठा और ज्यादा की। अमीरने अपना हाल बयान करनेसे पहले अपनी कमरसे तलवार खोलकर मेकनाटनके

हुँचावे की। कहा अब आपके सामने मुझे तलवार बांधना उचित नहीं है। यह देखकर मेकनाटनकी आंखोंमें आंसू आ गया। उसने तलवार फिर अमीरकी कमरसे बांध दी और कहा, कि मैं यह तलवार इङ्गलण्डकी ओरसे आपकी कमरमें बांधता हूं। असलमें यह तलवार आप हीको शोभा देती है। इसके उपरान्त मेकनाटनने अमीरके आनेका कारण फिर पूछा। अमीरने आदिसे अन्ततक अपनी कहानी कह सुनाई। अन्तमें कहा, कि अब मैं आपके पास न्यायप्रार्थी होकर आया हूं। मेकनाटनने कहा, कि आप धैर्य धरिये आपकी इच्छा पूर्ण करनेकी चेष्टा की जावेगी। अमीरने कहा, कि मेरी सिर्फ तीन इच्छा है। एक यह, कि आप मुझे शाहके सामने न ले जावें। दूसरी यह, कि आप मुझे भारतवर्ष भेज दें और मुझे मेरे लड़के हैदर खांसे मिला दें। तीसरी यह, कि मेरे लड़के अकबार खांको कन्द्जसे नरमी और मुलायमतसे बुलावें। जब वह आ जावे, तो उसको भी मेरे पास हिन्दुस्थान भेज दें। मेकनाटन साहबने अमीरकी तीनो बातें स्वीकार कीं और उसे एक बहुत बड़े मकानमें ठहराया। साथ साथ आरामका बहुतसा सामान भेज दिया। अमीर गजनीसे अपना कुटुम्ब आनेतक काबुलमें रहा। इसके उपरान्त भारतवर्षकी ओर चला। मेकनाटेन साहबने निकलसन साहबको अमीरके साथ कर दिया। अमीर खैबरकी राहसे काबुलसे भारतवर्ष आया। अङ्गरेजोंने उसको लोधियानेमें रखा। कारण, लोधियानेमें अङ्गरेजोंकी फौज थी और वह अमीरकी देख भाल कर सकती थी।

"अमीरको लोधियानेमें सपरिवार रहते हुए बहुत दिन नहीं बीते थे, कि उस जमानेके गवरनर जनरल लार्ड आकलण्डने अमीरको कलकत्ते बुलाया। एक चिट्ठी लिखी। उसमें लिखा था; कि मैंने आपकी बहादुरीकी तारीफ सुनी है। अब आप कम्पनीकी शरण आये हैं,—इसलिये मैं आपसे मिलना चाहता हूं। मैं चाहता था, कि मैं स्वयं आपकी मुलाकातको आऊं। पर कामके बखेड़ेमें फंसा हुआ हूं। आसामकी ओर फौजें भेज रहा हूं। इसलिये इस समय मेरा आना नहीं हो सकता। आप यदि यहां आवेंगे, तो सैर कर सकेंगे, मुझसे मिलेंगे और अपने लड़के गुलाम हैदर खांसे भी मुलाकात करेंगे। अमीरने चिट्ठीके जवाबमें लिखा, कि मुझे आपके पास आनेमें किसी तरहकी आपत्ति नहीं है। इसके उपरान्त अपना परिवार लोधियानेमें छोड़ा और कुछ आदमियोंको साथ लेकर कलकत्ते चला। मिष्टर निकलसन अमीरके साथ था। जब अमीर कलकत्तेके समीप पहुंचा, तो गवरनर जनरल बहादुरने बड़े बड़े अफसरोंको उसकी अगवानीके लिये भेजा। बड़ी प्रतिष्ठाके साथ कलकत्तेमें दाखिल किया। एक सजे सजाये बड़े मकानमें ठहराया। गवरनर जनरलने अमीरकी खातिरदारीके लिये एक अफसर नियुक्त किया। अमीर कलकत्तेकी सड़कें, लम्बी चौड़ी हरियालियां और सुन्दरी स्त्रियोंको देखकर बहुत प्रसन्न हुआ। एक दिन अमीर और गवरनर जनरलकी मुलाकात हुई। उस दिन गवरनर जनरलके सिकत्तर तथा एडीकांग अमीरकी अगवानीको आये। जब अमीर उस दफ्तरके समीप पहुंचा, जिसमें गवरनर जनरल थे,

तो स्वयं गवरनर जनरल बहादुर अमीरकी स्वागतके लिये कम-रेके बाहर निकल आये। अमीरका हाथ अपने हाथमें लेकर बैठनेकी जगह ले गये और उसे अपनी बराबरमें बैठाया। पूछा, कि भारतवर्षमें आप किस नगरमें रहना चाहते हैं। अमीरने जवाब दिया, कि अब मैं आपकी रक्षामें आ गया हूं, जिस जगह इच्छा हो रखिये। गवरनर जनरलने कहा,कि भारतवर्षका जितना भाग हमारे पास है, उसमें आप जहां चाहें, वहां रहें। इसके उपरान्त गवरनर जनरलने अमीरको एक तलवार मोतियोंकी माला और कितनी ही अङ्गरेजी चीजें नजरमें दीं। अन्तमें जिस जगहसे अगवानी करके अमीरको लाये थे, वहांतक पहुंचा दिया। अमीरके पास इतने रुपये रख दिये जाते थे,कि वह जिस समय जो चीज चाहता खरीद करता था। कलकत्तेमें अमीरने अपने और अपने परिवारके लिये लाखों रुपयेकी चीजें खरीदीं। अमीरके महलमें नाच रङ्गके जलसे हुआ करते थे। अमीर कभी कभी नाच घरमें जाता और जलसे देखकर प्रसन्न हुआ करता था। तीन महीने तक अमीर कलकत्तेमें रहा। यहीं अपने लड़के गुलाम हैदर खांसे मिला। इसके उपरान्त वह लोधियानेकी ओर चला। किन्तु अभी दिल्ली भी न पहुंचने पाया था, कि भारत-सरकारको काबुलकी बगावतका हाल मालूम हुआ। अमीर जहां था, वहीं नजरबन्द कर लिया गया।"

पाठक अब अमीर दोस्त मुहम्मदका हाल अच्छी तरह जान गये होंगे। ऊपरका उद्धृत लेखखण्ड कुछ लम्बा है, किन्तु प्रयोजनीय सूचनाओंसे भरा हुआ है। हमें किसी

अङ्गरेजी पुस्तकमें अमीर दोस्त मुहम्मदका अधिक हाल नहीं मिला,—इसीलिये उक्त लेखको नैरङ्गे अफ़गानसे उद्धृत करना पड़ा। अब हम अमीर दोस्तमुहम्मदके काबुलसे चले जानेके बादका अफ़गानस्थानका हाल लिखते हैं। अमीर जिस समय अङ्गरेजी सैन्यसे लड़ रहा था, उसी समयसे अफ़गानस्थानमें बगावतकी आग भड़क रही थी। बगावतकी आग भड़कनेके कई कारण इस प्रकार हैं,—

(१) शाह शुजा अफ़गानस्थानपर अधिकार करनेके उपरान्त एक सालतक विधिपूर्वक, न्यायपूर्वक देशका शासन करता रहा। इसके बाद उसने स्वभाववश अन्याय और अत्याचार करना आरम्भ किया। शाहने एक दिन मेकानटन साहबसे कहा, कि यह अफ़गानजाति बहुत धनाढ्य है। धन सम्पत्तिके मदसे वह मेरी अवज्ञा किया करती है। अफ़गानोंको नम्र बनानेके लिये इनका मासिक वेतन घटा देना चाहिये इनकी जागीरोंका आधा भाग ले लेना चाहिये और इनका टिकस दूना कर देना चाहिये। मेकनाटन साहबने शाहको समझाया, कि यह आज्ञा अच्छी नहीं है। शाहने मेकनाटन साहबको जवाब दिया, कि आप विदेशी हैं। आपको यह नहीं मालूम, कि अफ़गान जाति जब कङ्गाल हो जाती है, तो शान्ति और नम्र हो जाती है और जब धनी रहती है, तो बादशाहकी बराबरी करना चाहती है। अन्तमें मेकनाटन साहबने बादशाहकी बात मान ली। शाहकी आज्ञा कार्य्यमें परिणत होते ही सम्पूर्ण अफ़गानस्थानमें बगावतके चिन्ह परिलक्षित होने लगे।

(२) इस घटनाके उपरान्त ही किसी अफ़गानने अपनी

दुश्चरिता स्त्रीका वध किया। वह पकड़ा गया। मेकनाटन साहबके सामने उसने अपना अपराध स्वीकार किया। इसपर मेकनाटनने उसको नगर भरमें घसिटवाकर मरवा डाला। अफगानोंकी बगावतका यह दूसरा कारण हुआ। अफगान सोचने लगे, कि अब इस देशमें विदेशियोंका आईन चल गया है। इससे हमारी मर्य्यादापर ठेस लगेगी। घरकी स्त्रियां व्यभिचारिणी बनेंगी। पुरुष उनका व्यभिचार देखकर भी उन्हें किसी तरहका दण्ड न दे सकेंगे।

(३) बरनेस साहब एक दिन काबुल नगरकी सैर कर रहे थे। उन्होंने किसी कोठेपर एक सुन्दरी रमणी देखी। उसकी सूरत उन्हें भली जान पड़ी। अपने घर वापस आकर नगरके कोतवालसे कहा, कि अमुक महल्लेके अमुक मकानके स्वामीको बुलाओ। गृहस्वामी अफगान सिपाही था। बरनेस साहबने उससे कहा, कि मैं तेरी स्त्रीपर आसक्त हूं। तू यदि उसको मेरे पास लावेगा, तो मैं तुझे धन सम्पत्ति देकर मालामाल बना दूंगा। अफगान क्रोधसे आंखें लाल लाल करके बोला,—“साहब! ऐसी बात फिर न कहियेगा। नहीं, तो मैं तलवारसे आपकी गरदन उतार लूंगा।” बरनेसने इस अफगानको कैद कर लिया। अफगानके सम्बन्धी अफगान सरदारोंके पास गये। उनको बरनेसका सब हाल सुनाया। अफगान सरदार शाहके पास गये, किन्तु शाहने उन सबकी बात सुनकर उन्हें पिटवाकर निकलवा दिया। दूसरे दिन कुछ अफगान सरदार बरनेसके पास गये। उन लोगोंने बरनेसको बहुत कड़ी बातें सुनाई और अन्तमें उनकी हत्या की।

और उनका घर जला दिया। हम नहीं जानते, कि यह बात कहांतक सत्य है। किन्तु मुंशी अब्दुलकरीम साहबने अपनी पुस्तक "महारबये काबुल" में और उसी पुस्तकके आधारपर नैरङ्गे अफगानमें ऐसी ही बात लिखी है। जो हो; बरनेसने यह अवश्य अपराध किया हो, वा न किया हो, किन्तु इसमें सन्देह नहीं, कि अफगानोंने उनकी हत्या की। इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिकामें इसी बातका उल्लेख इस प्रकार किया गया है,— "नई सरकार कायम होनेके उपरान्त धीरे बलवेका सूत्रपात हुआ। राजनीतिक कर्म्मचारी भरोसेमें भूले हुए थे और चितावनियोंपर ध्यान न देते थे। सन् १८४१ ई०की २री नवम्बरको काबुलमें जोर शोरके साथ बलवा फूट पड़ा। बरनेस और कितने ही अङ्गरेज अफसर मारे गये।"

इस दुर्घटनाके बाद होसे अफगानस्थानके अङ्गरेजी शासनपर धक्केपर धक्के लगे। अफगानस्थानकी अङ्गरेजी फौजपर आफतपर आफत आने लगी। काबुलकी अङ्गरेजी फौज घिर गई। उनको रसद जुटाना मुश्किल हो गया। अङ्गरेजी सैन्यके प्रधान सेनापति अलफिन्सटन साहब बड़ी हैरानीमें पड़ गये। अङ्गरेजोंके काबुल-दूत मेकनाटन साहबका भयङ्कर परिणाम लिखनेके पहले, हम इस बलवेसे कुछ पूर्व्वका हाल लिखते हैं। अमीर दोस्त महम्मदके भारतवर्ष जानेके उपरान्त मेकनाटन साहबने अमीरपुत्र अकबर खांको एक पत्र लिखा। पत्रका विषय इस प्रकार था,—"मैंने आपके पिताको सपरिवार हिन्दुस्थान भेज दिया है। गवरनर जनरलको लिख दिया है, कि वह आपके पिताको आरामके साथ रखें। मेरी जैसी

प्रगाढ़ भक्ति आपके पितापर है, वैसी ही आपपर भी है। फिर आप मुझसे लड़ने झगड़नेके लिये क्यों तय्यार हैं? आपको उचित है, कि आप लड़ाई झगड़ेके प्रपञ्चमें न पड़कर सीधे मेरे पास चले आवें और मुझसे मिलें। मैंने जैसी प्रतिष्ठा आपके पिताकी की थी, वैसी ही आपकी भी करूंगा। पर आप यदि मेरा कहना न मानेंगे, तो मैं फौज भेजकर आपको परास्त करूंगा। मैं आपको अपने लड़केसा समझता हूं। आपको छेड़कर युद्ध करनेकी मेरी इच्छा नहीं है। आशा है, कि आप शीघ्र ही इस पत्रका उत्तर देंगे।"

इसपर मुहम्मद अकबरने जो जवाब मेकनाटन साहबको लिख भेजा, उसका मर्म्म इस प्रकार है;—आपको चाहिये, कि आप यह देश छोड़कर ससैन्य हिन्दुस्थान वापस जावें। इस देशके रहने वाले जङ्गली पशुओंकी तरह कष्ट पहुंचाया करते हैं। इनके नजदीक अपनी जान देना और दूसरोंकी ले लेना कोई बड़ी बात नहीं। आपने मेरे पिताके साथ सुव्यवहार किया है। उसके बदले मैं आपकी फौज खैबर दर्रेतक निर्व्विघ्न पहुंचा दूंगा। खैबर दर्रा पार करके आप सकुशल भारतवर्ष पहुंच जावेंगे। दूसरी बात यह है, कि आप अन्यायी और अत्याचारी शाह शुजाका इतना पक्षपात न करें। उसको काबुल हीमें छोड़ दें। यदि उसकी चलन ठीक रही, तो मैं उसकी सेवा और सम्मान करूंगा। तीसरी बात यह है, कि आप भारत पहुंचकर अमीरको अफगानस्थान वापस करें। यदि मेरी यह सब बातें आप स्वीकार करेंगे, तो मैं काबुल आकर आपसे मिलूंगा।" इससे पहले ही बागी

अफगानोंकी सैन्यने बालाहिसारपर मोरचे बांधकर अङ्गरेजी फौज और शाह शुजाकी फौजका सम्बन्ध तोड़ दिया था। इन बाधासे अङ्गरेजी फौजको रसद नहीं पहुंचती थी। अकबर खांने मेकनाटन साहबको पूर्व्वोक्त पत्र भेजकर बालाहिसारके मोरचे हटवा दिये। उधर दूतने वापस जाकर अकबर खांका पत्र मेकनाटन साहबको दिया। जुबानी भी कहा, कि मुहम्मद अकबर खां आपसे युद्ध करना नहीं चाहता। उसने बालाहिसारका मोरचा छोड़ दिया है। आप यदि उसकी तीनो बातें मान लेंगे, तो वह आपके पास आवेगा। मेकनाटन साहबने सोच समझकर तीनो बातें स्वीकार कर लीं। अकबर खांको लिख भेजा, कि आपकी बातें मञ्जूर हैं। आप आकर मुझसे मिलिये। आपको यदि यहां आनेसे इनकार हो, तो मुलाकातके लिये कोई दूसरी जगह चुनिये।

गैरङ्गे अफगानमें लिखा है,—"मेकनाटेन साहबने यह चिट्ठी भेजनेके बाद एक चाल खेली। मुहम्मद अकबर खांको लिखा, कि सरदार अमीन खां, अब्दुल्लह खां, शीरीं खां और अजीज खां यह सब अफगान सरदार आपके विरुद्ध हैं। जैसे ही मैं अफगानस्थानसे बाहर निकल जाऊं, आप इन लोगोंको मरवा डालियेगा। यह जीते रहेंगे, तो आप जीते न रहेंगे। मेकनाटेनने अकबर खांको तो यह लिखा और पूर्व्वोक्त अफगान सरदारोंको यह लिखा, कि मेरे अफगानस्थानसे बाहर निकलते ही तुम लोग अकबर खांको मार डालनेकी फिक्र करना। वह तुम लोगोंकी हत्या करना चाहता है। मुहम्मद अकबर खांने मेकनाटन साहबकी चिट्ठीपर सन्देह

हुआ। उसने रातको पूर्व्वोक्त सरदारोंको अपने खेमेमें बुलाया। मेकनाटन साहबकी चिट्ठी सबके सामने रख दी। यह पत्र देखकर सब सरदार आश्चर्यान्वित हुए और उन्होंने अपनी अपनी चिट्ठी भी निकालकर सरदार मुहम्मद अकबर खांके सामने रख दी। इन चिट्ठियोंको देखकर अकबर खांने कहा, कि आज मैं मेकनाटेन साहबसे मुलाकात करूंगा। तुम लोग मुलाकातके खेमेके पास मौजूद रहना। दूसरे दिन प्रातःकाल अमीरने मेकनाटेन साहबको जवाब दिया, कि अमुक पुलके बीचमें मैं खेमा खड़ा कराता हूं। आप वहां आइये। वहीं मेरी आपकी मुलाकात होगी। अमीरने पुलके बीचमें खेमा खड़ा कराया और उसमें बैठकर मेकनाटन साहबकी प्रतीक्षा करने लगा। उधर मेकनाटन साहबने एलफिंष्टन साहबको कहा, कि आप थोड़ीसी फौज लेकर खेमेके समीप छिप रहिये। जब मैं इशारा करूं, तो खेमेपर टूट पड़ियेगा और अकबर खांको कैद कर लीजियेगा। यदि मैं मारा जाऊं, तो आप सैन्यके प्रधान सेनापतिका पद ग्रहण कीजियेगा। इसके उपरान्त मेकनाटन,—ट्रवर, मेकनजी और लारेन्स इन तीन अङ्गरेजों और कुछ सवारोंके साथ खेमेकी ओर चला। अकबर खांने खेमेसे बाहर निकलकर मेकनाटनका स्वागत किया। मेकनाटनका हाथ अपने हाथमें लेकर खेमेमें वापस आया। दोनों बराबर बराबर बैठे। बात चीत आरम्भ होनेके उपरान्त अकबर खांने कहा, कि आप अफगानोंसे बहुत दुःखी जान पड़ते हैं। इसीलिये आप उन्हें धोखेमें डालकर आपसमें लड़ा देना चाहते हैं। आपने

कुछ अफ़गान सरदारोंको मेरे विरुद्ध और मुझे उनके खिलाफ़ चिट्ठियां लिखीं। मैंने आपकी बातपर विश्वास करके मोरचेपरसे अपनी फ़ौज हटा ली। आपने उसके बदलेमें मेरे साथ चालाकी खेली। मेकनाटन साहब अकबर खांकी बात सुनकर लज्जित हुआ। उसके मुंहसे बात न निकली। इसपर अकबर खांने डपटकर कहा, कि आप मेरी बातका जवाब दीजिये। मेकनाटन साहबसे जवाब तो बन न पड़ा, अकबर खांको समझाने लगा। कहा, कि आप नासमझीकी बातें न करें। मैंने जो कुछ कहा है, उसपर दृढ़ हूं। मेरी हार्दिक इच्छा यही है, कि मैं यहांसे भारतवर्ष चला जाऊं। आशा है, कि आप भी अपना वादा पूरा करेंगे।

"अकबर खां और मेकनाटनमें ऐसी ही बातें हो रही थीं, कि एक अफ़गान अकबर खांके पास दौड़ता हुआ आया। पश्तो भाषामें कहा, कि एलफिंस्टन सैन्य लेकर आ रहा है और पुलके समीप पहुंचना चाहता है। यह सुनकर अकबर खां खड़ा हो गया। मेकनाटेन भी खड़ा हो गया और खेमेसे बाहर निकलने लगा। इसपर अकबर खांने मेकनाटेनका हाथ पकड़ लिया और कहा, कि मैं आपको नहीं छोड़ूंगा। आप मेरे कैदी हैं। मैं आपको मार डालता, किन्तु बड़ा समझकर छोड़ देता हूं। इसपर मेकनाटेनने जेबसे तमञ्चा निकालकर अकबर खांको मारा। निशाना खाली गया। इसपर ट्रेवर साहब अकबर खांकी ओर बढ़ा, किन्तु अकबर खांने डांटकर कहा, कि तुम अपनी जगहपर रहो। अकबर खां मारकाट करना नहीं चाहता

था। उसकी आन्तरिक कामना थी, कि मेकनाटनको अभी कैद रखूंगा और फिर इस नियमपर छोड़ दूंगा, कि वह छूटते ही अफगानस्थानसे चला जावे। किन्तु मेकनाटेनने बुद्धिसे काम नहीं लिया। उसने अकबर खांके शिरपर एक घूंसा मारा। इससे अकबर खां बहुत क्रुद्ध हुआ। उसने भी मेकनाटेन साहबके शिरपर एक घूंसा मारा। इसपर मेकनाटेन साहब अकबर खांको गालियां देने लगा। अकबर खां गालियां बरदाश्त न कर सका। उसने मेकनाटेनको पटककर और उसकी छातीपर चढ़कर उसकी छाती चीर डाली। यह देखकर ट्रेवर साहबने तलवार खींचकर अकबर खांपर आक्रमण किया। अकबर खां, तो बच गया, किन्तु उसका एक सरदार मारा गया। अकबर खां मेकेनजी और लारेन्सको पकड़कर अपने साथ ले गया। एलफिंस्टनको जब यह समाचार मिला, तो वह अपनी थोड़ीसी फौजके साथ वापस चला गया।"

इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिकामें यही बात इस तरह लिखी हुई है,—"सन १८४० ई० की २५ वीं दिसम्बरको अमीर दोस्त मुहम्मद खांके लड़के अकबर खां और सर डबल्यू मेकनाटनमें एक कानफरेन्स हुई। इस अवसरपर अकबर खांने अपने हाथसे मेकनाटेन साहबकी हत्या की।"

इस घटनाके उपरान्त उद्दण्ड काबुलियोंका जोश बहुत बढ़ गया। सेनापति एलफिंस्टन अपनी फौज लिये हुए छावनीमें पड़े थे। छावनीकी चारो ओर बागी अफगानोंने मोरचे बांध लिये थे। अङ्गरेजी फौजको रसद नहीं मिलती थी।

वह विपदमें पड़े पड़े बहुत घबराई। अन्तमें एलफिंष्टन साहबने बागियोंके सरदार अकबर खांसे सन्धि की। सन्धिपत्रका सार मर्म यह था, कि एलफिंष्टन साहब अपनी फौजके साथ काबुलसे भारतवर्षकी ओर चले जावें और अकबर खां उन्हें राहमें बाधा न दे। सन् १८४२ ई० की ६ठीं जनवरीको अङ्गरेजी फौज पड़ावसे बाहर निकली। फौजमें कोई चार हजार पांच सौ सिपाही और कोई १२ हजार नौकर चाकर थे। इन सिपाहियोंमें ४४ नम्बर रेजिमेण्टके ६ सौ ६० गोरे थे। फौजमें कितनी ही गोरी बीबियां और उनके बच्चे थे। अङ्गरेजी फौजके पड़ावसे बाहर निकलते ही बागी अफगानोंने मारकाट आरम्भ की। आगे पीछे सब ओरसे अङ्गरेजी फौजपर आक्रमण किया जाता था। अङ्गरेजी फौजकी तोपें एक एक करके छिन गईं और फौजको एक एक कदमपर बागियोंसे भिड़ना पड़ता था। उस समय बलाकी बरफ पड़ रही थी। पहाड़, मैदान, दर्रे बरफसे सुफेद हो गये थे। इसलिये सेनाको शीतसे बड़ा ही कष्ट मिला। रसदकी कमीसे सिपाही भूखों मरने लगे। अगणित सिपाही शीत और भूखसे ऐसे व्याकुल हो गये थे, कि बिना हाथ पैर हिलाये मारे गये। ४४ नम्बर अङ्गरेजी फौजके कुल सिपाही मारे गये। जगदलक दर्रा काबुलसे कोई पैंतीस मीलके फासलेपर है। अङ्गरेजी फौज जगदलक दर्रेतक पहुंचते पहुंचते नष्ट भ्रष्ट हो गई। फौजके सोलह हजार पांच सौ मनुष्योंमें सिर्फ तीन सौ आदमी जगदलक पहुंचे। बाकी सब राहमें मारे

गये। फौजके प्रधान सेनापति एलफिंस्टन साहबने अकबर खांके हाथ आत्मसमर्पण किया। आठ अङ्गरेज रमणियां भी अकबर खांकी कैदमें आईं। अङ्गरेज रमणियोंमें बीबी सेल और बीबी मेकनाटेन भी थीं। इतनी बड़ी फौजमें, यानी सोलह हजार पांच सौ मनुष्योंमें सिर्फ डाक्टर ब्राइडन अपने तेज घोड़ेकी बदौलत मारे वा पकड़े जानेसे बचे और जलालाबाद पहुंचे। कन्वार केम्पेनमें लिखा है,—"सन् १८४२ ई०के जनवरी महीनेकी १३ वीं तारीख थी। जलालाबादके किलेमें सर राबर्ट सेलके अधीन एक ब्रिगेड पड़ा था। ब्रिगेडके सिपाहियोंने देखा, कि एक सवार घोड़ेकी पीठपर झुका हुआ, घोड़ा भगाता किलेमें घुस आया। यह सवार डाक्टर ब्राइडन थे। काबुलमें कई महीनेतक पड़ी रहनेवाली फौजसे अकेले यही बचे थे। डाक्टर ब्राइडनको कितने ही जखम लगे थे। तलवारके वारसे उनका हाथ कटकर गिर चुका था।" यह डाक्टर भी बहुत दिनोंतक न जिये। सिर्फ चार सालके उपरान्त मर गये। अङ्गरेजी फौजके काबुल परित्याग करनेके उपरान्त ही शाह शुजाके जीवनका अन्त हुआ। वह एक दिन काबुलके बालाहिसार किलेसे बाहर निकला। अकबर खांके कुछ सिपाही उसकी ताकमें लगे थे। शाह शुजाको सामने पाते ही सिपाहियोंने गोलियां चलाईं। शाह शुजा कई गोलियां खाकर ठण्ढा हो गया।

इसके उपरान्त अङ्गरेजी फौजने अफगानोंसे बदला लेनेके लिये फिर अफगानस्थानपर चढ़ाई की। सन् १८४२ ई०की १६वीं अपरैलको सेनापति पोलाकने जलालाबादका उद्धार

किया और उसी सन्‌की १५ वीं सितम्बरको काबुलपर कब्जा कर लिया। उधर सेनापति नाट गजनीको ध्वंस करके १७वीं सितम्बरको काबुलमें सेनापति पोलाकसे मिल गये। बामियानमें अङ्गरेजी फ़ौजने अकबर खांसे अपने कैद सिपाही, स्त्री, बच्चे आदि छुड़ाये और अकबर खांको भगाकर काबुलको पड़ोससे दूर कर दिया। अङ्गरेजी फौजने काबुलका बड़ा बाजार गोलोंसे उड़ा दिया और सन १८४४ ई०के दिसम्बर महीनेमें अफगानस्थानसे भारत वर्षकी ओर प्रत्यावर्त्तन किया।

अङ्गरेजी फौज अफगानोंको सिर्फ दण्ड देने और अपने कैद सिपाहियोंको छुड़ाने अफगानस्थान गई थी। यह दोनों काम करके वह लौट आई। अफगानस्थानपर कब्जा करना नहीं चाहती थी। कारण, उसको मालूम हो गया था, कि इस देशपर अधिकार करना उतना आसान काम नहीं है। राबर्ट साहब अपनी पुस्तक 'फार्टीवन इयर्स इन इण्डिया'में लिखते हैं,—"इस विषयके दुःखमय परिणामने ब्रटिश-सरकारको सिखा दिया, कि हमारी सीमा सतलजतक जो बढ़ गई, वह यथेष्ट थी। अफगानस्थानपर किसी तरहका प्रकृत प्रभाव डालनेका वा अफगानस्थानके मामलेमें दखल देनेका समय अभी नहीं आया था।" पर-पत्रमें लिखा है,—"और अब, अनुभवने ब्रटिश-सरकारको सिखा दिया, कि उसकी हालकी नीति बहुत खराब थी। इसलिये उसने अफगानस्थान और उसके नैतिक सम्बन्धमें हस्तक्षेप करनेसे हाथ धो लिया।"

पाठकोंको स्मरण होगा, कि अमीर दोस्त मुहम्मद कलकत्तेसे लोधियाने जा रहा था। ऐसे ही समय अङ्गरेजोंको काबुलमें बगावतकी आग भड़कनेकी खबर मिली। अमीर दोस्त मुहम्मद दिल्ली भी नहीं पहुंचने पाया था, कि गिरफ्तार कर लिया गया। वह शाह शुजाकी मृत्यु तक कैदमें रखा गया। इसके उपरान्त अङ्गरेजोंने उसे छोड़कर काबुल जानेकी आज्ञा दी। दोस्त मुहम्मद दुबारा काबुल आया और फिर अफगानस्थानका अमीर बना। अफगानोंने बड़े आदर सम्मानसे अमीरको काबुलके सिंहासनपर बैठाया और उसकी सेवा करने लगे। अमीरने थोड़े ही दिनोंके शासनमें अफगानस्थानमें शान्ति स्थापित कर दी। अपने पुत्र अकबर खांको अपना मन्त्री बनाया। किन्तु अकबर खां बहुत दिनोंतक जीवित न रहा। सन् १८४८ ई०में पञ्चत्वको प्राप्त हुआ। सन् १८४८ ई०में पञ्जाबमें सिखोंका बलवा हुआ। दोस्त मुहम्मद खां अपना प्राचीन देश पेशावर लेनेकी अभिलाषासे सीमा पार करके अटक आया। सिख सेनापति शेरसिंह उस समय अङ्गरेजोंसे युद्ध कर रहा था। अमीर दोस्त मुहम्मद खांने सिखोंके कहने सुननेपर अपना अफगान रिसाला सिखोंकी सहायताको भेजा। सन १८४९ ई०की २१ वीं फरवरीको पञ्जाब—गुजरातकी लड़ाईमें इस अफगान रिसालेने सिख सैन्यके साथ अङ्गरेजी फौजसे मुकाबला किया था। अन्तमें सिख परास्त हुए। सिखोंके साथ साथ अफगानी रिसाला भी परास्त हुआ। सर वाल्टर रेले गिलबर्टके सेनापतित्वमें अङ्गरेजी फौजने अफगान फौजका पीछा किया। दोस्त

मुहम्मद खां सैन्यसहित भागकर अफगानस्थान सीमामें दाखिल हो गया। इसके उपरान्त, अमीर दोस्त मुहम्मदने समस्त अफगान सरदारोंको विजय करके अपने अधीन करना आरम्भ किया। इस कामसे छुटकारा पाकर सन् १८५० ई० में उसने बलखपर कब्जा किया और इससे चार साल बाद कन्धारपर। अब अमीर दोस्त मुहम्मद और अङ्गरेज सरकारमें मेल मिलाप बढ़ने लगा। इसका फल यह हुआ, कि सन १८५५ ई०के जनवरी महीनेमें पेशावरमें अङ्गरेज-अफगान सन्धि हुई। सेरङ्गे अफगानमें यह सन्धि इस प्रकार लिखी है,—

"(१) आनरेबल ईस्ट इण्डिया कम्पनी और काबुलपति दोस्त मुहम्मदके बीचमें सदैव मैत्री रहेगी।

(२) आनरेबल ईस्ट इण्डिया कम्पनी वादा करती है, कि वह अफगानस्थानके किसी भागपर किसी तरहका हस्तक्षेप न करेगी।

(३) अमीर दोस्त मुहम्मद खां प्रण करते हैं, कि वह कम्पनीके देशपर हस्तक्षेप न करेंगे और आनरेबल कम्पनीके मित्रोंको मित्र और शत्रुओंको शत्रु समझेंगे।"

इस सन्धिके सालभर बाद ईरानने अफगानस्थानके हिरातपर आक्रमण किया। आक्रमणका हाल लिखनेसे पहले हम हिरात नगरका थोड़ासा हाल लिखते हैं। हिरात नगर हिरात प्रदेशकी राजधानी और भारतवर्षकी कुञ्जी कहा जाता है। यह १३ मील लम्बी और १५ मील चौड़ी जल और हरियालीसे परिपूर्ण घाटीमें बसा हुआ है। नगर प्रायः

चौखूटा है। नगरकी चारो ओर चालीससे पचास फुटतक ऊंचा मट्टीका टीला है। यह टीला कोई बीस फुट ऊंची ईंटोंसे बनी हुई शहरपानहसे घिरा हुआ है। शहरपनाहके बाहर तरल खन्दक है। खन्दक प्रत्येक ओर कोई एक मील लम्बी है। इस हिसाबसे नगर एक वर्ग मीलके भीतर है। नगरमें कोई पचास हजार मनुष्य वसते हैं। नगर-वासियोंमें अधिकांश लोग शीया सम्प्रदायके मुसलमान हैं। बाजारमें नाना जाति और नाना देशके लोग दिखाई देते हैं। कहीं अफगान हैं, कहीं हिन्दू,—कहीं तुर्क हैं, कहीं ईरानी और कहीं तातार हैं, कहीं यहूदी। शहरके आदमी हथियारोंसे लदे रहते हैं। काबुल, कन्धार, भारतवर्ष, फारस और तुरकस्थानके बीचमें सौदागरीका केन्द्र होनेकी वजहसे हिरात सौदागरों होसे बस गया है। हिरा-तकी दस्तकारियोंमें कालीन प्रधान है। यहांका कालीन सम्पूर्ण एशियामें प्रसिद्ध है और बड़े दामोंपर बिकता है। यहां नाना प्रकारके स्वादिष्ट फल उत्पन्न होते हैं। नित्यके खाद्य पदार्थ,—जैसे रोटी, तरकारी, मांस प्रभृति सस्ते दामों बिकते हैं। यहांका जल वायु स्वास्थ्यप्रद है। सिर्फ दो महीने गर्मी बढ़ जाती है। बाकी दश महीने वसन्तकी-सी ऋतु रहती है। इसका प्राचीन इतिहास बहुत लम्बा चौड़ा है। बहुत पीछेकी बातें न लिखकर अपनी बात अच्छी तरह समझा देनेके लिये हम ईरानके हिरात ले लेनेसे चार साल पहलेसे हिरातका इतिहास लिखते हैं। सन् १८५२ ई०में हिरातके हाकिम मुहम्मद खांकी मृत्यु हुई। उसका

पुत्र सय्यद मुहम्मद खां हिरातके सिंहासनपर बैठा। यह तीन मासतक शासन करने पाया था, कि सद्दोजई जातिके मुहम्मद यूसुफ खांने इसे सिंहासनसे उतारा और वह स्वयं हिरातका शासक बना। किन्तु कुछ महीनोंके बाद यों दुर्रानी जातिका ईसा खां मुहम्मद यूसुफको भगाकर उसकी जगह बैठा। इधर दुर्रानी सरदार रहमदिल खां हिरात-पर चढ़ाई करनेकी तय्यारी कर रहा था। इसकी तय्यारियोंसे डरकर हिरातने ईरानियोंसे सहायता मांगी। ईरानने समय देखकर अपना लशकर भेजकर सन् १८५६ ई०में हिरातपर कबजा कर लिया।

ईरानने अङ्गरेजोंसे सन्धि करनेमें एक प्रण यह भी किया था, कि मैं हिरातपर अधिकार न करूंगा। जब ईरानने अपना प्रण भङ्ग किया, तो अङ्गरेज महाराज क्रुद्ध हुए। उन्होंने पहले अमीर दोस्त मुहम्मद खांकी मैत्री खूब पक्की की। सन् १८५७ ई०में अमीरको पेशावर बुलाया। वहां अङ्गरेज कमिश्नर सर जान लारेंस साहबने अमीरसे मुलाकात की। अमीरको आठ विलायती घोड़े, अस्सी हजार रुपयेकी खिलअत और ८ लाख रुपये नकद दिये। अङ्गरेजोंने अङ्गरेज-ईरान युद्धकी समाप्तितक अफगानस्थानको फौजी तय्या-रीके लिये १२ लाख रुपये साल देना मञ्जूर किया। इसके उपरान्त अङ्गरेजोंने ईरानपर दो ओरसे आक्रमण किया। एक तो हिरातकी ओरसे और दूसरा फारसकी खाड़ीकी तरफसे। फारसकी खाड़ीमें बुशहरपर अङ्गरेजोंने कबजा कर लिया। इससे ईरान भीत हुआ और उसने अङ्गरेजोंसे

सन्धि कर के सन १८५७ ई०के जुलाई महीनेमें हिरात खाली कर दिया। ईरानके हिरात खाली करते ही सुलतान अहमद खां नामे एक वारकजई सरदारने हिरातपर कबजा कर लिया! अन्तमें सन १८६३ ई०में अमीर दोस्त मुहम्मदने हिरातपर आक्रमण किया और उसी सनके मई महीनेमें नगरपर अधिकार कर लिया। उसी समयसे हिरात अफगानस्थानके अधीन हुआ और आजतक है।

सन् १८५७ ई०की १३ वीं मार्चको अमीर अफगानस्थानके जमानेमें मेजर एच० बी० लमुसडन, साहबकी प्रधानतामें अङ्गरेजोंकी एक मिशन कन्धार गई थी। उसी समय भारतवर्षमें गदर फूट पड़ा था। अङ्गरेजोंका भारतशासन डांवाडोल हो गया था। कितने ही अफगान सरदारोंने और कितने ही पञ्जाबवासियोंने अमीर दोस्त मुहम्मद खांको अफगानस्थानसे भारतवर्ष आकर बागियोंको सहायता पहुंचा देनेके लिये उत्तेजित किया था। किन्तु अमीर कुछ तो दूरदर्शितावश और कुछ अङ्गरेजोंकी कन्धार-मिशनके समझाने बुझानेसे गदरकी भड़कती हुई आगको और भड़कानेपर राजी नहीं हुए। भारत सरकार अमीरके इस कामसे बहुत सन्तुष्ट हुई थी।

सन १८६३ ई०की १६ वीं जूनको हिरातमें नामी गरामी अमीर दोस्त महम्मद खांका परलोकवास हुआ।

अमीर दोस्त मुहम्मद खांकी मृत्युके उपरान्त अमीरपुत्र शेरअली खां अफगानस्थानका अमीर बना। यह जिस समय सिंहासनपर बैठा, उस समय रूस भारतवर्षके

बहुत समीप पहुँच चुका था और भारतकी कुञ्जी हिरात-पर कबजा कर लेनेका भय दिखा रहा था। द्वितीय अफ़गान-युद्धके उपरान्त ही अङ्गरेज-सिख युद्ध आरम्भ हुआ। अङ्ग-रेजोंने सिखोंको परास्त करके सिन्ध नदके किनारेतक अपना राज्य फैला दिया। उधर रूसको विशाल रेगस्थान पार करने-पर उपजाऊ भूमि मिली। वह जल्द जल्द भारतवर्षकी ओर बढ़ने लगा। सन् १८६४ ई०में रूसने चमकन्दपर कबजा कर लिया। रूस-राजकुमार गरचकाफने कहा था, कि रूस चम-कन्दसे आगे अधिकार-विस्तार करना नहीं चाहता। किन्तु राजकुमारकी बात बात ही तक रही। दूसरे सालकी २६वीं जनको रूसने चमकन्दसे आगे बढ़कर ताशकन्दपर कबजा कर लिया। सन १८६६ ई०में रूसने खोजन्तपर कबजा किया। ३०वीं अकटोबरको विशारवपर कबजा किया और सन १८६७ ई०को वसन्तऋतुमें गुराता पर्व्वतके यानीकरगानपर। सिर्फ बुखारा रूसके हाथ पड़नेसे बच गया। पहले अमीर बुखा-राने भारतवर्ष और अफ़गानस्थानसे अपनी रक्षाके लिये प्रार्थना की, किन्तु इसका कोई फल न हुआ। अन्तमें रूससे सन्धि कर ली और प्रकारान्तसे रूसका अधिकार बुखारेपर भी हो गया।

अबतक इङ्गलण्डने रूसकी ओर विशेष ध्यान नहीं दिया था। एक तो इस कारणसे, कि इङ्गलण्डने मध्य एशियाके मामलोंमें दखल न देनेकी नीति अवलम्बन की थी। दूसरे इसलिये, कि बृटिश-सरकार यूरोपके राजनीतिक बखेड़ोंमें उलझी हुई थी। अन्तमें जब रूसने समरकन्दपर अधिकार किया, तो इङ्गल-

खडको चैतन्य लाभ हुआ। वह रूसको इतना बढ़ा हुआ देखकर चिन्तित हुआ। सन् १८७० ई०में इङ्गलण्डके वैदेशिक सिक्रतर लार्ड क्लारेनडन और रूसके राजदूत ब्रूनोमें कानफरन्स हुई। कानफरन्सका विषय यह था, कि मध्य एशियामें एक ऐसी रेखा निर्दिष्ट कर देना चाहिये, जिसका उल्लङ्घन ब्रटिश-सरकार वा रूस-सरकार न करे। तीन सालतक यह झगड़ा चला, कि अफगानस्थान स्वतन्त्र समझा जावे वा अङ्गरेज महाराजके प्रभावमें। रूस कहता था, कि वह स्वतन्त्र समझा जावे। अङ्गरेज कहते थे, कि उसपर हमारा प्रभाव है। अन्तमें सन् १८७३ ई०की ३१वीं जनवरीको ऐसी रेखा तय्यार की गई, जिसके उल्लङ्घन न करनेका प्रण रूस और अङ्गरेज दोनोंने किया। किन्तु रूस अपने प्रणकी उतनी परवा नहीं किया करता। यह प्रण हो जानेके छः ही महीनोंके बाद उसने खीवमें फौज भेजी। जब अङ्गरेजोंने रूससे इस अकर्म्मण्यका कारण पूछा, तो रूस-सरकारकी ओरसे काउण्ट स्कावलाफने जवाब दिया, कि खीवमें डाकुओंका बहुत जोर है। डाकुओंने पचास रूसी पकड़ लिये हैं। डाकुओंको दण्ड देने और रूसियोंको कैदसे छुड़ानेके लिये रूसी फौजका टुकड़ा खीव भेजा गया है। यह सब कुछ कहनेपर भी रूसने खीवपर अधिकार कर लिया और आजतक कबजा किये हुआ है।

इस प्रकार रूस बीस सालमें कोई ६ सौ मील भारतवर्षकी ओर बढ़ आया और अब रूस तथा अङ्गरेजोंकी सीमामें चार सौ मीलका अन्तर रह गया। रूसकी दक्षिणीय सीमा अफगानस्थानकी उत्तरीय सीमासे सट गई।

अमीर शेरअली खांके भाई अमीरके विरुद्ध थे। इसलिये अमीरको अफगानस्थानके सिंहासनपर बैठनेके उपरान्त हीसे अपने भाइयोंके साथ युद्धमें प्रवृत्त होना पड़ा। अमीर निर्बल था। उसने अङ्गरेजोंसे सहायता मांगी। किन्तु अङ्गरेजोंको उस-पर विश्वास नहीं था। उन्होंने अमीरको लिखा, कि हम तुम्हें नहीं—रन तुम्हारे भाई अफजल खांको काबुलका अमीर माननेके लिये तय्यार हैं। इसपर अमीर शेरअलीने अपने भुजबलपर भरोसा करके अपने भाइयोंसे युद्ध करना आरम्भ किया। सन् १८६७ ई०के अक्टोबर महीनेमें अमीर शेरअली खांने सवह हजार फौज तय्यार की। बलखके हाकिम फैज-मुहम्मद खांने भी उसको सैन्यसे सहायता पहुंचाई। सन् १८६८ ई०की १ली अपरेलको अमीर शेरअलीने कन्धारपर कब्जा कर लिया। इसके उपरान्त सन १८६९ ई०की २री जन-वरीको अपने भाई आजम खां और अपने भाई मुहम्मद अफ-जल खांके लड़के अब्दुररहमान खांको गजनीमें शिकस्त दी। यही अब्दुररहमान खां अन्तमें अफगानस्थानके अमीर हुए थे। अब्दुररहमान खांने अपनी इस पराजयका वृत्तान्त अपनी तुजुकमें इस प्रकार लिखा है,—

"जब गजनी पहुंचा, तो देखा, कि नजर खां दुर्रानीने पहले हीसे किला मजबूत कर रखा है। मैंने उसका घेरा किया, किन्तु वह बहुत सुदृढ़ था। मेरी खच्चर-बाटरीकी तोपोंसे फतह नहीं हो सकता था। इसलिये मुझे उचित न जान पड़ा, कि मैं अपने पासका थोड़ासा गोला बारूदको इसीपर नष्ट कर दूं। उधर घिरे हुए लोगोंकी हिम्मत

इस लिये ज्यादे हो रही थी, कि उनको चालीस हजार सिपाहियोंकी फौजके साथ अमीर शेर अलीके आनेका समाचार मिल चुका था। मैंने ग्यारह दिनोंतक कुछ न किया। इस अवसरमें अमीर शेर अली खांकी कोई चालीस हजार सिपाहियोंकी फौज गजनीसे एक मञ्जिलके फासलेपर पहुंच गई। मैंने जासूसोंसे समाचार पाया, कि सचमुच अमीर शेर अलीखांके पास चालीस हजार फौज थी और वह सुशिक्षित थी। यह सुनकर मैंने मीर रफीक खांसे सलाह की। वह स्थिर हुआ, कि इतनी बड़ी फौजसे खुले मैदान युद्ध करना उचित नहीं है। इसलिये हम एक तङ्ग दर्रेमें चले गये। जिस समय हम सईदाबाद वापस जा रहे थे, अमीर शेर अली खांने दश हजार हिरातो और कन्धारी सवारोंको हमारे पीछेसे आक्रमण करनेकी आज्ञा दी। यह भी आज्ञा दी, कि वह काबुलवाली सड़कपर कबजा कर लें। जिसमें दूसरे दिन जब वह विजयी हों, तो हमारी भागनेकी राह रोक दी जावे। वैरीकी सैन्यके इस भागसे मेरे छः सौ सिपाहियोंका सामना हो गया। इन्हें मैंने अपनी फौजके आगे भेजा था। मेरे सवार बड़ी वीरतासे लड़े और धीरे धीरे पीछे हटने लगे। उन्होंने अपनी विपत्तिका समाचार मुझे दिया। मैंने समाचार पाते ही पैदलोंकी दो पलटनें उनकी सहायताको भेजीं। वह एकाएक युद्धस्थलमें पहुंची। अमीर शेर अली खांके सब सवार एक ही जगह जमा थे। थोड़ी ही गोलियोंसे उन्हें बहुत नुकसान पहुंचा। वह भाग खड़े हुए। मेरे सिपाही वैरियोंका माल लेकर वापस आके

और हम सईदाबादकी ओर फिर रवाने हुए। जब अमीर शेर अली खांने इस शिकस्तका समाचार पाया, तो और उतने ही सिपाही अपनी सैन्यकी सहायताको भेजे। उन्होंने आकर मैदान खाली पाया और मेरी सेन्यको वापस जाते देखा। इसलिये वह स्वयं वापस चले गये। उन्होंने अमीरको यह सुसमाचार सुनाया, कि उनकी फौजका आधिक्य देखकर मैंने हिम्मत हार दी और लड़ाईसे मुंह मोड़कर मैं भागा जाता था।" अब भारत सरकारने कुछ तो इस ध्यानसे, कि अमीरने शक्ति सञ्चित की और कुछ अफगानस्थानमें रूसका प्रभाव-प्रस्तार रोकनेके ध्यानसे, शेर अली खांसे मेल जोल बढ़ानेका उपक्रम किया। भारतके बड़े लाट अर्ल मेओने शेरअलीको अमीर स्वीकार किया। शेरअली खांके पुत्र याकूब खांको लोगोंने समझा दिया, कि अमीर तुम्हारी जगह तुम्हारे भाई, अब्दुल्लह खांको युवराज बनावेंगे और अपने बाद उन्हींको काबुलका राजसिंहासन देंगे। इस बातसे याकूब खां बिगड़ा। उसने सन् १८७० ई०की ११वीं सितम्बरको बगावतका झगड़ा खड़ा किया। याकूब खांने सन् १८७१ ई०में गोरियान किलेपर अधिकार कर लिया और उसी सन्के मई महीनेमें हिरातपर कब्जा कर लिया। बाप बेटेका यह झगड़ा अङ्गरेजों हीने बीचमें पड़कर मिटा दिया। बाप बेटेमें सुलह कराई और अमीर याकूब खांको हिरातका हाकिम स्वीकार किया।

इनसे प्रमाणित होता है, कि अमीर शेरअली भी अङ्गरेजोंका बहुत खयाल रखता था। किन्तु उस समयकी अङ्गरेजोंकी नीतिसे भारत-सरकार और अमीर शेरअलीकी

मैत्री बहुत दिनोंतक नहीं निबही। अमीर शेरअलीने भारत-सरकारसे दो प्रार्थनायें कीं। एक तो यह, कि मैं अपने प्रिय पुत्र अबदुल्लह खांको युवराज बनाना चाहता हूं। आप भी उसीको युवराज मानिये। दूसरी यह, कि जब रूस अफ़गानस्थानपर आक्रमण करे, तो आप मेरी सहायता कीजिये। भारत-सरकारने दोनो प्रार्थनायें अस्वीकार कर दीं। अङ्गरेजोंने अफ़गानस्थान ईरानकी सीस्तानवाली सरहद्दबन्दीका भी उचित फ़ैसला नहीं किया। भारत सरकारकी इन बातोंसे अमीर शेरअलीका हृदय टूट गया। वह अङ्गरेजोंका शत्रु बन गया। चालीस साल पहले उसके पिता दोस्त मुहम्मदने जिस तरह निराश होकर रूसकी शरण जाना स्थिर किया था,— उसी तरह हृदयभग्न और निराश होकर शेरअली भी रूसकी रक्षामें जानेपर तय्यार हुआ। अमीरका रूसकी शरण लेनेकी चेष्टा करना ही द्वितीय अफ़गान युद्धका कारण बना। राबर्टस साहब अपनी पुस्तक "फार्टी वन इयर्स इन इण्डिया"में कहते हैं,—"यह ध्यान देने योग्य बात है, कि दोनो अफ़गान-युद्धका कारण एक है,—यानी रूस अफ़सरोंका काबुल प्रवेश।"

इसमें कोई सन्देह नहीं, कि दोनो अफ़गान-युद्धका कारण रूस अफ़सरोंका काबुल प्रवेश वा काबुलपतिका रूससे मेल मिलाप करनेकी चेष्टा है। लार्ड राबर्टस लिखते हैं,—"१८७७ ई०में रूस-रूम युद्ध हुआ। एक सालसे ऊपर दोनो शक्तियां लड़ती रहीं। उसी समय इङ्गलण्डको भी इस युद्धमें शरीक होनेकी आशङ्का हुई। अङ्गरेजोंने पांच हजार देशी

सिपाहियोंकी फौज बम्बईसे मालटा भेज दी। रूसने मध्य एशियामें अग्रसर होनेकी चेष्टा करके अङ्गरेजोंकी इस तय्यारीका जवाब दिया। सन् १८७८ ई०के जून महीनेमें पेशावरके डिपटी कमिश्नर मेजर कवेगनरीने भारत-सरकारको समाचार दिया, कि ताशकन्दके रूसी गवरनर जनरलके बराबर अधिकार रखनेवाला एक रूसी अफसर काबुल आनेवाला है। जनरल काफमेनने अमीरको चिट्ठी लिखी है, कि अमीर उक्त अफसरको स्वयं रूस-सम्राट् जारका दूत समझें। कुछ ही दिनों बाद यह खबर भी मिली, कि रूसी फौज अमू नदीके करेकी ओर किलिफ घाटपर एकत्र हुई है। वहां वह छावनी बनाना चाहती है। इसके उपरान्त खबर मिली, कि अमीरने अफगान सरदारोंकी एक सभा करके यह प्रश्न उत्थापन किया था, कि अफगानस्थानको अङ्गरेजोंका साथ देना चाहिये, या रूसका। अवश्य ही इस सभाने रूस हीका साथ देनेका फैसला किया। कारण, रूस-सेनापति ष्टालीटाफकी अधीनतामें एक मिशनके काबुल प्रवेश करनेपर अफगानोंने उसका आदर सत्कार करना आरम्भ किया। काबुलसे पांच मीलके फासलेपर अमीरके सरदारोंने मिशनका स्वागत किया। मिशनके लोग जड़ी साजसे सजे हुए हाथियोंपर सवार कराये गये। एक फौज उनकी अगवानी करती हुई उन्हें काबुलदुर्ग बालाहिसारतक लाई। दूसरे दिन मिशनने अमीर शेरअली और अफगान रईसोंसे मुलाकात की।"

मेजरकी मिशन।

मिशन सम्बन्धी ऊपरकी कुल बातें तारद्वारा भारतके बड़े लाट बहादुरने भारत-सिकत्तरसे कहीं। साथ साथ अनुरोध किया, कि आप मुझे काबुलमें मिशन भेजनेकी आज्ञा दीजिये। भारत-सिकत्तरने मिशन भेजनेकी आज्ञा दे दी। बड़े लाटने भारत-सिकत्तरकी आज्ञा पाते ही अमीर शेर अलीको एक पत्र लिखा। "फार्टीवन इयर्स इन इण्डिया"में उस चिट्ठीकी नकल छपी है। उसका मर्म्मांश इस प्रकार है,—

"शिमला

"१४ वीं अगस्त, १८७८ ई०।

"काबुल और अफगानस्थानकी सीमाकी कुछ सच्ची खबरें मुझे मिली हैं। इन खबरोंसे मुझे इस बातकी जरूरत जान पड़ती है, कि मैं भारत और अफगानस्थानके लाभके लिये आपसे निःसङ्कोच होकर जरूरी विषयोंपर कुछ बातें करूं। इस कामके लिये मुझे आपके पास एक उच्चश्रेणीका दूत भेजना जरूरी जान पड़ता है और मैं सम्राजके प्रधान सेनापति हिज एकसिलेंसी चेम्बरलेन बहादुरको इस कामके लिये उपयुक्त समझता हूं। वह शीघ्र ही काबुल जावेंगे और आपसे बात चीत करेंगे। वर्त्तमान अवस्थापर स्वच्छन्दतापूर्ब्बक बातचीत हो जानेसे दोनो राज्योंकी भलाई होगी और दोनो राज्योंकी मैत्री चिरस्थायी रहेगी। प्रत्

पत्र मेरे ईमानदार और प्रतिष्ठित सरदार नव्वाव गुलाम हुसैन खां सी० एस० आई० की मार्फत आपके पास भेजा जाता है। वह आपसे दूत जानेके प्रयोजनके विषयमें सब बातें कहेंगे। आप कृपापूर्वक पेशावरसे काबुलतककी राहके सरदारोंको आज्ञा दीजिये, कि वह एक मित्र शक्तिके दूतको दूतके साथियों-सहित निर्विघ्न काबुल पहुंचनेमें सहायता दें।"

लार्ड राबर्टस लिखते हैं,—"इसके साथ साथ मेजर कवेग-नरीको यह समाचार काबुल भेजनेके लिये कहा गया, कि अङ्ग-रेजोंकी मिशन मित्रभावसे देशमें प्रवेश करती है। यदि उसको अफगानस्थानमें दाखिल होनेकी आज्ञा न दी गई वा रूस-मिशनकी तरह उसकी भी पथमें रक्षा न की गई, तो समझा जावेगा, कि अफगानस्थान खुलकर अङ्गरेजोंसे शत्रुता कर रहा है।

"१७वीं अगस्तको बड़े लाटकी चिट्ठी काबुल पहुंची। जिस दिन चिट्ठी पहुंची, उसी दिन अमीरके प्रिय पुत्र अब्दुल्लाह जानका देहान्त हुआ। इस दुर्घटनासे बड़े लाटकी चिट्ठीका जवाब देनेमें देर की गई,किन्तु रूसी मिशनसे बात चीत करनेमें किसी तरहकी आपत्ति दिखाई नहीं गई। रूस-दूत ष्टोली-टाफने अमीर शेरअलीसे पूछा,कि क्या आप अङ्गरेजोंकी मिशन काबुलमें बुलाना चाहते हैं? इसपर अमीरने रूस दूतकी राय ली। रूस-दूतने अमीर शेरअलीसे गौण भावसे समझाया, कि परस्पर शत्रुभाव रखनेवाली दो शक्तियोंके राजदूतोंका एक जगह जमा करना मुनासिब नहीं है। इसपर अमीरने अङ्गरेजोंकी मिशनको काबुल न बुलानेका फैसला कर लिया

इस फैसलेकी खबर बड़े लाटको नहीं दी गई। उधर २१वीं सितम्बरको अङ्गरेजोंकी मिशन पेशावरसे रवाना हुई और उसने खैबर दर्रेसे तीन मीलके फासलेपर जमरूद्में डेरा डाला।"

अमीरका ढङ्ग वैरियोंकासा था। इसलिये अङ्गरेजोंकी मिशनके प्रधान अफसर चेम्बरलेन साहबने खैबर दर्रेकी अफगान फौजके सेनापति फैजमुहम्मद खांको एक चिट्ठी लिखी। चिट्ठीकी जो नकल लार्डराबर्टसने अपनी पुस्तकमें प्रकाश की है; उसका मर्म्मांश इस प्रकार है,—

"पेशावर

"१५वीं सितम्बर, १८७८।

"मैं आपको सूचित करता हूं, कि भारतके बड़े लाटकी आज्ञासे एक अङ्गरेज-मिशन अपनी रक्षक फौजके साथ मित्र-भावसे खैबर दर्रेकी राहसे होती हुई काबुल जानेवाली हैं। नव्वाब गुलाम हुसेनकी मार्फत अमीरको इस मिशनकी खबर भेज दी गई है।

"मुझे खबर मिली है, कि काबुलसे कोई अफगान अफसर आपके पास अलीमसजिद आया था। आशा है, कि उसने आपको अमीरकी आज्ञासे सूचित किया होगा। मुझे यह भी खबर मिली है, कि खैबर घाटीके जिन सरदारोंको पेशावर बुलाकर हम लोग उनसे पथरक्षाके सम्बन्धमें बातचीत कर रहे थे, आपने उन लोगोंको पेशावरसे खैबर दर्रेमें वापस बुला लिया है। अब मैं आपसे पूछता हूं, कि अमीरके आज्ञानुसार आप ब्रिटिश मिशनको खैबर दर्रेसे काबुलतक पहुंचा देनेकी जिम्मे-

दारी करते हैं, वा नहीं? आप इस चिट्ठीका जवाब पत्रवाहकके साथ शीघ्र ही भेजिये। कारण, मैं यहां बहुत दिनोंतक पड़ा रहना नहीं चाहता। यह प्रसिद्ध बात है, कि खैबरकी जातियां काबुल सरकारसे रुपये पाती हैं और भारत सरकारसे भी सम्बन्ध रखती हैं। आपको मालूम रखना चाहिये, कि हम लोगोंने निर्द्द पथरचाके लिये खैबर घाटीकी जातियोंसे बातचीत आरम्भ की थी! ऐसी बातचीत अपने एजण्ट नव्वाब गुलामहुसेन खांके काबुल जानेके समय भी की थी। उन्हें समझा दिया गया था, कि इस तरहकी बातचीतसे अमीर और तुम लोगोंके सम्बन्धमें किसी तरहका आघात नहीं लगेगा। कारण, यह मिशन अमीर और अफगानस्थानवासियोंसे मित्रभाव रखती है।

"मुझे आशा है, कि अमीरको आज्ञा पानेकी वजहसे आपका जवाब सन्तोषप्रद होगा और आप मिशनके काबुलतक निर्विघ्न पहुंचा देनेकी जिम्मेदारी लेंगे। मैं आगामी १८वीं तारीखतक आपके प्रत्युत्तरकी प्रतीक्षा करूंगा। इससे ज्यादा देरतक इन्तजार न कर सकूंगा। इतनेहीसे आप मेरी शीघ्रता समझ सकते हैं।

"किन्तु इसीके साथ मैं आपको स्वच्छ हृदय और मित्रभावसे यह भी सूचित कर देना उचित समझता हूं, कि यदि मुझे मेरे इच्छानुसार जवाब न मिला, यदि जवाब आनेमें देर हुई, तो मुझे अनन्योपाय होकर जिस तरह मुझसे बन पड़ेगा, मैं अपनी गवरमेण्टकी आज्ञा प्रतिपालन करनेकी चेष्टा करूंगा।"

फैजमहम्मद खांने केम्बरलेन साहबको जवाब दिया, किन्तु वह जवाब केम्बरलेन साहबके इच्छानुसार नहीं

था। फैजमुहम्मदने लिखा, कि अङ्गरेज मिशनको वापस लौट जाना चाहिये। इसके उपरान्त उसने अफगान फौजको खैबर दररेके पहाड़ोंपर चढ़ा दिया। चेम्बरलेन साहब समझ गये, कि उनकी मिशन राहमें रोकी जायगी। इसलिये मेजर कवेगनरीको खैबर दररेकी ओरसे दश मीलके फासलेके अलीमसजिद किलेकी ओर किलेके हाकिमसे पथ-रक्षाका परवाना लानेके लिये भेजा। किलेसे एक मीलके फासलेपर कवेगनरीको कुछ अफरीदी मिले। उन लोगोंने कहा, कि अफगान सिपाही राहकी गिर्द पड़े हैं। तुम यदि आगे बढ़ोगे, तो तुमपर गोलियां बरसेंगी। यह सुनकर कवेनगरी साहब वहीं ठहर गया और सेनापति फैजमुहम्मदका एक आदमी कवेगनरीके पास आया और कहा, कि आप यहीं ठहरिये,—फैजमुहम्मद खां यहां आकर आपसे बात चीत करेंगे! अलीमसजिदके पासवाले जलस्रोत किनारे एक पनचक्कीके समीप फैजमुहम्मद और कवेंगनरीमें मुला-कात हुई। यह बहुत जरूरी मुलाकात थी। कारण, इसीपर युद्ध वा शान्तिका फैसला था। फैजमुहम्मद बहुत मिलनसारीसे पेश आया। पर उसने साफ साफ कह दिया, कि मैं मिशन आगे बढ़ने न दूंगा। उसने कहा, कि मैं खैबर दररेका सन्तरी हूं। मुझे काबुलसे आज्ञा मिली है, कि मैं आपको रोकूं। जबतक मुझमें शक्ति है, मैं अपनी कुल फौजसे आपको रोकूंगा। फैज-मुहम्मदने यह भी कह दिया, कि सिर्फ आपकी मैत्रीके खयालसे मैं आपकी जान बचाता हूं। अमीरके आज्ञानुसार यदि मैं काम करूं, तो आपको इसी समय मार डालूं।

फैजमुहम्मदके साथी सिपाही उतने मिलनसार नहीं थे। उनका क्रोधमय चेहरा देखकर कवेगनरीने शीघ्र ही मुलाकात खतम कर दी। वह अफगान सेनापतिसे विदा हुआ और चमरूद लौट आया। मिशन तोड़ दी गई। अङ्गरेजोंने अपने काबुल एलचीको भारत वापस आनेकी आज्ञा दी। कवेगनरीको आज्ञा दी गई, कि तुम पेशावरमें रहो और अफरीदियोंको अपनी तरफ मिलानेकी चेष्टा करो। भारत-सरकारने मिशनके अकृतकार्य्य होनेका समाचार भारत-सिक्रेटरीके पास विलायत भेजा। भारत-सिक्रेटरीने काबुलके साथ युद्ध करनेकी आज्ञा दी। अङ्गरेजी फौज दो ओरसे चढ़ाई करनेके लिये तय्यार हुई। एक सिन्ध सक्करके मार्गसे कन्धारतक जानेके लिये, दूसरी कोहाटसे कुर्रम घाटीतक जानेके लिये। कुर्रम घाटीवाली फौजके सेनापति लार्ड राबर्टस बने। कन्धारकी ओर जानेवाली फौजमें २ सौ ६५ अफसर, १२ हजार ५ सौ ६६ सिपाही और ७८ तोपें थीं। लार्ड राबर्टसके सेनापतित्वमें कुर्रमकी ओर जानेवाली फौजमें १ सौ १६ अफसर, ६ हजार ५ सौ ४६ सिपाही और १८ तोपें थीं। इन फौजोंके अतिरिक्त ३२५ अफसर, १५ हजार ८ सौ ५४ सिपाही और ४८ तोपें पेशावर घाटीमें तय्यार रखी गईं। अङ्गरेजी फौजोंकी तय्यारीके समय अमीर शेरअली और भारत-सरकारमें कुछ और लिखा पढ़ी हुई, किन्तु इसका फल सन्तोषदायक नहीं हुआ। अन्तमें अङ्गरेजी फौजोंको अफगानस्थानपर चढ़ाई कर देनेकी आज्ञा दी गई। २१ वीं

नवम्बरको अङ्गरेजी फौजने अलीमसजिदपर अधिकार कर लिया। दिसम्बर महीनेके मध्यतक रावर्टस साहब शुतुर-गरदन दररेके सिरेपर पहुंच गये। खोजक दररेपर और जलालाबादपर भी अङ्गरेजी फौजका कबजा हो गया।

अपनी हार देखकर अमीर शेरअली खां रूस दूतके साथ काबुलसे अफगान-तुरकस्थानकी ओर भाग गया। शेरअली खांका लड़का याकूब खां काबुलके सिंहासनपर बैठा। उधर सन् १८७६ ईकी २१वीं फरवरीको ताशकन्दमें अमीर शेरअली खांका देहान्त हुआ। इधर याकूब खां उसी सनके मई महीनेमें अङ्गरेजी फौजमें आया। अङ्गरेजी फौजमें रहकर उसने बड़े लाटसे सन्धिके बारेमें बात चीत की। सन्धिकी बातें तय हो गईं और सन १८७६ ई०की ३० वीं मईको गन्दमकमें जो अङ्गरेज-अफगान सन्धि हुई, वह नेरङ्ग अफगानमें इस प्रकार छापी गई है,—

"(१) इस सन्धि-पत्रके अनुसार दोनो शक्तियां एक दूसरेसे मित्रता रखेंगी।

(२) कुल अफगानस्थानकी प्रजाका अपराध क्षमा किया जावेगा। जो अफगानं अङ्गरेजोंसे मिल गये थे, उन्हें दण्ड न दिया जावेगा।

(३) अफगानस्थान जब दूसरी शक्तियोंसे किसी तरहका व्यवहार करे, तो इससे पहले अङ्गरेजोंसे सलाह कर ले।

(४) एक अङ्गरेज राजदूत काबुलमें नियुक्त किया जावे। उसके साथ यथोचित शरीररक्षक फौज रखी जावे। अङ्गरेज राजदूतको इस बातका अधिकार दिया जावे, कि वह

प्रयोजन उपस्थित होनेपर अङ्गरेज कर्म्मचारियोंको अफगानस्थानकी सीमापर भेज सकें। साथ साथ अमीरको यह अधिकार दिया जावे, कि वह प्रयोजन पड़नेपर अपने कर्म्मचारियोंको भारतवर्ष भेज सकें।

(५) अफगानस्थान-सरकारका कर्त्तव्य है, कि वह काबुलके अङ्गरेज दूतकी रक्षा करे और उसकी उचित प्रतिष्ठा करे।

इस सन्धिके उपरान्त अङ्गरेजोंने अफगानस्थानकी जीती हुई जगहोंको छोड़ दिया। सिर्फ खैबर दर्रेपर अपना कबजा रखा। सन्धिके अनुसार अङ्गरेजोंने अपनी मिशन काबुल भेजनेका बन्दोबस्त किया। मेजर कवेगनरी काबुल-मिशनके प्रधान अफसर नियुक्त हुए। लार्ड राबर्टस अपनी पुस्तक "फार्टीवन इयर्स इन इण्डिया"में लिखते हैं,—"सन् १८७६ ई०की १५वीं जुलाईको काबुल-मिशनके प्रधान पुरुष मेजर कवेगनरी कुर्रम पहुंचे। विलियम जेङ्किन, लफटिनण्ट हमिलटन उनके साथ थे। २५ नम्बर रिसाला और ५० नम्बर पल्टन उनकी रक्षाके लिये साथ थी। मैं और कोई पचास अङ्गरेज अफसर कुर्रमके आगेकी जगह देखनेके खयालसे मिशनके साथ साथ शुतुरगरदन दर्रेके किनारेतक गये। वहां हम लोगोंने पड़ाव किया। हम लोगोंने उस सन्ध्याको मिशनके साथ भोजन किया। भोजनोपरान्त मेजर कवेगनरी और उनके साथियोंके लिये स्वास्थ्यका प्याला देनेकी सेवा मेरे सुपुर्द की गई। किन्तु न जाने क्यों यह काम करनेमें मुझे उत्साह न हुआ। मैं इतना उदास हो रहा था और मेरा माथा उन सुन्दर सहृदयोंके सम्बन्धके अमङ्गल विचारोंसे इतना

भरा हुआ था, कि मेरे मुंहसे एक शब्द भी न निकला। और लोगोंकी तरह मैं भी सोचता था, कि सन्धि बहुत जल्द हो गई। हम लोगोंका भय अफगानोंके हृदयपर बैठने न पाया। बैठ जानेसे मिशनकी पूरी रक्षा हो सकती। बाधा पानेपर वा बिना बाधाके यदि हम लोगोंने काबुल जानेमें अपनी शक्ति दिखाई होती और वहां सन्धि की होती, तो इससे मिशनके काबुलमें रहनेकी आशा की जाती। किन्तु यह सब कुछ नहीं हुआ। इसलिये मुझे आशङ्का थी, कि मिशनको शीघ्र ही वापस आना पड़ेगा।

"किन्तु कवेगनरीके मनमें भयका खयाल नहीं था। वह और उसके साथी बहुत प्रसन्न थे। वह भविष्यके विषयमें बड़ी आशाके साथ बातें करता था। उसने मुझसे कहा, कि अगले जाड़ेमें मैं तुम्हारे साथ अफगानस्थानकी उत्तरीय और पश्चिमीय सीमाका दौरा करूंगा। हम दोनोंकी दिलचस्पीके विषयमें कितनी ही बातें हुईं। जब हम लोग सोनेके लिये पृथक होने लगे, तो आपसमें यह करार हुआ, कि या तो बीबी कवेगनरी अगली वसन्त ऋतुमें कवेगनरीके पास काबुल चली जावें और या वह मेरे परिवारके साथ कुररममें रहें। कुररमके एक सुन्दर गांव शालफजनके समीप मैं अपने परिवारके रहनेके लिये एक मकान तय्यार करा रहा था।

"बड़े सवेरे अमीरका भेजा हुआ सरदार मिशनको साथ ले जानेके लिये हमारे पड़ावमें आया। उसके आनेके उपरान्त ही हम लोग शुतुरगरदन दर्रेकी ओर रवाने हुए। कोई एक मील आगे बढ़े होंगे, कि मिशनके साथ

जानेवाला अफगान-रिसाला मिला। सवारोंकी वरदी वृटिश डूगून फौजकीसी थी। इनकी टोपी बङ्गालके घुड़-चढ़े तोपखानेकी फौजकीसी थी। वह लोग काम लायक और छोटे घोड़ोंपर सवार थे। प्रत्येक सवार कड़ाबीन और तलवार लगाये था।

"हम लोग उतारसे उतर रहे थे, ऐसे ही समय अफगानी सेना देखकर आश्चर्यान्वित हुए। कवेगनरीने मुझे सेना दिखाई और कहा, कि इसका हाल मेरी स्त्रीसे न कहना। कारण, वह इसे अशकुन समझेगी।

"अफगान पड़ावमें मिशनके लिये एक बहुत सजा सजाया खेमा खड़ा था। वहां हम लोगोंको चाय दी गई। इसके उपरान्त हम लोग पर्वतकी चोटीपर पहुंच गये। पर्व-तकी चोटीपर दरियां बिछी थीं। वहीं हम लोगोंको दुबारा चाय दी गई। वहांसे हम लोगोंको अपने सामने फैला हुआ लोगार दरेका अत्यन्त सुन्दर दृश्य दिखाई दे रहा था।

"अन्तमें लौटनेपर हम लोगोंके सामने एक छिवाई फर्शके दरोपर भोजन चुना गया। सभी पदार्थ यत्न और खूबीके साथ तय्यार किये गये। हमारी इज्जत करनेमें कोई कसर उठा नहीं रखी गई। फिर भी, मैं मिशनका भविष्य सोच सोच-कर दुःखित था और जिस समय कवेगनरी बिदा होने लगा मेरा दिल अन्दर ही अन्दर बैठ गया। जब वह हमसे बिदा होकर कुछ दूर आगे बढ़ा, तो हम दोनो फिर घूम पड़े। दोनो एक दूसरेसे मिले,—हमने हाथ मिलाया और इसके उपरान्त सदैवके लिये एक दूसरेसे जुदा हो गये।"

सचमुच ही मेजर कवेगनरी सिर्फ लार्ड रावर्टससे ही नहीं, वरञ्च इस संसारसे सदैवके लिये विदा हो गये। कारण, वह काबुलसे लौट न सके,—वहीं मारे गये। सन १८७९ ई०की ३री सितम्बरको काबुलमें बलवा हुआ। पहले तीन पलटनें अपनी तनखाहके लिये बिगड़ीं। इनके साथ तोपें भी थीं। इसके उपरान्त और ६ पलटनोंने उक्त तीन पलटनोंका साथ दिया। यह फौजें तनखाह न पानेके बहानेसे बिगडकर अङ्गरेजोंकी मिशनका सत्यानाश करना चाहती थीं। काबुलके बालाहिसारकी गिर्देके और शेरपुर प्रभृतिके रहनेवाले भी बागी फौजके साथ शामिल हो गये। बागियोंने पहले अमीरका कारखाना प्रभृति लूटा। इसके उपरान्त दूतनिवास घेर लिया। अमीरने बलवके दिन जो चिट्ठी अङ्गरेजोंको लिखी थी, उससे बलवेके सम्बन्धकी बहुतसी बातें मालूम होती हैं। अमीरने लिखा था,—"बालाहिसारपर जो फौज तनखाह लेनेके लिये एकत्र हुई थी, वह एकाएक भड़क उठी। पहले, तो उसने अपने अफसरोंपर पत्थर बरसाये। इसके उपरान्त वह रेसिडेंसीकी ओर झपटी और उसको पत्थर मारने लगी। इसके बदलेमें रेसीडेंसीसे उनपर गोलियोंकी वृष्टि हुई। ऐसी हलचल और बाधा उपस्थित हुई, कि उसे शान्त करना मुशकिल हो गया। शेरपुर, बालाहिसारकी गिर्देके देश और नगरके प्रत्येक अंशोंके मनुष्य बालाहिसारमें भर गये। उन लोगोंने कारखाने, तोपखाने, अस्त्रागार तोड़ डाले। इसके उपरान्त सबने मिलकर रेसीडेंसीपर आक्रमण किया। उस समय मैंने अफगान सैन्यके प्रधान सेनापति दाऊद शाहको दूतकी सहायताके लिये भेजा।

रेसीडेंसीके दरवाजेपर वह पत्थरों और बरछियोंकी मारसे घोड़ेसे गिरा दिया गया। इस समय वह मर रहा है। इसके उपरान्त मैंने सरदार यहिया खां और अपने लड़के युवराजको क़ुरान देकर भेजा, किन्तु इसका भी कोई फल न हुआ। इसके उपरान्त मैंने सुप्रसिद्ध सय्यदों और मुल्लाओंको भेजा, किन्तु इनसे भी कोई लाभ न हुआ। इस समय सन्ध्या हो चुकनेपर भी रेसीडन्सीपर आक्रमण किया जा रहा है। इस हलचलसे मुझे असीम दुःख है।" प्रातःकालसे सन्ध्या-पर्यन्त बागियोंने रेसिडन्सीपर आक्रमण किया। सन्ध्याको बागी रेसिडन्सीमें घुसे। यहां बड़ी मार काट हुई। कोई एक सौ बागी मारे गये। किन्तु बागियोंने रेसिडन्सीके किसी आदमीको जीता नहीं छोड़ा। कवेगनरी साहबसे लेकर रक्षकसैन्यके एक एक सिपाहीको चुन चुनकर मार डाला। कहते हैं, कि कवेगनरी साहबको बागियोंने जीता पकड़ लिया था। इसके उपरान्त उनकी कोठरीमें एक चिता तय्यार की। चितामें आग लगा दी और ज्वलन्त अग्निमें कवेग-नरीको भस्म कर डाला। अमीर काबुलको मालूम हो चुका था, कि कवेगनरी ३ री सितम्बरको मारे गये, किन्तु चौथीको उन्होंने जो चिट्ठी अङ्गरेजोंको लिखी, उसमें इस बातको जान बूझकर छिपाया। उनकी चिट्ठी इस प्रकार है,—"कवल सवेरे ८ बजेसे सन्ध्यापर्यन्त सहस्र सहस्र मनुष्य रेसिडन्सी नष्ट करनेके लिये एकत्र हुए थे। दोनों ओर बहुत प्राणनाश हुआ। सन्ध्या समय बागियोंने रेसिडन्सीको आग लगा दी। कलसे अबतक मैं पांच आदमियोंके साथ घिरा

हुआ हूं। मुझे पक्की खबर नहीं मिली, कि दूत और उसके साथी मार डाले गये वा गिरफ्तार किये जाकर बाहर निकाले गये। अफगानस्थान तबाह हो गया है। फौज और इर्द गिर्दके देशसे राजभक्ति उठ गई है। दाऊदशाहके फिर आरोग्य लाभ करनेकी आशा नहीं है। उसके सब नौकर चाकर मारे जा चुके हैं। कारखाने और अस्त्रागार बिलकुल लुट गये हैं। असलमें मेरी बादशाहत बरबाद हो चुकी है। परमेश्वरके उपरान्त अब मैं गवरमेण्टसे सहायता और सलाह चाहता हूं। मेरी सच्ची दोस्ती और ईमानदारी दिनके प्रकाश की तरह साफ साफ प्रमाणित हो जावेगी। इस दुर्घटनासे मुझसे मेरे मित्र राजदूत और मेरा राज्य दोनो छूट गये। मैं बहुत दुःखी और परेशान हूं।"

द्वितीय अफगान-युद्ध।

भारत-सरकारने मिशनकी हत्याका समाचार पाते ही लार्ड राबर्टसके सेनापतित्वमें कोई ७ हजार पांच सौ सिपाहियों और २२ तोपोंकी एक फौज काबुलपर चढ़ाई करनेके लिये और हत्यारोंको दण्ड देनेके लिये तय्यार की। लार्ड राबर्टस काबुलपर चढ़ जानेके लिये शिमलेसे अलीखेल पहुंचे। लार्ड राबर्टस अपनी पुस्तक "फार्टीवन इयर्स इन इण्डिया"में लिखते हैं,—"मेरे अलीखेल पहुंचनेपर कप्तान कनोलीने अमीरकी चिट्ठियां मुझे दीं। तुरन्त ही मैंने चट्ठियोंका

अयाय दिया। दूसरे दिन भारत-सरकारकी आज्ञासे मैंने अमीरको लिखा, कि स्वयं आपके इच्छा प्रकाश करनेपर और आपके दूतकी रक्षा और इज्जत करनेकी जिम्मेदारी लेनेपर मेजर कवेगनरी तीन अङ्गरेज अफसरोंके साथ काबुल भेजे गये। यह सब ६ सप्ताहके भीतर भीतर आपकी फौज और प्रजाद्वारा मारे गये। इससे प्रमाणित होता है, कि आप अपनी सन्धि पूर्ण करनेमें असमर्थ हैं, आप अपनी राजधानीमें भी शासन नहीं कर सकते हैं। आप यदि ब्रिटिश-सरकारसे मित्र रहेंगे, तो आपके शासन की जड़ जमानेके लिये और दूतके हत्यारोंको दण्ड देनेके लिये अङ्गरेजी फौज काबुलकी ओर आती है। यद्यपि आप अपने ४ थी सितम्बर-वाले पत्रमें ब्रिटिश-सरकारसे मित्रभाव दिखाते हैं, फिर भी हमारी सरकारको समाचार मिला है, कि देशकी जातियोंको हमारे विरुद्ध उभारनेके लिये काबुलसे दूत भेजे गये हैं। इससे जान पड़ता है, कि आप हम लोगोंके मित्र नहीं हैं। आपको उचित है, कि आप एक विश्वस्त कर्मचारी मेरे पास भेजकर उसकी मार्फत अपना मतलब जाहिर करें।

"मुझे इस समाचारके सत्य होनेमें थोड़ा भी सन्देह नहीं था, कि अमीर गिलजइयों और दूसरी जातियोंको हमारे विरुद्ध भड़कानेकी चेष्टा कर रहा है। एक जमानेमें एक नेटिव भला आदमी नव्वाब गुलाम हुसेन खां काबुलमें हमारा एजण्ट था। उसने मुझसे कहा, कि यद्यपि मुझे अमीर याकूब खांकी सलाहसे काबुल-मिशनके मारे जानेका विश्वास नहीं है। तथापि अमीरके मिशनके बचानेकी कोई चेष्टा

न करनेमें कुछ सन्देह नहीं। गुलाम हुसेन खांको इस बातका भी विश्वास था, कि अमीर हम लोगोंके साथ चाल चल रहा है। शिमलेसे रवाना होनेके पहले मैंने उस प्रान्तकी जातियोंके कितने ही सरदारोंको बुला रखनेके लिये तार दिया था। अलीखेलमें पहुंचनेपर यह देखकर मुझे बहुत हर्ष हुआ, कि वह बुला लिये गये थे।

"यह सरदार सहायता देनेके बड़े लम्बे लम्बे वादे करते थे। यद्यपि मैंने उन लोगोंकी बातोंपर विश्वास नहीं किया, फिर भी यह नतीजा निकाला, कि अमीर याकूब खांके दगाबाजीसे अफ़ग़ान जातियोंको हमारे विरुद्ध भड़काते रहनेपर भी, यदि मैं खूब मजबूत फ़ौजके साथ आगे बढ़ता जाऊं, तो मुझे किसी रोक रखनेवाली बाधाकी आशङ्का न करना चाहिये। सब बातें तेजी और फुरतीपर निर्भर हैं। किन्तु फुरती रसदकी पहुंचपर निर्भर है। कुररममें रसदके जानवरोंको देखकर मैं समझ गया, कि फुरतीके साथ आगे बढ़ना असम्भव है। लगातार कठिन परिश्रम करनेसे और शिक्षित नौकरोंके अभावसे, कितने ही पशु मर चुके थे। जो रह गये थे, वह बीमार थे वा निकम्मे बन गये थे।

"१६ वीं सितम्बरको मैंने एक इश्तहार जारी किया। इसकी प्रतियां काबुल, गजनीके लोगों और अड़ोस पड़ोसकी कुल जातियोंमें बंटवा दीं। मुझे आशा थी, कि यह इश्तहार हमारे आगे बढ़नेमें हमें सहायता देंगे और जिन लोगोंने रेसिडन्सीपर आक्रमण नहीं किया था, उन्हें निश्चिन्त कर देंगे। मैंने लोगार घाटीके मलिकोंके नाम चिट्ठियां भी

लिखीं। गुतुरगरदन दर्रा पार करते ही हम लोगोंको इन्हीं मलिकोंके देशमें पहुँचना था। मुझे मलिकोंकी सहायताकी बड़ी चिन्ता थी। १८ वीं तारीखको मैंने अमीर काबुलको फिर एक चिट्ठी लिखी। चिट्ठीके साथ घरना इत्तहार और मलिकोंकी चिट्ठी भी शामिल कर दी। मैंने अमीरको चिट्ठीमें लिखा था, कि मैं अपनी पहली चिट्ठीका जवाब और आपके किसी प्रतिनिधिके आनेकी प्रतीक्षा कर रहा हूं। मैंने यह भी आशा प्रकट की थी, कि आप मेरा मनसूबा पूरा करनेके लिये उचित आज्ञा जारी करेंगे और आप भारत सरकारकी सहायतापर भरोसा रखेंगे।

"१६ वीं सितम्बरतक बहुतसी तय्यारियां हो गईं। मैं बड़े लाटको सूचना दे सका, कि ब्रिगेडियर जनरल बेकर गुतुरगरदनपर अपनी फौजके साथ मोरचा बांधकर डट गये हैं। कुशीतककी राह साफ़ करा रहे हैं। लोगार घाटी जानेमें पहले इसी जगह फौजका पड़ाव होगा। प्रादेशिक कारवरदारोंसे रसद जुटाई जा रही थी। मैं फौजके पिछले भागसे तोपखानेकी गाड़ीपर खजाना और गोला बारूद ले आया हूं। असल फौजके आगे बढ़नेकी चेष्टा यथाशक्य की जा रही है।

"२० वीं तारीखको मुझे अमीरका जवाब मिला। उसने इस बातपर दुःख प्रकाश किया था, कि मैं स्वयं अलीखेल न आ सका। किन्तु मैं अपने दो विश्वस्त कर्मचारी आपके पास भेजता हूं। इनमें एक आपके मन्त्री हबीबुल्लह खां और दूसरे शाह मुहम्मद खां प्रधान मन्त्री हैं। चिट्ठी आनेके दूसरे दिन यह लोग आ गये।

"यह भले आदमी तीन दिनोंतक हमारे पड़ावमें रहे। मैंने उनसे जब जब मुलाकात की, तो उन लोगोंने मेरे दिलपर यही विश्वास जमानेकी चेष्टा की, कि अमीर वृटिश-सरकारके मित्र हैं और वह वृटिश-सरकारकी सलाहके अनुसार चलना चाहते हैं। किन्तु मुझे शीघ्र ही मालूम हो गया, कि असलमें अमीरने इन उच्चकर्म्मचारियोंको हमारी काबुलकी चढ़ाई रोकनेके लिये, काबुल-मिशनकी हत्या करनेवालोंको दण्ड देनेका भार काबुल-सरकारको दिलानेके लिये और सम्पूर्ण देशके उत्तेजित हो उठनेतक हमारी रवानगी रोकनेके लिये भेजा था। * * *

"मैं अमीरके दोनो प्रतिनिधियोंमें एकको अपने साथ रखना चाहता था, किन्तु दोमें एक भी हमारे पड़ावमें रहनेपर राजी नहीं होता था। इसलिये मुझे उन दोनोको छोड़ देना पड़ा। मैंने उनके हाथ निम्नलिखित चिट्ठी अमीरको भेजी ;—

'हिज हाईनेस अमीर काबुल। अलीखिल कम्प।

२५ वीं सितम्बर, १८७९ ई०।

'(शिष्टाचारके उपरान्त)। मैंने आपकी १९ वीं और २० वीं सितम्बर १ ली और २ री शवालकी चिट्ठियां मुस्तफी हबीबुल्लह खां और वजीर शाह मुहम्मदकी माफ़त पाईं। ऐसे सुप्रसिद्ध और सुयोग्य मनुष्योंके भेजनेकी वजहसे मैं आपका कृतज्ञ हुआ। उन्होंने मुझसे आपकी इच्छा प्रकाश की और मैं उनकी बातें खूब समझ गया। दुर्भाग्यवश चढ़ाईका मौसम जल्द जल्द खतम हो रहा है। जाड़ा शीघ्र ही आना चाहता है, किन्तु विषम शीत उपस्थित होनेके पहले

ही अङ्गरेजी फौजके काबुल पहुंच जानेके लिये यथेष्ट समय है। आपने अपनी तीसरी और चौथी तारीखकी चिट्ठीमें हमारी सलाह और सहायता पानेकी इच्छा प्रकाश की है। बड़े लाट बहादुर चाहते हैं, कि अङ्गरेजी फौज यथासम्भव शीघ्र ही काबुल पहुंचकर आपकी रक्षा करे और आपके देशमें फिरसे शान्ति स्थापित करे। दुर्भाग्यवश रसद संग्रह करनेमें कुछ हफ्तोंकी देर हो गई, फिर भी बड़े लाट बहादुरको यह जानकर हर्ष हुआ, कि इस समय आप खतरेमें नहीं हैं और उन्हें आशा है, कि अङ्गरेजी फौज काबुल पहुंचनेतक आप देशमें शान्ति रख सकेंगे। मैं आपको यह सुसमाचार सुनाता हूं, कि कन्धारसे और जलालाबादसे एक एक अङ्गरेजी फौज काबुलकी ओर रवाना हो चुकी है। मेरी फौज भी शीघ्र ही काबुलकी ओर रवाना होगी। आपको मालूम होगा, कि कुछ दिनोंसे हम लोगोंने शुतुरगर्दनपर कब्जा कर लिया है। अतिरिक्त रिसाले पलटनें और तोपखाने कुर्रम पहुंच चुके हैं। यह दल फौजके स्थानापन्न होंगे, जिसे कुर्रमसे लेकर मैं काबुल आता हूं। अब एकाएक मुझे मालूम हुआ, कि मुझे और फौजकी जरूरत पड़ेगी। बड़े लाट बहादुरने आपकी रक्षाके ध्यानसे आज्ञा दी है, कि काबुलकी ओर जानेवाली प्रत्येक अङ्गरेजी फौज ऐसी जबरदस्त हो, कि आपके शत्रुओंकी बाधासे रुक न सके। निःसन्देह तीनों फौजें बहुत जबरदस्त हैं। कन्धारसे आनेवाली फौजको किलातेगिलजई और गजनीमें रोकनेवाला कोई नहीं है। इसलिये उसके शीघ्र ही काबुल न

पहुंचनेका कोई कारण दिखाई नहीं देता। गत मई महीनेमें आपने ब्रटिश-सरकारसे जो सन्धि की थी, उसके खयालसे खैबरकी जातियां पेशावरवाली फौजको खैबर घाटीमें न रोंकेगी,—वरञ्च अपने बारबरदारीके जानवरोंसे फौजकी सहायता करेंगी। इससे यह फौज भी शीघ्र ही काबुल पहुंच जावेगी। आपकी दयासे मेरी कठिनाइयां भी घट गई हैं। मुझे आशा है, कि खैबर और कन्धारवाली फौजके साथ साथ मैं भी आपके पास पहुंच जाऊंगा। आपकी मुलाकातके खयालसे मैं बहुत खुश हूं। मुझे आशा है, कि आपकी कृपासे मैं बारबरदारी और रसदकी सहायता पा सकूंगा। मैंने आपके इस प्रस्तावको खूब गौरके साथ देखा, कि आप बागी फौजको दण्डकी व्यवस्था करके ब्रटिश फौजको काबुल आनेके कष्टसे बचाना चाहते हैं। मैं आपको इस अतिरिक्त कृपाके लिये भारत-सरकार और बड़े लाटकी ओरसे धन्यवाद देता हूं। किसी दूसरे समय आपकी यह बात बड़ी खुशीके साथ मञ्जूर कर ली जाती, किन्तु वर्त्तमान दशामें विशाल ब्रटिश जाति अपनी फौजके साथ बिना काबुल आये और आपकी सहायतासे बागियोंको बिना कठोर दण्ड दिये रह नहीं सकती। मैंने आपकी चिट्ठी बड़े लाटके पास भेज दी है। इस जवाबकी भी एक नकल बड़े लाटके विचारार्थ आजकी डाकसे भेज दूंगा! इस अवसरमें मैं मुस्तफी हबीबुल्लहखां और वजीर शाह मुहम्मदको आपके पास वापस जानेकी इजाजत देता हूं।"

सन् १८७९ ई०की २७ वीं सितम्बरको राबर्टस साहबने कुर-

मकी फौजका सेनापतित्व भार सेनापति गार्डनको दिया और स्वयं काबुल जानेवाली फौजको लेकर कुर मसे कुशी पहुंचे। राहमें कोई दो हजार अफगानों और अङ्गरेजी फौजमें एक छोटीसी लड़ाई हुई। कुशीमें अमीर काबुल अङ्गरेजी फौजके साथ रहनेके लिये आ पहुंचे थे। लार्ड राबर्टसने कुशी पहुंचकर अमीरसे मुलाकात की। लार्ड राबर्टसने इस मुलाकातकी बात अपनी पुस्तकमें इस प्रकार लिखी है,—"मुझपर अमीरकी सूरतका अच्छा असर नहीं हुआ। वह ओछा और कोई बत्तीस सालका मनुष्य है। उसका माथा दबा हुआ और सिर गावदुम है। ठुड्डी नामके लिये भी नहीं है। उसमें वह शक्ति नहीं जान पड़ती थी, जिससे अफगानस्थानकी उद्दण्ड जातियां दबाई जा सकती हैं। इसके अतिरिक्त उसकी आंखें बहुत चञ्चल थीं। वह देरतक निगाहें चार नहीं कर सकता था। उसकी सूरत ही उसके दुश्चित्तका पता देती थी। उससे मुझे बड़ी आशङ्का थी। कारण, वह मेरे पड़ावमें रहकर चिट्ठियां मंगाता और भेजता था। अवश्य ही वह अपने काबुली मित्रोंको हमारे इरादे और कामको सूचना दे रहा था। फिर भी वह हमारा मित्र था। काबुलके अपने बागी सिपाहियोंके भयसे भागकर हमारी शरण आया था। इसलिये भीतर भीतर हम सब कुछ सोच सकते थे, किन्तु बिना प्रमाण पाये प्रकाश रूपसे कुछ नहीं कह सकते थे। सिर्फ उसका आदर करनेपर बाध्य थे।"

सन् १८७९ ई०की २री अक्टोबरको अङ्गरेजी फौज कुशीसे

रवाना हुई और तीसरी अक्टोबरको जाहिदाबाद पहुं
६ ठीं ७वीं और ८वीं अक्टोबरको सङ्गविश्तेसे लेकर
तक अङ्गरेजी फौज और अफगानोंमें खासी लड़ाई
अन्तमें ९वीं अक्टोबरको अङ्गरेजी फौजने काबुल नगर
काबुल दुर्गपर अधिकार कर लिया। इसके उपरान्त
लार्ड राबर्टस बालाहिसारकी रेसिडन्सी देखने गये।
समयका हाल "अफगान वार" नाम्नी पुस्तकमें इस प्रकार लि
है,—"रेसिडन्सीका पहला दृश्य उसके पीछेकी दीवार
यह दुरुस्त थी, किन्तु अधिक धुंआं लगनेकी वजहसे उस
ऊपरी अंश काला हो गया था। दीवारके प्रत्येक कोने
छेद बने हुए थे। रेसिडन्सीके थोड़ेसे सिपाही इन्हीं छे
बहुसंख्यक आक्रमण करनेवालोंपर गोलियां चलाते
इस तरहके छिद्रोंकी चारों ओरके प्रत्येक वर्ग फूटपर अस
गोलियोंके चिन्ह बने हुए थे। कहीं कहीं गोलोंके व
बड़े बड़े निशान थे। रेसिडन्सकी पश्चिमीय दी
बालाहिसारके सामने पड़ती थी। इस दीवारपर बने
गोली गोलोंके असंख्य चिन्होंसे जान पड़ता था, कि बा
हिसारके अस्त्रागारपर अधिकार करके बागियोंने रेसिडन्सी
कितना भयङ्कर आक्रमण किया था। इस ओर रेसिडन्सी
तीन मञ्जिलें थीं। दो अब भी मौजूद थीं। एक आ
नष्ट हो गई थी। * * * रेसिडन्सीका आङ्गन
९० वर्ग फुट होगा। इसके उत्तरीय किनारेपर एक तिमञ्जि
मकान बना है। किन्तु इस समय वह मकान नहीं
कारण, वह जल गया था,—सिर्फ उसकी काली काली दी

बाकी रह गई थीं। बाईं ओरकी दीवारपर खूनके छींटे पड़े हुए थे। इमारतकी कुरसीपर राखका ढेर लगा हुआ था। जिसमें इस समय भी आगकी चिनगारियां मौजूद थीं। मकान इस समय भी भीतर ही भीतर सुलग रहा था। यह जानना कठिन था, कि किस जगह जीवित मनुष्य जला दिये गये थे। किन्तु एक कोटरीकी बीचकी राखसे जान पड़ता था, कि वहां मनुष्य जलाने लायक आग जलाई गई थी। कोटरीके बीचमें राख पड़ी थी और उसीके समीप मनुष्यकी दो खोपड़ियां और हड्डियां पड़ी थीं। इस समय भी इनसे दुर्गन्धि निकल रही थी। कोटरीकी छत और दीवारों-पर खूनके धब्बे लगे थे। इससे जान पड़ता था, कि वहां घोर युद्ध हुआ था। सरजनोंने खोपड़ियोंकी जांच की। कारण, खोपड़ियोंके युरोपियनोंकी होनेकी सम्भावना की गई थी। रेसि-डन्सी ऐसी सफाईके साथ लूटी गई थी, कि दीवारपर एक खंटीतक बाकी नहीं थी। कवेगनरी साहबके मकानकी बालाहिसारकी ओर वाली खिड़कियोंके चौखटेतक तोड़ डाले गये थे। गचपर पड़े हुए शीशेके कुछ टुकड़े ही उनकी निशानी थे। पर्दे आदि लूट लिये गये थे। एक खूंटीमें रङ्गीन पर्देका सिर्फ एक टुकड़ा रह गया था, वही कोटरीकी लुटनेसे पहलेकी भड़कका पता देता था।"

१२ वीं अक्टोबरको लार्ड राबर्टसने बालाहिसारमें दरबार किया। दरबारके पहलेकी एक प्रयोजनीय घटनाका हाल लार्ड राबर्टस इस प्रकार लिखते हैं,—"मैं इस चिन्तामें पड़ा था, कि याकूबखांके साथ क्या कारवाई करना चाहिये।

मेरी ऐसी ही अवस्थामें १२वीं अक्टोबरके सवेरे याकूबखांने आकर आप ही अपना फैसला कर लिया। मेरे कपड़े पहननेके पहले ही वह मेरे खेमेमें आया। उसके मुलाकातकी इच्छा प्रकट करनेपर मैं उससे मिला। मेरे पास सिर्फ एक कुरसी थी। उसे मैंने अमीरको दे दी। उसने कहा, कि मैं अपनी इमारतसे इस्तेफा देना चाहता हूं। जिस समय मैं कुशी गया था, उसी समय मैंने यह स्थिर कर लिया था। * * * उसने कहा, कि मुझे अपना जीवन बोझ मालूम होता है और मैं अफगानस्थानका अमीर होनेकी अपेक्षा अङ्गरेजी फौजका घसियारा होना पसन्द करता हूं। अन्तमें उसने कहा, कि जबतक मैं बड़े लाटकी आज्ञासे भारत, लण्डन, वा जहां बड़े लाट भेजना चाहें, भेजा न जाऊं मैं आप हीके खेमेके पास अपना खेमा खड़ा कराकर रहना चाहता हूं। मैंने अमीरके लिये एक खेमा दिया। उसका जलपान तय्यार करनेकी आज्ञा दी और उसे सोच समझकर फैसला करनेके लिये कहा। उससे यह भी कहा, कि आज दश बजे दरबार होगा। उस समय आपको भी दरबारमें चलना पड़ेगा। यह खयाल रखना चाहिये, कि इस समयतक अमीरको यह मालूम नहीं था, कि हम लोग दरबारमें किस तरहकी विज्ञप्ति करेंगे वा हम लोग उसके मन्त्रियोंके साथ कैसा व्यवहार करेंगे।

"दश बजे मैंने याकूबखांसे मुलाकात की। वह अपनी इमारत छोड़नेपर अटल था। ऐसी दशामें वह दरबारमें शरीक होना नहीं चाहता था। उसने कहा, कि मैं आपने

बदले अपने बड़े लड़केको आपके साथ कर दूंगा और मेरे कुछ मन्त्री आपके पास रहेंगे। मैंने उससे सोचनेके लिये फिर कहा। किन्तु उसे अपना पदत्याग करनेपर उद्यत देखकर मैंने उससे कहा, कि मैं बड़े लाटकी आज्ञाके लिये तार भेजता हूं। आपको विना मरजीके जबरदस्ती आपसे राज्य न कराया जावेगा। फिर मैंने यह कहा, कि जबतक बड़े लाटका जवाब न आवे, आप अपना राज्य कायम रखिये।

"दोपहरको मैं वालाहिसार पहुंचा। मेरा स्टाफ, युवराज, सर्व्विदल और काबुली सरदारोंका बड़ा झुण्ड मेरे साथ था। राहकी दोनो ओर पंक्ति बांधकर फौज खड़ी थी। उस दिन अपनी फौजपर मुझे बड़ा अभिमान हुआ। फौजके सिपाही इस उपलक्षके लिये खूब साफ हो गये और बने ठने थे।

"मेरी सवारीके अगले भागके सदर फाटकमें प्रवेश करते ही वृटिश-वैजयन्ती चढ़ा दी गई, बैण्ड बाजेमें जातीय गीत बजने लगा और तोपोंने ३१ फैर सलामी सर की।

"दरबारके कमरेमें पहुंचकर मैं घोड़ेसे उतरा और उच्चासनपर जाकर मैंने वृटिश-सरकारी निम्नलिखित विज्ञप्ति और आज्ञा, उपस्थित मनुष्योंको सुनाई,—

गत ३ री अक्टोबरके विज्ञापनमें मैंने काबुलवासियोंको सूचित किया था, कि अङ्गरेजी फौज काबुलपर अधिकार करने आ रही है। मैंने उन लोगोंको अङ्गरेजी फौज तथा अमीरके अख्तियारका मुकाबला करनेसे मना कर दिया था। उस विज्ञापनसे अवज्ञा की गई। मेरी फौज अब काबुल पहुंच चुकी है और उसने वालाहिसारपर कबजा कर

लिया है। किन्तु इसके अग्रसर होनेमें खूब बाधा दी गई और काबुलवासियोंने भी इसके रोकनेके काममें बहुत बड़ा भाग लिया। इससे पहले वह अमीरसे बगावत कर चुके हैं। उन्होंने इस अपराधको कवेगनरी साहब अमीरके दोस्तको हत्या करके और गुरु कर लिया है। उन्होंने नितान्त नामर्दी और दगाबाजीसे यह हत्याकाण्ड किया। इससे सम्पूर्ण अफगानस्थानवासियोंकी अप्रतिष्ठा हुई। ऐसे दुष्कर्म्मोंका उचित प्रतिफल तो यही है, कि काबुल नगर बरबाद कर दिया जावे और इसका नाम निशानतक बाकी न रहे। किन्तु ग्रेट ब्रटेन न्याय भी दयापूर्व्वक करना चाहता है। मैं काबुलवासियोंको सूचित करता हूं, कि उनके अपराधका पूर्ण दण्ड नहीं दिया जावेगा और यह नगर बरबादीसे बचा लिया जावेगा।

'फिर भी, इस बातकी जरूरत है, कि वह दण्ड पानेसे बच न जावें और दण्ड भी ऐसा हो, कि उन्हें मालूम हो और याद रहे। इसलिये काबुल नगरका वह भाग जो बालाहिसारके अङ्गरेजी अधिकारपर वा बालाहिसारकी अङ्गरेजी फौजकी रक्षामें किसी तरहका आघात उपस्थित कर सकता है, तुरन्त ही भूसात कर दिया जावेगा। इसके अतिरिक्त काबुलवासियोंके अवस्थानुसार उनपर बहुत बड़ा जुर्म्माना किया जावेगा। जुर्म्मानेकी रकम पीछे प्रकट की जावेगी। मैं यह सूचना भी देता हूं, कि शान्ति स्थापित रखनेके लिये काबुल नगर और उसकी चारो ओर दश दश मील तक फौजी कानून रखा जावेगा। अमीरकी सलाहसे काबु-

लिये एक जङ्गी गवरनर नियुक्त किया जावेगा। वह शासन करेगा और कठोर हाथसे अपराधियोंको दण्ड दिया करेगा। काबुलवासी और आस पासके गांववाले गवरनरकी आज्ञा माननेके लिये सूचित किये जाते हैं।

'यह हुई काबुल नगरके दण्डकी बात। जो मनुष्य अपराधी समझे जावेंगे, उन्हें अलग दण्ड दिया जावेगा। हाल-वाले बलवेकी खासी तहकीकात की जावेगी। उसमें जो लोग जैसे अपराधी प्रमाणित होंगे, उन्हें वैसा ही दण्ड दिया जावेगा।

'अपराध और अशान्ति निवारणके लिये और काबुलवासी भलेआदमियोंकी रक्षाके लिये सूचित किया जाता है, कि भविष्यमें किसी तरहका घातकशस्त्र काबुल नगर तथा काबुलसे पांचकोससे फासलेतक बांधा न जावे। इस सूचनाके एक सप्ताहके उपरान्त जो मनुष्य हथियारबन्द दिखाई देगा उसको प्राण दण्ड दिया जावेगा। ब्रटिश-मिशनकी चीजें जिन मनुष्योंके पास हों, वह उन्हें ब्रटिश पड़ावमें पहुंचा दें। इस सूचनाके उपरान्त जिसके घरसे ब्रटिश-मिशनकी चीजें निकलेंगी, उसको कठोर दण्ड दिया जावेगा।

'इसके अतिरिक्त जिस मनुष्यके पास आग्नेय अस्त्र हो, वह उसे ब्रटिश पड़ावमें जमा कर दें। जमा करनेवालेको देशी बन्दूकके लिये तीन रुपये और युरोपियनके लिये पांच रुपये दिये जावेंगे। इस सूचनाके उपरान्त यदि किसीके पाससे ऐसे हथियार निकलेंगे, तो उसे कठिन दण्ड दिया जावेगा! अन्तमें मैं यह सूचना देता हूं, कि जो मनुष्य

रेंसिडन्सीपर आक्रमण करनेवाले वा आक्रमणसे किसी तरहका सम्बन्ध रखनेवालेको गिरफ्तार करा देगा, उसे पचास रुपये पारितोषिक दिये जावेंगे। इतना ही इनाम गत ३री सितम्बरके उपरान्त अङ्गरेजी फौजसे सामना करनेवालेको गिरफ्तार करानेपर दिया जावेगा। कारण, अङ्गरेजी फौजसे सामना करनेवाला यथार्थमें अमीरका वागी है। यदि इस तरहका अपराधी मनुष्य अफगान फौजका कप्तान होगा तो ७५ रुपये और सेनापति होगा, तो १ सौ बीस रुपये उसके गिरफ्तार करनेवालेको दिये जावेंगे।'

"अफगानों इस विज्ञप्तिसे बहुत सन्तुष्ट हुए। उन्होंने ध्यान पूर्व्वक इसे सुना। विज्ञप्ति हो चुकनेपर मैंने लोगोंको जाने कहा और मन्त्रियोंको ठहरने। कारण, मैं उन्हें कैद करना चाहता था। उनसे मैंने कह दिया, कि मिशनकी हत्याकी तहकीकात होनेतक तुम लोगोंको कैद रखना मैं अपना कर्त्तव्य समझता हूं।

"दूसरे दिन मैंने नगर प्रवेश किया। मैं नगरके प्रधान प्रधान बजारोंसे होकर निकला। जिसमें नगरवासियोंको मालूम हो, कि वह मेरे वशमें हैं। रिसाला वृगेड मेरी सवारीके आगे था। मैं अपने ष्टाफ और शरीररक्षकोंके साथ उसके पीछे था। मेरे पीछे पैदल सिपाहियोंकी पांच बटालियन पैदल फौज थी। तोपखाना साथ नहीं था। कारण, कुछ बाजार, इतने सङ्कीर्ण थे, कि दो सवार बराबर बराबर मुशकिलसे चल सकते थे।

"मुशकिलसे इस बातकी आशा की जा सकती थी, कि

नगरवासी हमारा स्वागत करेंगे। फिर भी, वह हमारी प्रतिष्ठा करते थे। मुझे आशा भी थी, कि मेरा जङ्गी जलूस उनपर खूब असर करेगा।

"मैंने काबुलमें शान्ति स्थापन करनेके लिये मेजर जनरल जेम्स हिलको उस समयके लिये काबुलका गवरनर बनाया। उनके साथ एक मुसलमान भलेआदमी नब्वाब गुलाम-हुसेन खांको भी रखा। इसके अतिरिक्त मैंने दो अदालतें कायम कीं। एक फौजी और दूसरी मुल्की। मिशन-हत्याकी तहकीकातका काम अदालतोंको सौंप दिया।"

१६वीं अक्टोबरको बालाहिसारके एक बारूदभण्डारमें आग लगनेसे भण्डारघर बड़े भयङ्कर शब्दके साथ उड़ गया। अङ्गरेजोंको इस भण्डारघर और उसमें रखी हुई बारूदकी खबर नहीं थी। उस समय बालाहिसारमें ५वीं गोरखा और ६७ नम्बर पैदल फौजका पड़ाव था। बारूद उड़नेके साथ साथ ६८ नम्बर पैदल फौजके कप्तान शाफ्टो, ५वीं गोरखाके सुबेदार मेजर और १८ देशी सिपाही उड़ गये। इस घटनाके उपरान्त ही अङ्गरेजी फौजने बालाहिसार खाली करके बुद्धिमानी दिखाई। कारण, दो घण्टेके उपरान्त ही दूसरा बारूद-भण्डार उड़ा। इसबार पहलेसे भी ज्यादा शब्द हुआ। बालाहिसारसे चार सौ गज दूर कितने ही अफगान मर गये। बारूद भण्डारोंके उड़नेका कारण खूब जांच करनेपर भी अज्ञात रहा। कितने ही लोग अनुमान करते थे, कि अफगानोंने बालाहिसारकी अङ्गरेजी फौज उड़ा देनेके लिये बारूदमें आग लगाई थी। अङ्गरेजी फौजके प्रधान सेनापति

लार्ड राबर्टसको भी इसी बातकी आशङ्का थी और उन्होंने नाना कारणोंके साथ बालाहिसारमें छिपी हुई बारूद उड़नेकी आशङ्कासे अङ्गरेजी फौज बालहिसारमें नहीं रखी।

अपराधी काबुलियोंके दण्ड देनेका काम शीघ्र ही जारी किया गया। "अफगान वार" नाम्नी पुस्तकके लेखक हेन्समेन साहब सियाहसङ्ग पड़ावसे २०वीं अक्टोबरको इस प्रकार लिखते हैं,—"आज हम लोगोंने पांच आदमियोंको फांसीकी सजा पानेके लिये जाते देखा। सन्तोष हुआ। गत कुछ सप्ताहोंकी घटनासे इन लोगोंका थोड़ा वा बहुत सम्बन्ध था। इन लोगोंका अपराध हम लोगोंकी निगाहोंमें अच्छी तरह खुप गया था। काबुलमें गवाह संग्रहका काम सहज नहीं है। कितने ही आदमी गवाही देनेके दुष्परिणामसे डरते हैं। हम लोगोंने अबतक यह किसी तरह प्रकट नहीं किया है, कि हम कबतक यहां रहेंगे। हम लोग अच्छी तरह जानते हैं, कि अपनी रक्षाकी छाया अपने शुभचिन्तकोंपरसे हटाते ही उनका क्या परिणाम होगा। अफगानोंकी बराबर बदला लेनेवाली शायद ही और कोई जाति हो। अपराधीके विरुद्ध गवाही देनेवालोंको अपराधीके रिश्तेदार निगाहपर चढ़ा लेंगे। * * * कल कमिशनके सामने पांच कैदी उपस्थित किये गये। पांचोंको फांसीका दण्ड दिया गया और वह फांसी चढ़ा दिये गये।" पांचोंमें एक नगरका कोतवाल था। बालाहिसारके द्वारपर दो फांसियां खड़ी की गई थीं। एकपर चार आदमी लटकाये गये। दूसरेपर सिर्फ कोतवाल लटकाया गया। अङ्गरेजी फौजने

अभागे कोतवालकी इतनी इज्जत की। इसके उपरान्त नित्य ही कुछ अफगान मिशनकी हत्या करने वा अमीरसे बगावत करनेके अपराधपर फांसी पाने लगे। इसपर भी कुछ लोग अङ्गरेजी फौजके इस कामसे सन्तुष्ट नहीं थे। हेंसमेन साहब ८वीं नवम्बरकी चिट्ठीमें लिखते हैं,—"लोगोंके दिलमें यह खयाल जमता जाता है, कि यहांकी फौज बदला लेनेके काममें सुस्ती करती है और उसने प्रत्याशानुसार खूब रक्तपात नहीं किया।" इसके उपरान्त ही यानी १०वीं, ११वीं और १२वीं नवम्बरको कोई उनचास आदमियोंको फांसी दी गई।

अमीर याकूब खांके पदत्याग करनेकी बात बड़े लाट बहादुरने स्वीकार कर ली। सन् १८७९ ई०की पहली दिसम्बरको अमीर याकूब खां काबुलसे भारत भेज दिया गया। इसके एक सप्ताहके उपरान्त लार्ड राबर्टसने प्रधान मन्त्री तथा और कितने ही आदमियोंको भारतवर्ष भेज दिया।

एक ओर तो अङ्गरेजी फौज यह सब कर रही थी, दूसरी ओर अफगान शान्त नहीं थे। वह सब समयपर अङ्गरेजी फौजसे छोटी मोटी लड़ाइयां लड़ लिया करते थे। इसके अलावा वह अङ्गरेजी फौजपर आक्रमण करनेके लिये स्थान स्थानपर एकत्र हो रहे थे। इन छोटे छोटे कई दलोंके मिलनेसे बड़ी फौज तय्यार हो सकती थी। उस फौजसे काबुल वालियोंके भी शरीक हो जानेसे वह और भी बड़ी और मजबूत हो जा सकती थी। अङ्गरेजी फौजके प्रधान सेनापति लार्ड राबर्टस इन सब बातोंकी खबर रखते थे। उन्होंने जलालाबादसे कुछ और सिपाही भेजनेके लिये तार दिया। अतिरिक्त

सिपाहियोंके आनेके पहले उन्होंने ऐसी चेष्टा की, जिससे अफगानोंके छोटे छोटे दल आपसमें मिल न सकें। दो फौजें तय्यार कीं। सेनापति मेकफरसनके अधीनस्थ फौजको उत्तरसे आते हुए अफगानोंसे पश्चिमके अफगानोंका मिलाप रोकनेका काम सौंपा गया। दूसरी, सेनापति बेकरके अधीनस्थ फौजको वह राह रोकनेका काम सौंपा गया, जिससे अफगानोंके परास्त होकर भागनेकी सम्भावना की गई थी। सेनापति मेकफरसनने कोहस्थानके लवमन और चारदेह दर्रेमें देखा, कि वहां दलके दल अफगान एकत्र हैं। मेकफरसनने उन लोगोंपर आक्रमण किया। अफगान पीछे हटे। हटते हटते एक पर्वतपर चढ़ गये और वहां जमकर उन लोगोंने मुकाबला करना आरम्भ किया। अङ्गरेजी फौजने आक्रमण करके अफगानोंको इस पर्वतपरसे भी हटा दिया। इसी तरह सेनापति बाकरने भी अफगानोंको परास्त करके पीछे हटा दिया। मुहम्मदजान खां बलवाई अफगानोंका सरदार था। उसने दूसरे दिन,—११वीं दिसम्बरको किलाकाजी गांवके समीप मोरचा तय्यार किया। लार्ड रावर्टसने सेनापति मासीको किलाकाजीकी ओर भेजा। मासी और जानमुहम्मदकी फौजमें युद्ध हुआ। जानमुहम्मदकी फौज बहुत जबरदस्त थी। उसके दबावसे अङ्गरेजी फौजको पीछे हटना पड़ा। उसी दिन दूसरी ओर लार्ड रावर्टसकी फौज और बलवाइयोंकी फौजमें मुकाबला हो गया। वैरियोंकी संख्या अधिक देखकर लार्ड रावर्टसको भी पीछे हटना पड़ा। बलवाइयोंकी प्रबलतासे लार्ड रावर्टस चिन्तित हुए। वह युद्धस्थ-

लकी तोपें वापस लाने और बलवाइयोंके साथ काबुलवासियोंका मिलना रोकनेकी चेष्टा करने लगे। १२वीं, १३वीं और १४वीं दिसम्बरको भी बलवाइयों और अङ्गरेजी फौजमें स्थान स्थानपर युद्ध हुआ। एक लड़ाईमें अङ्गरेजी फौजको तोपें छोड़कर पीछे हटना पड़ा था। किन्तु दूसरी लड़ाईमें उसने अपनी तोपें वापस ले लीं। फिर भी बलवाइयोंकी संख्या अधिक होनेकी वजहसे अङ्गरेजी फौजको प्रत्येक स्थानसे पीछे हटना पड़ा। लार्ड राबर्टस अपनी पुस्तकमें लिखते हैं,—"आज १४वीं दिसम्बरके दोपहरसे पहले मुझे यह नहीं मालूम था, कि अफगान इतने आदमी एकत्र कर सकते हैं। फिर भी, मुझे यह बात माननेकी कोई जरूरत दिखाई नहीं देती, कि वह लोग शिक्षित सैन्यका मुकाबला कर सकेंगे। * * * शेरपुरके पड़ावमें जाकर ठहरनेका खयाल बहुत दुःखद है। शेरपुर जानेसे काबुलनगर और बालाहिसार हम लोगोंके कब्जेसे निकल जावेगा। उधर, इन दोनोंपर कब्जा करके अफगान जातियां बहुत मजबूत बन जावेंगी।

"मुझे अपने कामका फैसला तुरन्त ही कर डालना है। कारण, यदि मैं पीछे हटूं, तो रात्रि होनेसे पहले काबुल नगरके ऊपरकी पहाड़ियोंपर सेनापति मेकफरसनकी फौजके लिये और आससाई पर्व्वतपर सेनापति बेकरकी फौजके लिये रसद भेज देना जरूरी है। मैंने हैलियोग्राफद्वारा मेकफरसनसे पूछा, कि वैरी क्या कर रहे हैं और उनकी संख्या क्या अबतक बढ़ती ही जाती है? उसने जवाब दिया, कि उत्तर, दक्षिण और पश्चिमसे दलके दल अफगान चले आ रहे हैं और उनकी

गगना प्रति क्षण अति अधिक होती जाती है। जो युवक अफसर सङ्केतद्वारा समाचार भेज रहा था, उसने अपनी ओरसे इतनी बात और कही,—'चारदेह घाटीकी अफगानोंकी भीड़ Derby day का Epoom याद दिलाती है।'

"यह उत्तर पाकर मैंने फैसला कर डाला। मैंने सब जगहोंकी फौज शेरपुरमें एकत्र करना चाही। इससे शेरपुरकी रक्षा होने और अवतकका सा वृथा रक्तपात रुकनेकी आशा थी। मैंने इस कामकी खराबी अच्छी तरह समझ ली थी। किन्तु मुझे इसके सिवा दूसरा कोई उपाय दिखाई नहीं देता था। ऐसे समय अपनी रक्षा होका प्रबन्ध करना चाहिये था और समय पानेपर वा कुमकी फौज आनेपर अफगानोंपर आक्रमण करना उचित था।

"दो बजे दिनको दोनो सेनापतियोंको पीछे हटनेकी आज्ञा भेजी गई। उसी समय इस आज्ञाके अनुसार कार्य आरम्भ किया गया। अफगान हमारी फौजपर दवाव डालने लगे। हमारी फौज जो मोरचा छोड़ती, अफगान तुरन्त ही उसपर कबजा कर लेते थे। राहमें और पड़ावतक अफगान सिपाही हमारी फौजपर दवाव डालते चले आये। कहीं कहीं भिड़कर लड़ाई हो गई और इस तरहकी लड़ाईमें कितने ही बहादुरीके काम दिखाई दिये। * * राहमें हमारी फौजमें किसी तरहकी घबराहट नहीं फैली। वह बड़ी शान्ति और चालाकीके साथ परिचालित की जाती थी। रात्रि होनेके उपरान्त ही फौज और उसका साज सामान निर्विघ्न शेरपुर

पहुंच गया। उसी रातको अफगानोंने कबुल और बाला-हिस्सारपर कब्जा कर लिया।

"भारतके सुशिक्षित सिपाहियोंका प्राच्यवासियोंके बड़े से बड़े दलका सामना करना आसान काम है। शिक्षित फौजका दृढ़तापूर्वक अग्रसर होना, एक बहुत बड़ी बात है। प्राच्यके लोग इस तरहकी फौजका सामना शायद ही कर सकते हैं। किन्तु पीछे हटना और ही बात है। जब प्राच्यवासी अपने मुकाबिलकी फौज हटती देखते हैं, तो अपने ऊपर और अपने बलपर बहुत भरोसा करने लगते हैं। मुकाबिलकी फौज यदि किसी तरहकी घबराहट दिखावे, तो उसका नाश निश्चय है। इसलिये यह खयाल करनेकी बात है; कि चार्टोंरिस ने कितनी आशङ्काके साथ अपनी फौजका प्रत्यावर्तन देख रहा था। जमीन आक्रमणकारी अफगानोंके अनुकूल थी। वह बिना किसी बाधाके पीछे हटते हुए सहीसर आदमियोंपर टूट पड़ते थे। अफगा जयध्वनिके सिनादसे दिशायें कंपाते थे और अपने छुरे हिलाते चमकाते थे। किन्तु हमारे वीरपुरुष अपने अफसरोंके आज्ञानुसार तनिक भी विचलित न होते थे। वह शान्तभावसे अपने स्थानसे हटते थे, प्रत्येक काम इस तरह करते मानो साधारण कवायदभूमिमें चल फिर रहे थे और अपने मरे हुए तथा घायल आदमियोंको बिना किसी घबराहट और जल्दबाजीके उठा लेते थे। असलमें प्रत्येक कठिन काम बड़ी आसानीके साथ किया गया। जिस समय फौजें पड़ावमें पहुंचीं मैंने अपने साथियोंको आन्तरिक धन्यवाद दिया।

"दिनभरमें हमारी फौजके जितने सिपाही हताहत हुए, उनकी संख्या इस प्रकार है,—१६ मारे गये। इनमें कप्तान स्मिथ और ७२ हाईलेण्डर फौजके लफटिनराट गेसफर्ड शामिल हैं। ८८ घायल हुए, इनमें ६२ हाइलण्डर्सके कप्तान गोरडन और ७२ हाइलण्डर्सके लफटिएट इगर्टन और गाइडस फौजके कप्तान बेटी शामिल हैं।

"जिस समय छावनीका फाटक बन्द हुआ, मैंने बड़े लाट बहादुरको दिनभरके कामका समाचार तारद्वारा भेज दिया। कारण, मैं जानता था, कि वैरियोंका पहला काम तार काटकर हम लोगोंके और भारतके बीचका सम्बन्ध तोड़ देना होगा। मैंने समाचार भेजा, कि मैंने ब्रिगेडियर जनरल चार्लस गफ साहबको गण्डमकसे यथासम्भव शीघ्र आनेकी आज्ञा दी है। उनकी सैन्यसे काबुल और भारतकी राह खोल रखूंगा और प्रयोजन पड़नेपर शत्रुदमनके लिये सहायता भी लूंगा। मुझे हाकिमोंको तारद्वारा यह समाचार भेजकर सन्तोष हुआ, कि अङ्गरेजी फौजके लिये उतनी चिन्ता करनेका प्रयोजन नहीं है। शेरपुरमें कोई चार महीनेकी रसद आदमियोंके लिये, छः सप्ताहका चारा बारबरदारीके जानवरोंके लिये एकत्र है। ईंधन, दवा और अस्पतालसम्बन्धी सामानकी इफरात है। छावनीके भीतरसे तोपें बन्दूकें चलानेके मौके हैं। कोई तीन वा चार महीनेतक हम लोग अच्छी तरह मुकाबला कर सकते हैं।

"सौभाग्यवश हमारे पास रसदकी कमी नहीं थी। हम लोगोंकी जनसंख्या बढ़ गई थी। वलीमुहम्मद खां

और कितने ही सरदार हमारी रक्षामें शेरपुर चले आये। उन्होंने कहा, कि यदि हम लोग काबुल नगर जावेंगे, तो वहां मार डाले जावेंगे। हमें ऐसे मेहमान पसन्द नहीं थे। कारण, मैं उनपर विश्वास नहीं कर सकता था। फिर भी, वह हमारे मित्र थे और मैं उनकी प्रार्थना अस्वीकार नहीं कर सकता था। मैंने उन्हें इस शर्तपर छावनीमें दाखिल कर लिया, कि प्रत्येक सरदारके साथ गिनतीके कुछ आदमी रहें।

"१४वीं तारीखकी तूफानी घटनाके उपरान्त शान्ति उपस्थित हुई। इसमें छावनीके मोरचे दुरुस्त किये गये और काबुल-अस्त्रागारसे मिली हुई बड़ी बड़ी तोपें कामके लिये तय्यार की गईं।

"इधर हम मुकाबलेके लिये तय्यार हो रहे थे, उधर वैरी बिलकुल ही निकम्मे थे। इस अवसरमें उन लोगोंने यदि कोई काम किया, तो यह, कि काबुल नगर लूट लिया और अमीरका अस्त्रागार खाली कर दिया! बारूद सम्भवतः नष्ट कर दी गई थी। फिर भी बहुत कुछ बच रही थी। बहुत-सी बची हुई बारूद मुहम्मद जानकी फौजके हाथ पड़ गई। मुहम्मदजान वलवाई अफगानोंका प्रधान सरदार बन गया था। उसने याकूब खांके सबसे बड़े लड़के मूसा खांको काबुलका अमीर बना दिया था।

"पांच दिनतक दोनो ओरसे कोई प्रयोजनीय काम न किया गया। वैरी पड़ोसके किले और बागोंपर कब्जा करते जाते थे। इसमें दो एक आदमी हताहत हुआ करते थे। जिन जगहके वैरी हमें तकलीफ पहुंचा सकते, वहांसे

हम उन्हें हटा दिया करते थे। मैंने कुछ किले तुड़वा दिये और छावनीकी पड़ोसके रक्षास्थल नष्ट करा दिये। फिर भी, रियोंके हटानेके लिये मैं कोई बड़ी लड़ाई नहीं लड़ा। सलिये, कि छीने हुए स्थानोंपर क़बजा जमा रखनेके लिये रे पास फ़ौज नहीं थी और स्थान छीन लेनेके उपरान्त कबजा रखनेसे छीननेके समयका रक्तपात वृथा होता। * *

"२१वीं तारीखसे अफ़गानोंकी बड़ी तय्यारीके लक्षण दिखाई ने लगे। उसदिन और उसके दूसरे दिन छावनीके पूर्व ई जगहोंपर अफगानोंने छावनीपर आक्रमण करनेके लिये बजा कर लिया। मुझे यह भी खबर मिली, कि अफ़गान ावनीकी दीवार पार करनेके लिये बड़ी बड़ी सीढ़ियां तय्यार रनेमें मसरूफ हैं। इस समाचारसे जान पड़ा, कि अब फ़गान प्रकृत कार्य्यमें संलग्न हैं। दूसरी खबर मिली, कि त मसजिदोंमें मुल्ला, लोगोंको उपदेशकर रहे हैं, कि तुम ग मिलकर काफिरोंका नाश करो। वृद्ध मुल्ला मुश्के ालम लोगोंकी उत्तेजनाकी आग भड़कानेकी चेष्टा यथा- क्ति कर रहा है। आगामी २३वीं तारीखको सन्ध्याको हर्रम पड़ता था। उस दिन मुसलमानोंकी धार्म्मिक उत्तेजना असीमापर्य्यन्त पहुंच जाती है। मुल्ला मुश्के आलमने ह किया था, कि उस दिन प्रातःकाल वह सङ्केतकी अग्नि पने हाथसे जलावेगा। इस अग्निको देखते ही अफगानोंने वनीपर आक्रमण करनेका प्रण किया था।

"२२वीं की रात निर्विघ्न बीती। छावनीकी दीवारके हर सिर्फ अफगानोंका चीत्कार सुनाई देता था। किन्तु

प्रातःकाल होते ही एकाएक बाढ़ दगने लगीं। हमारे सिपाही हथियारसे लैस होकर अपनी अपनी जगह खड़े आक्रमणकी प्रतीक्षा कर रहे थे। आक्रमण आरम्भ हुआ। छावनीकी पूर्व और दक्षिण ओरसे गोलियोंकी वृष्टि होने लगी। अत्यन्त भयङ्कर आक्रमण दो ओरसे हो रहा था। इनमें एक ओर सेनापति ह्यु गफ और दूसरी ओर कारनेल जेनकिन था। उनकी दृढ़ता देखकर मुझे विश्वास हुआ, कि जो विश्वास मैंने उनपर किया था, वह इसके योग्य थे।

अभी सवेरा नहीं हुआ था। चारों ओर इतना अन्धेरा था, कि दुश्मनके सामनेकी चीजें दिखाई नहीं देती थीं। मैंने आज्ञा दे दी थी, कि वैरियोंको बिना अच्छी तरह देखे बाढ़ न दागी जाये। लफ्टिनण्ट शर्पके अधीन गर्फकी पहाड़ी तोपोंने स्टार गोले दागे। इससे मैदानमें प्रकाश फैल गया। प्रकाशमें दिखाई दिया, कि अफगान छावनीसे कोई एक हज़ार गजके फासलेपर आ चुके हैं। २८ नम्बर पञ्जाब पलटनने पहले बाढ़ मारना आरम्भ की। इसके उपरान्त गाइड्स, ६७ नम्बर और ९२ नम्बर पलटन यथाक्रम बाढ़ दागने लगीं। दीवारके समीप पहुंचे हुए गाजियोंपर बाढ़ पड़ने लगी। फिर तो तोपखाने भी आगे बढ़ते हुए वैरियोंपर गोले उतारने लगे। प्रातःकाल सात बजेसे लेकर दश बजेतक इसी तरह लड़ाई होती रही। वैरियोंने पड़ावकी दक्षिण ओरकी दीवार उल्लङ्घन करनेकी चेष्टा बारबार की। कितनी ही बार तो वैरी दीवारके अत्यन्त समीप पहुंच गये। पर अन्तमें पीछे हटाये गये! जिस जिस जगह इस तरहकी बड़ी

चेष्टा की गई थ, लाशोंका ढेर उन जगहोंका पता बता रहा था। ऐसे ही समय मुझे भारतवासियोंके साहस और उनकी निर्भीकताका परिचय मिला। युद्ध बहुत जोर शोरसे जारी था। मैं एक जगह खड़ा था। प्रति क्षण कमाण्डिङ्ग अफसरोंकी रिपोर्टें मुझे मिल रही थीं। ऐसे समय अलीबख्श नामे नौकरने मेरे पास आकर कानमें कहा, कि स्नान कर लीजिये। वह गोलियों और तोप बन्दूककी आवाजसे तनिक भी विचलित नहीं हुआ। उसने अपना दैनिक कर्त्तव्य इस प्रकार पालन किया, मानो कोई असाधारण बात नहीं हो रही थी।

"दश बजनेके उपरान्त ही युद्ध कुछ स्थगित हुआ। मैंने खयाल किया, कि अफगान ब्रीचलोडिङ्ग बन्दूकोंके सामने आनेसे हिचकते हैं। पर घण्टे भर बाद आक्रमण जोरशोरके साथ फिर आरम्भ हुआ। मैंने देखा, कि वैरी हमारी बाढ़ोंसे पीछे नहीं हटते, इसलिये उचित जान पड़ा, कि अपनी फौज बाहर निकालूं और आक्रमण करके उन्हें अपने सामनेसे हटा दूं। मैंने मेजर क्राष्टरको फील्ड आरटिलरी तोपोंके साथ और लफटिनण्ट करनेल विलयमको ५ नम्बर पञ्जाब रिसालेके साथ बिमारूखालके ऊपर पहुंचकर कुरजा किला नामे गांवकी गिर्द एकत्र वैरियोंको ध्वस्त विध्वस्त करनेकी आज्ञा दी। इस आक्रमणसे अभीष्ट सिद्ध हुआ। इससे अफगान छितराकर भाग गये।

"इसके उपरान्त होसे जान पड़ा, कि आक्रमण करनेवालोंका हृदय टूट गया। अब वह उतने जोरशोरसे आक्रमण नहीं

करते थे। मध्याह्नके उपरान्त एक बजते बजते आक्रमण एकबारगी ही बन्द हो गया। वैरी भागने लगे। अब रिसा लेके आक्रमण करनेका मौका था। मैंने मासीको आज्ञा दी, कि छावनीका प्रत्येक सवार लेकर तुम वैरियोंका पीछा करो और रात्रि होनेके पहले शेरपुरकी चारो ओरकी खुली हुई जगह वैरियोंसे साफ कर दी गई। साथ साथ रिसालेका एक भाग छावनीके दक्षिण कुछ गांवोंको ध्वंस करनेके लिये भेजा गया। इन गांवोंसे वैरियोंने हमें कष्ट पहुंचाया था और उन्हें वहांसे हटा देना बहुत आवश्यक था। इन गांवोंके ध्वंस होनेपर ब्रिगेडियर जनरल गफकी फौजके लिये राह खुल जाती। वह शेरपुरसे कोई ६ मीलके फासलेपर पहुंच चुके थे। मुझे उनके पड़ावके खेमे दिखाई देते थे। खेमे गाड़नेके ढङ्गसे जान पड़ता था, कि वह एक रात रहनेके लिये वहां गाड़ गये थे। गांवोंमें गाजी मिले। इन लोगोंने आत्मसमर्पण करनेके वा भागनेके बदले मरना मुनासिब समझा। सुतरां वह गांवके मकानोंके साथ साथ उड़ा दिये गये। दो वीर इञ्जीनियर अफसर, कप्तान डण्डास वी० सी० और लफ़टिनाण्ट सी० नजेण्ट मकान उड़ाते वक्त स्वयं उड़ गये।

"* * मुझे मालूम हुआ, कि वैरियोंने आक्रमण करना ही नहीं छोड़ दिया, वरञ्च जातियोंका बड़ा जमाव टूट चुका था और कलके मुकाबला करनेवाले सहस्र सहस्र मनुष्योंमें एक भी पार्श्ववर्त्ती गांवों वा पहाड़ियोंमें नहीं था। आक्रमण करने-वालोंकी ठीक संख्या जानना कठिन था। दूर दूरके लोग

आये थे। राहके ग्रामवासी और काबुलवासी इन लोगोंके साथ हो गये थे। अमित्रोंका कहना था, कि आक्रमणकारियोंकी संख्या एक लाखके करीब थी। मैं भी इसे अधिक नहीं समझता।

"१५ वींसे लेकर २३ वींतक हमारे बहुत थोड़े आदमी हताहत हुए। दो अफसर ६ सिपाही और ७ नौकर मारे गये, ५ अफसर ४१ आदमी और २२ नौकर घायल हुए। वैरियोंके कोई तीन हजार आदमी काम आये होंगे।"

इस घटनाके उपरान्त अङ्गरेजी फौज शेरपुरसे बाहर निकली। उसने काबुल और बालाहिसार प्रभृति स्थानोंपर फिर कबजा किया। राबर्टस साहबने निम्नलिखित विज्ञप्ति प्रकाश की,—

"कुछ बागी आदमियोंके उत्तेजित करनेपर साधारणतः अज्ञ और अदूरदर्शी मनुष्योंने बगावतका झण्डा खड़ा किया। बागियोंको उचित प्रतिफल मिल चुका है। प्रजा भगवानकी थाती है। शक्तिशालिनी न्यायपरायणा वृटिश-सरकार प्रजाका अपराध क्षमा करती है। जो लोग बिना विलम्बके वृटिशकी शरण आयेंगे, उनका अपराध क्षमा किया जावेगा। सिर्फ वारदकके मुहम्मद जान, कोहस्थानके मीर बूचा, लोगारका समन्दर खां, चारदेहका गुलाम हैदर और सरदार मुहम्मदहसन खांके हत्यारोंका अपराध क्षमा नहीं किया जावेगा। चाहे तुम किसी जातिके हो, आओ और अधीनता स्वीकार करो! इसके उपरान्त तुम अपने मकानोंमें सुख और शान्तिके साथ रह सकोगे। तुम्हारा किसी तरहका नुकसान न होगा।

प्रजाके विरुद्ध ब्रटिश गवरमेण्ट किसी तरहका वैरभाव नहीं रखती। अब जो मनुष्य बगावत करेगा, निश्चय ही दण्ड पावेगा, यह जरूरी बात है। किन्तु जो लोग बिना विलम्बके चले आवेंगे, उन्हें भय अथवा शङ्का न करना चाहिये। ब्रटिश-सरकार वही कहती है, जो उसके हृदयमें है।"

इस विज्ञप्तिका असर बहुत अच्छा हुआ। काबुल नगर और पार्श्ववर्त्ती देशोंमें शान्ति स्थापित हो गई। नगरके बाजार खुल गये और बाजारमें पूर्ववत भीड़भाड़ होने लगी। दूर दूरके सरदार आकार राबर्टस साहबसे मुलाकात करने लगे।

सन् १८८० ई०के आरम्भमें काबुलमें शान्ति विराजने लगी। किन्तु यह शान्ति असली नहीं थी। जिस तरह ज्वालामुखी पर्व्वतका ऊपरीभाग ठण्डा हो जानेपर भी उसके भीतर आग भड़कती रहती है, ठीक उसी तरह काबुलवासी प्रत्यक्षमें शान्त दिखाई देनेपर भी आन्तरिक उत्तेजनासे परिपूर्ण थे। कहीं अफगान अङ्गरेजी फौजपर जेहाद करनेकी चेष्टा कर रहे थे। कहीं वलवाई सरदार जमाजान और मुल्ला मुश्के आलमकी अधीनतामें सहस्र सहस्र मनुष्य काबुलपर फिर चढ़ाई करनेके लिये सजधज रहे थे। अङ्गरेजी फौज भी निश्चिन्त नहीं थी। वह हर घड़ी अफगानोंसे लड़ने झगड़नेके लिये तय्यार रहती थी। अङ्गरेजी फौजने बड़ी चेष्टा करके काबुलनगर और उसकी इर्दगिर्द कोई बीस बीस कोसके फासलेतक अपने शासनकी प्रस्तार-प्रतिपत्ति कर रखी थी। कोहिस्थान तथा अफगान-तुरकिस्थानतक अङ्गरेजी फौज नहीं गई।

वह पूर्ववत स्वतन्त्र और स्वाधीन था। देशकी दशा देखकर ब्रटिश-सरकार किसी उपयुक्त मनुष्यको अफगानस्थानकी गद्दी देकर अपनी फौजको भारतमें वापस लाना चाहती थी। अफगान कहते थे, कि याकूब खां काबुलका अमीर फिर बनाया जावे। ब्रटिश-सरकार यह बात मञ्जूर नहीं करती थी। कारण, उसको विश्वास हो चुका था, कि अमीरकी साटसे कवेगनरीकी मिशन मारी गई थी। ठीक ऐसे ही समय सम्पूर्ण अफगानस्थानमें यह खबर फैल गई, कि अमीर दोस्त मुहम्मदके पोते और अमीर शेर अली खांके भतीजे अबदुररहमान खां रूसकी अमलदारीसे अफगान-तुरकस्थान आ पहुंचे हैं। अबदुररहमान सन १८८० ई०के आरम्भमें अफगान-तुरकस्थान आये थे। मार्चका अन्त होते न होते उन्होंने सम्पूर्ण अफगान-तुरकस्थानपर अपना अधिकार जमा लिया। अब्दुर-रहमानकी शक्ति बढ़नेसे अङ्गरेजोंको आशङ्का हुई और अफगानोंकी हिम्मत बढ़ गई। इससे कुछ पहले सन् १८८०की १६वीं फरवरीको हेंसमेन साहब "अफगान वार" नाम्नी अपनी पुस्तकमें लिखते हैं,—"अब्दुररहमानकी चालें समझना बहुत कठिन है। अफगानस्थानके प्रधान सरदारोंकी अपेक्षा इस सरदारका नाम लोगोंकी जुबानपर ज्यादा है। जैसा मैंने खयाल किया था, अबदुररहमान अफगानस्थानके अभिनयमें प्रधान पात्र बनता मालूम होता है। कारण, प्रादेशिक नीतिपर उसका असर बहुत जल्द पड़ सकता है। तुरकस्थानके मामलेकी खबर हमें अत्यन्त कठिनतापूर्व्वक मिलती है। हमें युरोपीय तार समाचारद्वारा मालूम हुआ, कि रूसियोंने

अबदुररहमानको अवकाश दे दिया और अब वह अपनी भाग्य-परीक्षाके लिये अफगानस्थान आया है। तथापि अबतक हम लोगोंको उसके अक्ष नदीकी दक्षिण ओर पहुंचनेकी पक्की खबर नहीं मिली है। यह सत्य है, कि उसके बलख आनेकी खबर एकबार मिली थी, किन्तु इस समाचारका समर्थन नहीं हुआ। इसलिये वह अविश्वासनीय समझा गया। अब हम लोगोंको उसकी गतिकी दूसरी खबर मिली है। बलखके एजण्टोंने काबुली सौदागरोंको चिट्ठी लिखी है, कि मीर अफजल खांका निरुद्देश लड़का बदखशांमें है। उसके साथ कोई ३ हजार तुर्क सिपाही हैं। वह इमारतका दावा करना चाहता है। * * * अमीर अबदुररहमानको अफगानस्थानकी जातियां और अफगान सिपाही दोनो प्यार करते हैं। सुशा सुशके आलमके लोगोंके बिद्रोहके लिये उभाड़ने और मुहम्मद जानकी फौजके कुछ दिनोंके लिये शेर-पुर घेर लेनेकी खबरसे विदेशमें पड़े हुए अबदुररहमानको अपना मनसूबा पूरा करनेकी आजमायशका खयाल पैदा हुआ होगा। इस मनसूबेका हाल भविष्यमें मालूम होगा। किन्तु इसका प्रत्यक्ष स्वरूप कुछ तुरकी सवारोंको एकत्र करना और दो स्थानसे अक्ष नदी पार करना है। अबदुर-रहमान बदखशांकी ओर आया। वहां उसकी स्त्रीका सम्बन्धी हाकिम था। * * * खबर है, कि अबदुररहमानके पास दो हजारसे तीन हजारतक सवार हैं। वहांवाले कहते हैं, कि जिस समय उसने अक्ष नदी पार की थी, उसके पास १२ लाख रुपये बुखारेकी अशरफियोंमें थे। * * * अबदुरर

हमान यदि अफगान-तुरकस्थानके साथ काबुलपर भी कबजा करना चाहेगा, तो या तो हम लोगोंको उसे अमीर मानना पड़ेगा, या उसकी फौजसे युद्धस्थलमें भिड़ना पड़ेगा। अभी यह देखना बाकी है, कि वह रूसको पसन्द करता है, वा इङ्गलण्डको।"

इस अवसरमें काबुलका शासन सम्बन्धी फैसला करनेके लिये सर लेपेल ग्रिफिन साहब राजनीति-समितिके प्रधान बनकर भारतसे काबुल आये। उन्होंने अमीर अबदुररहमानको एक चिट्ठी भेजी।

इस चिट्ठीका हाल लिखनेसे पहले हम अबदुररहमानके सम्बन्धमें कुछ बातें कहना चाहते हैं। अब्दुररहमानका जीवन अत्यन्त कौतूहलमय है। उन्होंने कभी कैद होकर बेड़ियां खड़काईं और कभी अपने हाथसे अपना भोजन बनाया। कभी देशके हाकिम बने और कभी हाकिमकी प्रजा। कभी सैन्यके सेनापति और कभी सेनापतिके अधीन सिपाही हुए। कभी उन्होंने राजकुमारोंकी तरह कभी लुहारों और कभी इञ्जीनियरोंकासा जीवन व्यतीत किया। कभी उनके पास सम्पत्तिका भण्डार रहा, कभी भोजनके लिये एक टुकड़ा भी मयस्सर न हुआ। अबदुररहमान गजनीमें अपने चाचा शेरमुहम्मद खांसे परास्त होकर अफगानस्थानकी सीमा पार करके रूसकी अमलदारीमें चले गये थे। जब उनको मालूम हुआ, कि अफगानस्थानमें अङ्गरेजी फौजका कबजा है और अफगान अङ्गरेजी फौजसे असन्तुष्ट हैं, तो वह रूस अफसरोंकी सलाह और आज्ञासे अफगानस्थान आये।

इसको देखते ही अफगान-तुर्कस्तानके अमीर रईस अपनी अपनी फौजोंके साथ इनसे मिलने लगे। अमीर अबदुर्रहमान अपनी पुस्तक तुजुक अबदुर्रहमानीमें अपने रूसको अस-तरोंसे अफगान-तुर्कस्तान आने और अपने अमीर बननेका हाल इस प्रकार लिखते हैं,—'दूसरे दिन मैं कान्दज पहुँचा। सिपाहियोंने एक सौ एक तोपोंकी सलामी दी। मुझे देख-कर वह बहुत प्रसन्न हुए। मेरे वैरी दो अफसरोंको मेरे सामने लाये। दोनोंको मेरे सामने मार डालना चाहते थे। मैंने मारनेकी आज्ञा न दी। दोनोंको छोड़ दिया।

'अगले दिन तोपखानेकी देख भाल कर रहा था। इतनेमें एक मनुष्य आगे निकल आया और सलाम करके मेरे पैरोंपर गिर पड़ा। मुझे बहुत आश्चर्य हुआ। उसे उठाया, तो देखा, कि नाजिर हैदरका लड़का सरवर खां है। यह मुझसे समरकन्दमें छुट गया था। पहले तो उसने मुझसे अत्यन्त विनीत भावसे क्षमा प्रार्थना की। जब मैंने उसको क्षमा किया, तो उसने कहा, कि मैं काबुलसे आपके नामकी चिट्ठी लाया हूं। मैं अपने डेरेमें वापस आया, तो ज्ञात पड़ा, कि सर लेपेल ग्रिफिन साहबका पत्र लेकर आया है। राहमें विषम शीत था। पाला और बरफ घुटनोंसे ऊपर ऊपर थी। पत्रका विषय इस प्रकार था;—

'मेरे प्रतिष्ठित मित्र सरदार अब्दुर्रहमान खां!

'कुशलक्षेमके उपरान्त आपका मित्र ग्रिफिन आपको सूचित करता है, कि ब्रिटिश सरकार आपके सकुशल कतगान पहुँ-चनेसे बहुत सन्तुष्ट है। आप यदि यह लिखेंगे, कि रूसने

आप कैसे आये और अब आपकी क्या इच्छा है, तो गवरमेण्ट अत्यन्त प्रसन्न होगी।'

"मैंने अपनी फ़ौजको यह पत्र सुनाया। कारण, यह पहले पहल ब्रटिशसरकारसे मेरा सम्बन्ध हो रहा था। बिना फ़ौजकी सलाहके इस पत्रका उत्तर देना उचित जान न पड़ा। मुझे भय था, कि फ़िसादी लोग कहीं यह न प्रसिद्ध कर दें, कि मैं अङ्गरेजोंसे मिला हुआ था और इसी बहानेसे उन्हें देश देना चाहता था। इससे मैं बरबाद हो जाता। मुझे यह भी आजमाना था, कि लोग नैतिक सम्बन्धमें मुझे कहांतक स्वतन्त्रता देते हैं। मैंने पत्र उच्चस्वरसे पढ़ दिया और कहा, कि सरदारगण मुझे इस पत्रका उत्तर देनेमें सहायता प्रदान करें। मैं नहीं चाहता, कि अपने नये मित्रोंकी सलाह बिना लिये कोई काम करूं। मेरी इच्छा है, कि सब लोग जवाब तय्यार करनेमें मिल जावें। उन लोगोंने मुझसे दो दिनोंकी मुहलत चाही। तीसरे दिन कोई सौ चिट्ठियां लाये। इनमें किसी किसीका विषय यह था,--'हे अङ्गरेज जाति! हमारा देश छोड़ दो। या तो हम तुम्हें निकाल देंगे, या स्वयं इसी चेष्टामें मारे जावेंगे।' एक पत्रमें हरजानेके रुपये मांगे गये थे। एकमें लिखा था, कि अङ्गरेज तोपें और किले बरबाद करनेके लिये एक करोड़ रुपयेका हरजाना दे, नहीं तो एक भी अङ्गरेज पेशावरतक जीता जाने न पावेगा। ऐसा ही एकबार पहले भी हो चुका है। एक सरदारने लिखा, 'रे दगाबाज काफ़िरो! तुमने भारतवर्ष तो धोखेसे ले लिया और अब इसी तरह अफ़ग़ानस्थानपर भी कब्जा करना चाहते

हो। यथासाध्य हम तुम्हें रोकेंगे। इसके उपरान्त रूस वा कोई दूसरा राज्य तुम्हारा सामना करनेके लिये हमारे साथ मिल जायेगा'। मतलब यह, कि उन लोगोंने इसी तरहकी बेसमझीकी ऊट पटाङ्ग बातें लिखी थीं। मैंने सब चिट्ठियां जोरसे पढ़कर सुनाईं और कहा, कि मैं भी एक चिट्ठी तुम्हारे सामने ही लिखूंगा। जिससे यह न मालूम हो, कि मैंने पहले होसे सलाह कर ली है। मैंने चिट्ठी लिखनेका एक कागज और कलम लिया। भगवानसे प्रार्थना की, कि मुझे उचित उत्तर लिखनेकी शक्ति दे। इसके उपरान्त सात हजार उजबक और अफ़ग़ानोंके सामने यह पत्र लिखा,—

'मेरे प्रतिष्ठित मित्र ग्रिफिन साहब रेजिडण्ट ब्रिटिश-गवरमेण्ट!

'पत्र-लेखक सरदार अबदुररहमान खांका सलाम स्वीकार कीजिये। मुझे आपका पत्र पाकर प्रसन्नता हुई। आपके मेरे रूससे आनेके प्रश्नके उत्तरमें निवेदन है, कि मैं वायसराय जनरल काफमेन और रूस-सरकारकी आज्ञासे अफ़ग़ानस्थान आया हूं। यहां मैं इसलिये आया हूं कि ऐसी मुसीबत और विपत्तिमें मैं अपनी जातिकी सहायता करूं। वस्सलाम।'

"यह पत्र ऊंची आवाजसे पढ़कर अपनी फौजको सुनाया। पूछा, कि सबको पसन्द है, वा नहीं? सबने जवाब दिया, कि आपके अधीन रहकर अपने देश और धर्मके लिये हम लड़नेको तय्यार हैं, किन्तु बादशाहोंसे पत्रव्यवहार करना नहीं जानते। उन्होंने खुदा और रसूलको कसम खाकर मुझे उचित उत्तर लिखनेकी आज्ञा दी। इसके उपरान्त 'शाबाश'की ध्वनि करके कहने लगे, कि जो उत्तर आपने

लिखा, ठीक है। हम सब उसे स्वीकार करते हैं। इसके उपरान्त यह पत्र सरवर खांको दिया गया। वह चार दिन ठहरकर कान्दजसे काबुलकी ओर रवाना हो गया। मैं भी धीरे धीरे चाराकारकी ओर चला। इसके साथ साथ अङ्गरेजी अफसरोंसे कहला भेजा, कि मैं उनसे फैसला करनेके लिये चाराकार आता हूं। ३० अपरेलको ग्रिफिन साहबका और एक पत्र मिला। इसमें अनुरोध किया गया था, कि काबुल आकर काबुल शासन कीजिये। १६ वीं मईको मैंने जो जवाब दिया उसकी नकल इस प्रकार है,—

मेरे प्यारे मित्र!

'मुझे ब्रटिश-सरकारसे बड़ी आशा थी और अब भी है। मुझे आपकी मैत्रीकी जितनी आशा थी, उतनी ही प्रमाणित हुई और वही मेरी कुल आशाओंका कारण भी है। आप अफगानोंका स्वभाव अच्छी तरह जानते हैं। एक आदमीकी बातका कोई असर नहीं हो सकता। वह इस बातका विश्वास कर लेना चाहते हैं, कि जो कुछ किया जाता है, वह उनकी भलाईके लिये! वह मुझे काबुल जानेकी आज्ञा देनेके पहले निम्नलिखित प्रश्नोंका उत्तर चाहते हैं,—(१) मेरे राज्यकी सीमा क्या होगी? (२) कन्धार भी मेरे राज्यमें रखा जावेगा, वा नहीं? (३) क्या कोई अङ्गरेज-दूत अथवा अङ्गरेजी फौज अफगानस्थानमें रहेगी? (४) क्या ब्रटिश राज्यके किसी वैरी वा रूससे सामना करनेकी आशा मुझसे की जावेगी? (५) ब्रटिश राज्य मुझे और मेरे देशको क्या लाभ पहुंचाना चाहता है? (६) और इसके पहले वह कौनसी सेवा मुझसे चाहता

है? इनके जवाब जातिको दिखानेका प्रयोजन है। इसके उपरान्त मैं जातिसे सलाह लेकर आपसे किसी तरहकी सन्धि करूंगा। यद्यपि आपको हमारी सहायताका प्रयोजन नहीं है। तथापि मैं भगवानके भरोसे अङ्गरेजोंकी सहायताके लिये तय्यार रहूंगा। दुनियाका एतबार नहीं। सम्भव है, कि अङ्गरेजोंको मेरी सहायता लेनेका प्रयोजन उपस्थित हो।'

"भगवानकी दयासे दलके दल लोग मेरी अधीनता स्वीकार करनेके लिये आ रहे थे और वह प्रत्येक प्रकारकी सेवाके लिये धन और प्राणसे तय्यार थे! पञ्चशेरसे चाराकार पहुंचते पहुंचते कोई तीन लाख गाजी मुझसे मिल गये। मैंने भगवानको धन्यवाद दिया, कि उसने इतने बड़े दलको मेरे अधीन किया और मुझे उनका बादशाह बनाया। उन लोगोंने विशुद्धान्तःकरणसे प्रश्न किया, कि हम लोग आपकी ओरसे अङ्गरेजोंसे युद्ध करेंगे। किन्तु मैंने उन्हें जवाब दिया, कि इसकी नौबत हो न आवेगी। कारण, अङ्गरेजोंने मुझे आप ही लिखा है, कि यहां आइये और काबुलका सिंहासन स्वीकार कीजिये।

"१४ वीं जूनको ग्रिफिन साहबने मेरे प्रश्नोंके उत्तर भेजे और वह यह हैं,—'मुझे आज्ञा मिली है, कि जो प्रश्न आपने किये, उनके उत्तर भारत-सरकारकी ओरसे आपको दूं। प्रथम यह, कि क्या बाहरी शक्तियोंको अफ़गानस्थानसे किसी तरहका सम्बन्ध रखना चाहिये? वृटिश सरकार चाहती है, कि कोई बाहरी शक्ति अफ़गानस्थानके बारेमें दखल न दे।

रूस और ईरानने ऐसी ही प्रतिज्ञा भी कर ली है। इसलिये यह बात साफ जाहिर है, कि अफगानस्थान सिवा अङ्गरेजोंके और किसीसे नैतिक सम्बन्ध नहीं रख सकता। यदि कोई शक्ति अफगानस्थानमें दखल देना चाहे और अफगानस्थान किसी अन्य शक्तिका दखल रोकनेके लिये युद्धमें प्रवृत्त हो, तो वृटिश-सरकार अफगानस्थानकी सहायता करेगी। काबुल-सरकार यदि वृटिश-सरकारको अपने नैतिक मामलेमें दखल देने देगी, तो वह विदेशी शत्रुको अफगानस्थानसे निकाल देगी; (२) देशकी सीमाके विषयमें मुझे यह कहनेकी आज्ञा दी गई है, कि कन्धार प्रदेश एक स्वतन्त्र हाकिमके अधीन कर दिया गया है। कन्धार प्रान्तके पशीं और सेवी अङ्गरेजोंके अधीन रहेंगे। इस विषयमें वृटिश सरकार आपसे अधिक बातचीत करना नहीं चाहती है। अमीर याकूब खांके समय उत्तरीय और पश्चिमीय अफगानस्थानकी जो सरहदबन्दी कर दी गई, वही अब भी मानी जावेगी। आप भूतपूर्व अमीरोंकी तरह यदि हिरातपर भी अधिकार कर लेंगे, तो भारत सरकार आपके इस काममें किसी तरहकी बाधा न देगी। भारत सरकार अफगानस्थानके राजनीतिक मामलोंमें किसी तरहका हस्तक्षेप नहीं करेगी और न अफगानस्थानको कोई अङ्गरेज दूत रखनेके लिये बाध्य करेगी। दोनो राज्योंके मङ्गलके लिये एक मुसलमान एजण्टका काबुलमें रहना उचित है।'

"२२वीं जूनको मैंने संक्षेपमें पत्नोत्तर दिया। इस उत्तरमें मैंने कन्धार छोड़नेसे अनिच्छा प्रकट की। कारण, कन्धार

बादशाही घरानेका नगर था। उनके निकल जानेसे देशको प्रतिष्ठामें आघात पहुंच सकता था।

'भगवानपर निर्भर रहकर मैं कोहस्थानको राहसे चारा-कार दाखिल हुआ। अङ्गरेजी फौज गाजियोंका आधिक्य देखकर किसी क़दर परेशान थी। अङ्गरेजोंसे लड़नेवाले कोहस्थानी और काबुली सरदार प्रति दिवस आकर मुझसे मिलते जाते थे और मेरे अधीन होते जाते थे। जो स्वयं न आ सके; उन्होंने मुझे पत्रद्वारा वा किसी दूसरे उपायसे समाचार भेज दिया। मेरे जासूसोंने काबुलसे समाचार दिया, कि अङ्गरेज कर्मचारी किसी क़दर घबराये हुए थे और उनको समझमें नहीं आता था, कि मेरा अभिप्राय क्या था। २०वीं जुलाईको अफगान जातियोंके उपस्थित कुल सरदार और सरगरोहोंने मुझे चाराकारमें अपना बादशाह और अमीर बनाया। मुझे देशका शासक मानकर मेरा नाम खुत-बेमें दाखिल किया। लोग अत्यन्त प्रसन्न थे, कि भगवानने उनका देश एक मुसलमानको सौंप दिया। उधर ग्रिफिन साहबने भी २२वीं जुलाईको काबुलमें दरबार किया। उन्होंने अङ्गरेज कर्मचारियों और अफगान सरदारोंके सामने मेरे अमीर होनेकी सूचना दी! उस समय उन्होंने जो वक्तृता दी वह यह है,—

'घटनाओंके क्रमसे सरदार अब्दुर्रहमानके लिये एक ऐसी सूरत पैदा हो गई है, जो गवरमेण्टकी इच्छाके अनुकूल है। इसलिये गवरमेण्ट और बड़े लाट प्रसन्नतापूर्वक सूचना देते हैं, कि हमने अमीर दोस्त मुहम्मदके पोते सरदार अब्दुर-

रहमान खांको काबुलका अमीर मान लिया। भारत-सरकारको इस बातसे बहुत हर्ष हुआ, कि अफगानस्थानकी सम्पूर्ण जातियों और सरदारोंने बारकजई घरानेके ऐसे सुप्रसिद्ध पुरुषको पसन्द किया, जो सुप्रसिद्ध सिपाही, बुद्धिमान और अनुभवी है। वह भारत-सरकारसे मैत्री रखते हैं। जबतक भारत सरकारको यह बात मालूम होती रहेगी, कि भारत सरकारके प्रति उनके विचार पूर्ववत हैं, उस समयतक भारत-सरकार उनकी सहायता करती रहेगी। सबसे अच्छी बात अफगानस्थान सरकारके लिये यह होगी, कि उसकी जिस प्रजाने हमारी सेनाकी सहायता की है उसके साथ अच्छा सुलूक करे।'

"२६वीं जुलाईको ग्रिलसे एक तार आया। इसमें काबुलके अङ्गरेज कर्म्मचारियोंको सूचना दी गई थी, कि कन्धार—मैवन्दमें अङ्गरेजी फौज सरदार अयूबखांद्वारा परास्त हुई। यह सुनकर ग्रिफिन साहब थोड़ेसे सवार लेकर तुरन्त ही जिमेसुभसे मिलने आये। यह एक गांव है, जो काबुलसे कोई सोलह मीलके फासलेपर है। तीन रोज,—यानी ३०वीं जुलाईसे १ली अगस्ततक मुझसे उनसे बातचीत होती रही। जो बात स्थिर हुई,—उसके लिये मैंने एक लिखावट मांगी। जिसमें मैं वह लिखावट अपनी प्रजाको दिखा सकूं। ग्रिफिन साहबने निम्नलिखित विषयका एक पत्र मुझे दिया;—

'हिज एक्सिलेन्सी वाइसराय और गवरनर जनरलको यह सुनकर हर्ष हुआ, कि ब्रटिश-सरकारके बुलानेपर आप काबुलकी ओर रवाने हुए। इसलिये आपके मित्रभाव, और उस लाभका

ध्यान करके जो आपकी स्थायी गवरमेण्ट हो जानेसे सरदारों और प्रजाको प्राप्त होंगे ब्रटिश-सरकार आपको अमीर मानती है। बड़े लाटकी ओरसे मुझे यह कहनेकी भी आज्ञा दी गई है, कि ब्रटिश-सरकार यह नहीं चाहती, कि आपके शासन-सम्बन्धी कामोंमें किसी तरहका हस्तक्षेप करे। वह यह भी नहीं चाहती, कि कोई अङ्गरेज रेजिडण्ट आपके राज्यमें रहे। यह सम्भव है, कि दोनो सरकारोंकी सलाहसे एक मुसलमान एजण्ट काबुलमें रहे। आप यह मालूम करना चाहते हैं, कि अफगानस्थान विदेशी शक्तियोंसे किसी तरहका सम्बन्ध रख सकता है, वा नहीं? इस विषयमें बड़े लाटने मुझे यह कहनेकी आज्ञा दी है, कि ब्रटिश-सरकारकी जानमें अफगानस्थानसे कोई विदेशी शक्ति सम्बन्ध नहीं रख सकती। रूस और ईरानने यह बात स्वीकार कर ली है। इसलिये साफ जाहिर है, कि आप सिवा ब्रटिश सरकारके और किसी बाहरी शक्तिसे नैतिक सम्बन्ध नहीं कर सकते हैं। आप यदि वैदेशिक सम्बन्धमें ब्रटिश-सरकारकी रायके मुताबिक काम करेंगे और ऐसी दशामें बिना आपकी ओरसे छेड़छाड़ हुए यदि कोई वैदेशिक शक्ति अफगानस्थानपर आक्रमण करेगी, तो ब्रटिश सरकार आपकी ऐसी सहायता करेगी, जिसमें आपके वैरीका आक्रमण रुके और वह अफगानस्थानसे बाहर निकाल दिया जावे।'

"ग्रिफिन साहबने मुझसे कहा, कि काबुल जाइये और अङ्गरेज कर्मचारियोंको बिदा कीजिये। साथ ही यह प्रार्थना भी की, कि उनके काबुलसे भारततक निर्विघ्न जाने और

राहमें रसद आदि संग्रह करनेकी सुव्यवस्था भी कर दीजिये। (याकूब खांको दण्ड देनेके लिये) एक फौज सेनापति राबर्टसके अधीन कन्धार जानेवाली थी, दूसरी फौज सर डानल्ड स्टुआर्टके मातहत काबुलसे पेशावर लौट जानेवाली थी। मैंने यथाशक्ति सब प्रबन्ध करनेका वादा किया। अङ्गरेजी फौजको अङ्गरेजी सीमातक निर्विघ्न पहुंचा देनेके लिये बहुत तसल्ली दी। मैंने उनसे कहा, कि मेरी जानमें सेनापति राबर्टसको यथासम्भव शीघ्र कन्धारकी ओर जाना चाहिये। उनके जानेके उपरान्त मैं सर डानल्ड स्टुआर्टसे विदा होनेके लिये जाऊंगा। ८ वीं अगस्तको लार्ड राबर्टस थोड़ीसी फौजके साथ कन्धारकी ओर रवाने हुए। मैंने सरदार शमशुद्दीन खांके लड़के मुहम्मद अजीज खांको कुछ अफसरोंके साथ सेनापति राबर्टसके साथ कन्धारतक भेज दिया। जिसमें लोग राहमें किसी तरहकी बाधा न दें। * * *

"१० वीं अगस्तको सर डानल्ड स्टुआर्ट और ग्रिफिन साहब शेरपुरसे पेशावरकी ओर रवाने हुए। उनके विदा होनेसे कुछ मिनिट पहले मैं उनसे मिलने गया। कोई १५ मिनिट-तक मुझसे और उनसे मित्रभावसे बातें हुईं। बातों बातोंमें यह भी स्थिर हुआ, कि शेरपुरमें रखी हुई अफगान तोप-खानेकी बीस तोपें मुझे दे दी जावें। दूसरे यह, कि कोई उन्नीस लाख रुपये जो अङ्गरेजोंने अपनी स्थितिमें देशसे वसूल किये थे और किले बनानेमें खर्च हुए थे, वह मुझे वापस दिये जावें और जो नये किले अङ्गरेजोंने काबुलमें बनाये थे, वह बरबाद न किये जावें।"

जिस समय अङ्गरेजी फौज काबुल खाली करके भारतवर्षकी ओर चली उस समय अफगानोंके हर्षका वारापार नहीं रहा। वह राहकी गिर्दके पर्व्वतोंपर एकत्र होकर नाना प्रकारका उल्लास प्रकट करते थे। एग्र साहब "कन्धार कैम्पेन"में लिखते हैं,—"पञ्जाबकी गिर्दके टीले ऐसे मनुष्योंद्वारा अधिकृत हो चुके थे। वह एक तरहका ढोल बजाते और लड़ाईका नाच नाचते थे। जिस समय उन लोगोंने हमें कूच करते देखा, उस समय अमानुषिक उत्तेजना दिखाने लगे। ऐसे मनुष्योंके विश्रृङ्खलित दल पहाड़ोंकी चोटियोंपर एकत्र होकर प्रेता-नोंकासा चीत्कार करने लगे। इनके चीत्कारके बीचमें हमें बराबर यह आवाज सुनाई देती थी,—'ओ—हो, अहा—हा।' बहुसंख्यक अफगान धीरे धीरे वह सब कहते थे। इसकी प्रतिध्वनि होती थी।" इतना ही नहीं,—वरञ्च कुछ दुष्ट और बदमाश अफगानोंने अङ्गरेजो फौजको चिढ़ाकर झगड़ा उठानेतककी चेष्टा की थी। किन्तु धीर गम्भीर ब्रटिशवाहिनीने उस काल अफगानोंकी छेड़पर ध्यान नहीं दिया। वह निर्व्विघ्न भारत लौट आई और उसके आनेके साथ साथ द्वितीय अफगान युद्धकी समाप्ति हो गई।

कन्धार-युद्ध।

हम तुजुक अब्दुररहमानीके उद्धृत अंशमें यह प्रकट कर चुके हैं, कि अयूबखांने कन्धारकी अङ्गरेजी फौजको शिकस्त दी थी। लार्ड रावर्टस अयूबखांसे युद्ध करनेके लिये काबुलसे कन्धारकी ओर रवाने हुए। लार्ड रावर्टस और अयूबखांकी लड़ाईका हाल लिखनेसे पहले हम अयूबखां और अङ्गरेजी फौजकी लड़ाईका हाल लिखना चाहते हैं।

कन्धारकी अङ्गरेजी फौजने अयूबखांके हिरातसे कन्धारकी ओर चलनेकी खबर पाते ही सेनापति बरोके अधीन एक जबरदस्त फौज अयूबखांकी ओर भेजी। सेनापति बरोने कन्धारसे थोड़े फासलेपर मैवन्द स्थानमें डेरा डाल दिया और अयूबखांके आनेकी प्रतीक्षा करने लगा। सन् १८८० ई०की २७ वीं जुलाईको मैवन्दमें अङ्गरेजों और अफगानोंकी फौजमें मुकाबला हुआ। अङ्गरेजी फौजकी अपेक्षा अयूबकी फौज अधिक थी और उसका अधिकांश शिक्षित था। अङ्गरेजी फौज दिनभर खूब जमकर लड़ी। तीसरे पहरतक उसका बहुत बड़ा भाग हताहत होनेकी वजहसे निकम्मा हो गया। जितने सिपाही बचे, उनके पैर उखड़ने लगे। सन्ध्या होते होते अङ्गरेजी फौज परास्त हुई। कन्धार कैम्पेनमें लिखा है,—"अपनी फौजको पामाल हुई बताना अत्युक्ति होगी। किन्तु इसमें सन्देह नहीं, कि ऐसी पूरी और कुचल डालनेवाली शिकस्त

कभी नहीं मिली थी। अयूब खांने आदिसे लेकर अन्ततक हमारी चालें काटीं। हम लोगोंको जो स्थान चुनना चाहिये था, वह उसने चुन लिया। इतना ही नहीं,—वरञ्च जिस जगह हम लोग घातमें बैठे थे, वहांसे हमें लालच देकर ऐसी जगह ले आया, जिस जगह उसके रिसालेको आक्रमण करनेकी सुविधा थी, जहां हमारी पैदल फौजकी अपेक्षा उसकी पैदल फौज अच्छी तरह काम कर सकती थी। यह निन्दनीय सत्य है, किन्तु इसको पूर्णरूपसे छिपा रखना असम्भव है। तीसरे पहरके साढ़े तीन बजते बजते हमारी तीन रेजिमेण्टों और दो रिसालेके बाकी बचे हुए सिपाही मिलजुलकर भागे। * * * अङ्गरेज और नेटिव,—अफसर और सिपाही,—वृद्ध और युवक,—वीर और कायर एक साथ मिलकर एक राहपर भागने लगे। सेनापति और उनका ष्टाफ दुःखके साथ भागना देख रहे थे। उन्होंने भागनेवालोंको ठहराने और आगे बढ़ानेकी चेष्टा की, किन्तु इसका कोई फल नहीं हुआ। वैरी हम लोगोंमें इतने मिल गये थे, कि सौभाग्यवश उनके तोपखानेने गोले उतारना मौकूफ कर दिया था। अब सिर्फ छुरे, सङ्गीनों, तलवारों और भालोंसे लड़ाई हो रही थी। सेनापति, बरोने सेवर ओलिवरकी सहायतासे बड़ी मुशकिलके साथ अग्रगामी और पश्चाद्गामी सैन्य बनाई। कुछ ऊंटों और खच्चरोंको बीचमें रख लिया। एक तो इस लिये, कि जिसमें एक तरहकी फौज बन जावे, दूसरे इस लिये, कि कोई पीछे न रह जावे और फौजकी गति न रुके।" उस समय राहकी धूल आदमियोंके रक्तसे दलदले कीचड़ बन गई थी। अङ्गरेजी फौजकी गोली

कारतूस और तोपें बैरियोंके हाथ पड़ गई थीं। सिपाही इतने थक गये थे, कि राह चल नहीं सकते थे। कान्धार-कैम्पेनमें लिखा है,—"हम लोग बड़े दुःखके साथ चुपचाप चले जाते थे। मरते हुए अभागे राहमें गिरने लगे। प्यासकी वजहसे उनका कष्ट और बढ़ गया था। सुदृढ़ मनुष्य और लड़के दोनो ही मारे कष्टके विकल हो गये थे। दुर्निवार्य्य बैरियोंसे सामना न करके वह राहमें गिरने लगे। हम यदि उस जगहका हाल जानते, तो सीधी राह चलते और कुछ ही मीलोंके उपरान्त अरगन्दाव नदी पार करके प्यास और शायद बैरियोंसे भी रक्षा पा जाते। किन्तु भाग्यमें और ही बदा था। हम लोग नदीकी बराबर बराबर चले। इस अवसरमें हम रक्षा और रात्रिके अन्धकारकी प्रतीक्षा कर रहे थे। किन्तु जब रात्रि आई तो कष्टकी विभीषिका और बढ़ी। अन्धकारमें जैसे जैसे हम आगे बढ़ा फौजका कायदा बिगड़ता गया।" अङ्गरेजी फौज बड़ी मुश्किलके साथ मैवन्दसे कान्धार पहुंची। इसके उपरान्त ही अयूबखांकी फौज भी पहुंची। अयूबने कान्धार घेर लिया। मैवन्दकी लड़ाईमें २ हजार चार सौ ७६, अङ्गरेजी सिपाही थे। इनमें ६ सौ ३४ सिपाही मारे गये और १ सौ ७५ सिपाही घायल तथा गुम हुए। ४ सौ ५५ फौजी नौकर मारे गये तथा गुम हो गये। अस्त्र शस्त्रका बहुत बड़ा भण्डार लुट गया। कोई १ हजार बन्दूकें और कड़ाबीनें और कोई ७ सौ तलवारें और सङ्गीनें लुट गईं। २ सौ १ घोड़े मारे गये और १ हजार ६ सौ ७६ ऊंट, ३ सौ ५५ टट्टू, ३ सौ १५ खच्चर और ७६ बैल गुम हो गये।

कन्धार, काबुलसे कोई ३ सौ १३ मीलके फासलेपर है। सेनापति राबर्टस ८ वीं अगस्तको काबुलसे चले और ३१ वीं अगस्तको सबेरे कन्धार दाखिल हो गये। १ ली सितम्बरको सेनापति राबर्टसने ३ हजार ८ सौ गोरे, ग्यारह हजार हिन्दुस्थानी सिपाहियों और ३६ तोपोंके साथ पीरपैमल गांवके समीप बाबा अलीकोतल पर्व्वतपर अयूबखांकी फौजपर आक्रमण किया। तीसरे पहरतक, अङ्गरेजी फौजने अयूबखांकी फौजको मार काटकर भगा दिया। अयूब खां अपना पड़ाव छोड़कर अपनी बची बचाई फौजके साथ हिरातकी ओर भागा। इसके उपरान्त कोई एक सालतक अङ्गरेजोंने कन्धारपर अपना कब्जा रखा। अपनी ओरसे शेरअली खांको वहांका हाकिम बनाया। अन्तमें सन् १८८१ ई०की २१ वीं अप्रैलको अङ्गरेजोंने शेरअली खांकी पेनशन नियत करके, उसे भारतवर्ष भेज दिया और कन्धार अमीर अब्दुररहमानके हवाले कर दिया। अमीर अपने तुजुकमें लिखते हैं,—"जहांतक मैं समझ सकता हूं, मेरा खयाल है, कि शेरअली खांके कन्धारसे हटाये जानेके कारण यह थे,—(१) अयूब खांने प्रशंसनीय तय्यारियां हिरातमें की थीं। उसने फिर कन्धारपर चढ़ आनेके लिये बहुत बड़ी फौज एकत्र की थी। शेरअली खांमें उसका सामना करनेकी शक्ति न थी। कारण, वह इससे पहले एकबार अयूबखांके सामने निर्व्वल प्रमाणित हो चुका था। (२) कन्धारके लोग और दूसरे मुसलमान उसके विरुद्ध थे। वह बहुत बदनाम था और सदैव बगावत और मारे जानेका भय उसे रहता था। (३) मैंने कन्धारके

अपने साम्राज्यसे पृथक किये जानेका कोई प्रश्न नहीं किया था और न मुझे उसका पृथक किया जाना स्वीकृत था,— वरञ्च मैं उसे अपने पूर्व्वपुरुषोंका निवासस्थान समझता और अपने देशके प्राचीन शासकोंकी राजधानी समझता था। इस समय अङ्गरेजोंने जो मुझे उसपर कबजा करनेके लिये कहा, तो मैंने शोच विचारकर उनकी बात मान ली।"

वास्तवमें कन्धार दुर्रानी बादशाहोंके जमानेमें अफगानस्थानकी राजधानी रह चुका था। दुर्रानी बादशाह वहीं कवरस्थ किये गये थे। यह नगर अरगन्दाब और तुरनाक नदियोंके बीचमें बसा हुआ है। किलाते गिलजईसे दक्षिण पश्चिम कोई ८९ मीलके फासलेपर है और कोटेसे उत्तर-पश्चिम कोई १ सौ ४४ मीलके अन्तरपर है। शहरकी चारों ओर मट्टीकी शहरपनाह है, जिसमें स्थान स्थानपर गोल बुर्ज बने हुए हैं। शहरपनाहके बाहर चौड़ी और गहरी खाई है। नगरमें कोई बीस हजार मकान हैं। अधिकांश मकान ईंटोंसे बने हैं। थोड़ेसे ऐसे हैं, जिनपर खुवास गामका सुफेद मसाला लगा हुआ है। यह मसाला चमकता है और दूरसे मरमर पत्थर मालूम होता है। अहमद शाहकी कब्र बहुत खूबसूरत है। इसका गुम्बद सोनेका है। कन्धार प्रधानतः हिरात और गोमल तथा बोलन दर्रेकी राहसे हिन्दुस्थानके साथ व्यापार किया करता है।

अमीर अब्दुर्रहमानका शासनकाल।

अमीर अब्दुर्रहमान खां बड़े ही अनुभवी और परिश्रमी शासक थे। उन्होंने अपने परिश्रमके बलसे अफगानस्तानको सुदृढ़ और शक्तिशाली देश बनाया। वह स्वयं कहा करते थे,—"यह अजीब बात है। मैं जितनी ज्यादा मिहनत करता हूं, उतना ही, थक जानेकी जगह और ज्यादा काम करनेको जी चाहता है। सच है, कि जिस पदार्थसे भूख पूरी होती है, वही पदार्थ उसकी उत्पत्तिका कारण भी होता है।" अमीरके खाने पीनेका कोई समय निर्दिष्ट नहीं था। भोजन घण्टोंतक उनके सामने रखा रहता और वह अपने काममें इतने डूबे रहते, कि भोजनकी ओर तनिक भी ध्यान न देते। प्रायः रात रातभर वह काम करते रहते। उन्होंने स्वयं लिखा है,—"रात दिन चौबीस घण्टे जो मैं काम करता हूं, उनके लिये कोई समय निर्दिष्ट नहीं है और कोई विशेष प्रबन्ध भी नहीं है। प्रातःकालसे सन्ध्यापर्य्यन्त और सन्ध्यासे प्रातःकालपर्य्यन्त एक साधारण मजदूरकी तरह परिश्रम किया करता हूं। जब भूख मालूम होती है, तो भोजन कर लेता हूं। कभी कभी तो यह भी भूल जाता हूं, कि आज मैंने भोजन किया या नहीं। इसी तरह जब मैं थक जाता हूं और नींद आ जाती है, तो उसी चारपाईपर सो जाता हूं, जिसपर बैठकर काम करता हूं। मुझे किसी विशेष कोठरी या सोनेकी कोठरीका प्रयोजन नहीं होता। न शुभग्रह अथवा किसी

दरबारी कमरेका प्रयोजन है। मेरे महलोंमें इस तरहके अनेक कमरे हैं, पर मुझे फुरसत कहां, कि एक कमरेसे दूसरेमें भी जा सकूं। * * * साधारणतः मैं सवेरे पांच वा छः बजे सोता हूं और तीसरे पहर दो बजे उठता हूं। किन्तु इतनी देरतक लगातार नहीं सो सकता। प्रायः प्रत्येक घण्टेपर मेरी नींद खुल जाती है। * * * तीसरे पहर कोई दो तीन बजे उठता हूं और पहला काम जो होता है, वह यह है; कि हकीम और डाक्टर आकर मेरी दवाकी जरूरत देखते हैं।" इसके उपरान्त अमीर कोई ६ बजे सवेरेतक काममें लगे रहा करते थे।

अमीर अब्दुररहमानने सिंहासनारूढ़ होनेके उपरान्त ही देशके बागियों और स्वतन्त्र मनुष्योंको दबाया और देशमें शान्ति स्थापित की। अयूब खांको परास्त किया और हिरातको अफगानस्थानमें मिलाया। सन् १८८५ ई०की ३०वीं मार्चको रूसियोंने पञ्चदेहपर कबजा कर लिया। इसपर अमीरने अङ्गरेजोंसे कह सुनकर अफगानस्थानकी सीमा निर्द्धारित कराई। इसके उपरान्त अङ्गरेजों और अमीरने मिलकर रूससे कहा, कि भविष्यमें यदि तुम अफगानस्थानके किसी अंशपर अधिकार करोगे, तो तुमसे युद्ध आरम्भ किया जावेगा। इसके उपरान्त आजतक रूसने अफगानस्थानपर किसी तरहका हस्तक्षेप नहीं किया। सन् १८८६ और सन् १८८७ ई०में अफगानस्थानमें बलवेकी आग प्रज्वलित हुई। अमीरने अपने बुद्धिबलसे इसे भी शान्त की। सन् १८८८ ई०में इसहाक खांने बगावत की। अमीरने उसको भी परास्त किया। हजारा देशको

हजारा जातियोंसे चार बड़ी बड़ी लड़ाइयां लड़कर उन्हें भी शान्त किया। इसके उपरान्त सन् १८९६ ई०में काफ़रस्थान विजय किया। देशमें शान्ति स्थापित करके विलायती कलोंकी सहायतासे देशमें तरह तरहके कल कारखाने खोले। उन्होंने अपने जमानेमें टकसाल खोली, कारतूस, मारटिनीहेनरी बन्दूक, कलदार तोपों, तमञ्चे, इञ्जिन, बायलर, प्रन्ट्रतिके कारखाने खोले। इसके अतिरिक्त आबकारी और नाना प्रकारके चमड़ेके काम, साबुन और वत्तियां बनानेका काम और वरदी बनानेका काम जारी किया। छापाखाना खोला, साहित्यकी भी उन्नति की। इनके अतिरिक्त तरह तरहके छोटे बड़े कारखाने खोले।

अमीरने अपने जङ्गी और मुल्की विभागका भी बहुत अच्छा प्रबन्ध किया। अफगानस्थानकी फौज इतने भागोंमें विभक्त की,—(१) तोपखाना, (२) रिसाला, (३) पैदल, (४) पुलिस, (५) मिलिशिया और (६) वलसटेर। तोपखानेमें ब्रीचलोडिङ्ग, गिबरडेनफेल्ट, कृपेक्स और क्रप तोपें हैं। घुड़चढ़े तोपखानोंमें मेक्सिम, गार्डिनर और गेटलिङ्ग तोपें हैं। सिपाही लीमेटफर्ड, मारटिनी हेनरी, स्नाइडर और लूमर बन्दूकोंसे सुसज्जित हैं। सवारोंके पास आष्ट्रेलियाकी कड़ाबीनोंकीसी कड़ाबीनें हैं। यह सब शस्त्र काबुलमें तय्यार किये जाते हैं। बन्दूकोंके कारतूस और तरह तरहके फटनेवाले गोले भी काबुलमें प्रस्तुत किये जाते हैं। अमीरने तीन लाख सिपाहियोंके काम लायक अस्त्र शस्त्र तय्यार कर रखे थे। इसके अतिरिक्त प्रत्येक अफगानस्थानवासीको बन्दूकें आदि दे

रखी थीं। अफगान फौजको रसदके लिये उतना तरद्दुद करना नहीं पड़ता। कारण, प्रत्येक अफगान सिपाहीको अस्त्र शस्त्रके साथ साथ तीस रोटियां मिलती हैं। एक रोटी अफगान सिपाहीकी एक दिनकी खुराक है! इस प्रकार वह महीनेभरकी रसद अपनी कमरमें बांधकर चलता है। अमीर इस बातकी चेष्टामें थे, कि उनके पास दश लाख सिपाहियोंकी फौज एकत्र हो जावे। नहीं कह सकते, कि वह अपनी यह चेष्टा कहांतक पूर्ण कर सके।

अमीरने मुल्की विभागकी इतनी शाखायें स्थापित कीं,—खजाना, अदालत, इञ्जीनियरी, डाक्टरी, खानिसम्बन्धी और डाकखाना। इनकी कितनी ही प्रशाखायें भी स्थापित कीं। असलमें अमीरने अपने श्रम और प्रबन्धसे अफगानस्थानको बिलकुल ही बदल दिया। वह स्वयं लिखते हैं,—"वर्त्तमान अफगानस्थान वह अफगानस्थान नहीं है, जो पहले था। अब भविष्य कालकी बातें स्वप्नकी बातें मालूम होती हैं।"

अमीर अब्दुररहमानकी आन्तरिक इच्छा थी, कि उनका एक दूत इङ्गलण्डमें रहे। अमीरके जमानेमें अङ्गरेज-अफगान युद्ध फिर होनेकी आशङ्का हुई थी। अमीरको विश्वास था, कि हमारा दूत इङ्गलण्डमें रहनेपर अङ्गरेज-अफगान युद्धकी आशङ्का न रहेगी। इसी खयालसे उन्होंने अपने पुत्र नसरुल्लह खांको विलायत भेजा था। किन्तु उनकी यह कामना पूर्ण न हुई।

सन १८८५ ई०की ८वीं अपरेलको रावलपिण्डीके दरबारमें अमीर अब्दुररहमान उस समयके बड़े लाट मारक्विस आफ

डफरिन बहादुर तथा वर्त्तमान सम्राटके भाई डिउक आफ कनाटसे मिले थे। इस दरबारमें अमीर और बड़े लाट दोनों शासकोंने आपसकी मैत्री बनाये रखनेकी प्रतिज्ञा की थी। इस दरबारके विषयमें अमीर अपनी पुस्तकमें इस प्रकार लिखते हैं,—"मुझे लेडी डफरिनसे मिलकर बड़ी प्रसन्नता हुई। ऐसी विदुषी बुद्धिमती स्त्री मैंने कभी नहीं देखी थी। डिउक और डचेज आफ कनाटसे मिलकर मैं अत्यन्त प्रसन्न हुआ। मैंने देखा, कि भारतीय प्रजा उनकी बहुत भक्ति करती थी। डिउक और डचेजने प्रजाका हृदय मोह लिया है। डिउक बड़े ही दयालु, स्वच्छहृदय, सत्यवादी और सुन्दर सिपाही हैं। इसलिये यह जरूरी है, कि फौज ऐसे अफसरकी सेवा हृदयसे करे। अपनी इस मुलाकातमें मैंने एक दुःखद दृश्य देखा। इसे देखकर मेरे हृदयमें असीम दुःख हुआ। वह दृश्य पञ्जाबके नव्वाबों और राजोंकी दुरवस्था था। वह सबके सब दयाके पात्र स्त्रियोंकासा परिच्छद धारण किये थे। हीरे जड़ी हुई लड़ियां इनके बालोंमें खुँसी हुई थीं। वह कानोंमें बाले, हाथोंमें कड़े और गलेमें हार तथा साबे पहने थे। इनके अतिरिक्त स्त्रियोंके पहननेके अन्यान्य आभूषण भी पहने थे। इनके इजारबन्दमें भी जवाहरात टंके थे। इनमें छोटे छोटे घुंघरू बंधे थे, जो पैरोंतक लटकते थे। यह लोग अज्ञता सुस्ती और शरीर पालनेके काममें डूबे हुए थे। उन्हें यह नहीं मालूम, कि संसारमें क्या हो रहा है। वह पैदल भी नहीं चल सकते थे। कारण, इसका उन्हें अभ्यास नहीं और इससे वह अपनी अप्रतिष्ठा समझते हैं। उनका समय अफीम

पीने और चण्डूबाजीमें अतिवाहित होता है। मुझे इन जनाने ढङ्गके बेचारोंपर बड़ी दया आई। इनकी प्रजापर भी दया आई। कारण, ऐसे लोगोंसे न्याय तथा उत्तम शासनकी क्या प्रत्याशा की जा सकती है।" किन्तु भगवानकी दयासे पञ्जाबके नरेशोंकी दशा इस समय वैसी नहीं है।

अमीर अब्दुररहमानका जीवनचरित बहुत लम्बा चौड़ा है। यहां स्थानाभाववश हम उसे प्रकाश नहीं कर सकते। इसके अतिरिक्त उनकी जीवनी हिन्दी भाषामें मौजूद है। उसके पढ़नेसे अमीरके शासनकालमें अफगानस्थानमें जो विलक्षण परिवर्त्तन हुए, उनका सुविस्तृत हाल मालूम होगा। उन्हींका आभास हम ऊपर दे चुके हैं। सन् १९०१ ई०की ३ री अक्टोबरको आधीरातके उपरान्त काबुलमें नामवर अमीर अब्दुररहमानने देहत्याग किया।

अमीर हबीबुल्लह।

अमीरकी मृत्युके उपरान्त उनके ज्येष्ठपुत्र हबीबुल्लह काबुलके सिंहासनपर बैठे। अमीर हबीबुल्लहने इस विषयमें जो कुछ कहा है, वह नैरङ्गे अफगानमें इस प्रकार प्रकाश किया गया है,—"मेरे पिताकी मृत्युका दुःखमय समाचार देशभरमें फैल गया। उसे सुनते ही कुल फौजी और मुल्की अफसर मातमपुरसीके लिये मेरे पास आये। उनके दुःखका यह

हाल था, मानो उनका प्रिय पिता उनसे सदैवके निमित्त पृथक हो गया था। कन्धार और तुरकस्थान इत्यादिके कुल अफसर इस तुच्छ मनुष्यके पास आये। सहस्र सहस्र मनुष्य फातिहा पढ़नेमें शरीक हुए। सबने विशुद्धान्तः करणसे फातिहा पढ़ी। फिर उन लोगोंने मेरी सेवाकी कसमें खाईं। यह कहा, कि हम हुजूर होको अपना बादशाह जानते हैं। हमें इस दुरवस्थामें न छोड़िये। हमने सत्य सत्य ही आपको अपना स्वामी माना है। हम प्रार्थना करते हैं, कि आप हमपर शासन कीजिये। हमारी जातिके शिरपर हाथ रखिये। जिस तरह आपके स्वर्गवासी पिताने अहर्निशि श्रम करके अपना कर्त्तव्य पालन किया, उसी प्रकार आप भी करें।

"फातिहाके उपरान्त मैंने अत्यन्त दयाके साथ उनकी कसमें स्वीकार कीं। उसी दिन मेरे सब छोटे भाई आये। उन्होंने बारी बारीसे मेरी सेवा करना स्वीकार किया।"

सन् १९०१ की छठीं अक्टोबरको काबुलमें एक दरबार हुआ। दरबारमें राज्यके यावत् उच्चकर्म्मचारी तथा सरदार-गण एकत्र थे। सबने मिलकर शपथपूर्व्वक हबीबुल्लह खांको अपना अमीर स्वीकार किया। ९ वीं अक्टोबरको अमीर हबीबुल्लहने विधिपूर्व्वक शासन करनेकी शपथ की। इसके उपरान्त सम्पूर्ण अफगानस्थानमें यह विज्ञापन प्रकाश किया गया,—

"विज्ञापन।

"मेरे पिताका स्वर्गवास हो गया। मुझे, यानी हबीबुल्लह-को कुल सरदारोंने इच्छापूर्व्वक अपना बादशाह बनाया है।

जो कमरबन्द कुरान और तलवार मजारेशरीफके तबकेने मेरे पित को दी थी, वही जातिके लोगोंने मुझे दी है। मैं लोगोंको सूचना देता हूं, कि मैंने राजकर घटा दिया है। देशवासियोंको विश्वास रखना चाहिये, कि मैं सदैव उनके हित और उन्नतिके लिये चेष्टा करता रहूंगा।"

अमीर हबीबुल्लह खां ही इस समय काबुलके अमीर हैं। आप अभी नौजवान है। नौजवान होनेपर भी बुद्धिमान, दूरदर्शी और अत्यन्त स्वतन्त्र स्वभावके हैं। अमीर अबदुररहमानने अपने जीवनकाल हीमें हबीबुल्लह खांको शासन करनेकी शक्ति प्रदान की थी। एकबार हबीबुल्लह खांने अपने पिताकी अनुपस्थितिमें अपनी जानतककी परवा न करके काबुलका उठता हुआ बलवा दबाया था। उन्होंने अफगानस्थानको और भी सुदृढ़ बनाया है। पिता अमीर अबदुररहमानने अफगानस्थानकी कितनी ही जातियोंको देशसे बाहर निकाल दिया था, अब पुत्र अमीर हबीबुल्लह उन्हें बुला रहे हैं। पिताके समय देशमें शान्ति और ऐक्यका बीज बोया गया था, पुत्रके समय उसी बीजसे वृक्ष प्रकट हुआ और अब वह क्रमशः बढ़ता और फलता फूलता जाता है। वर्त्तमान अमीर हबीबुल्लह खांके सात स्त्रियां और कई लड़के लड़कियां है। सबसे बड़े बेटेका नाम इनायतुल्लह खां है। यही अफगानस्थानके युवराज समझे जाते हैं।

भूतपूर्व अमीर अबदुररहमानके जमानेमें अङ्गरेजों और अफगानस्थानमें जैसी मैत्री थी, वैसी ही अब भी है। वर्त्तमान अमीरके जमानेमें सिर्फ एक बात नई हुई है। अङ्गरेज

महाराज इस अमीरको १८ लाख रुपये सालाना देते हैं। अमीर हबीबुल्लहने सिंहासनारूढ़ होनेके उपरान्तसे वह रुपये नहीं लिये हैं। सन् १६०५ ई०के २५ वीं जूनवाले पायनियरने कहा था,—"सन् १६०१ ई०के अक्टोबर महीनेसे अमीरने अपने १८ लाख रुपये सालानाकी रकम नहीं वसूल की है। इस समय अमीर सरकारी खजानेसे ६० वा ७५ लाख रुपये वसूल कर सकते हैं।" अङ्गरेजोंने अमीरको रुपये लेनेके लिये बारम्बार कहा, किन्तु अमीरने आजतक रुपये नहीं लिये हैं।

डेन साहबकी मिशन।

सन् १६०४ ई०के अन्तमें भारतके बड़े लाट कार्जनने डेन साहबकी अधीनतामें एक मिशन काबुल भेजी थी। वह मिशन काबुलमें महीनोंतक पड़ी रही। उस समय उसके कामके बारेमें तरह तरहकी अफवाहें उड़ती रहीं। अन्तमें मिशन काबुलसे भिसके वापस आई। सन् १६०५ ई०की २५वीं मईको भारत-सरकारने मिशनकी कार्रवाई प्रकाश की। मिशनने और कुछ न किया, वह काबुल जाकर अमीर अबदुर-रहमानके समयकी सन्धि नई कर आई। साथ साथ अमीरको बादशाहकी उपाधि दे आई। मिशनने जिस सन्धिपत्र या प्राचीन सन्धि नई की, उसकी नकल इस प्रकार [illegible] हुई है, जिसका गुण प्रशंसनीय है। अफ-

गानस्थान और उसके अधीन राज्यके स्वतन्त्र बादशाह श्रीमान सिराजुलमिल्लतुद्दीन अमीर हबीबुल्लहखां एक ओर हैं और प्रशंसनीय इटिश सरकारके प्रतिनिधि तथा शक्तिशालिनी भारत सरकारके देशी सिकत्तर माननीय मिष्टर लूई डेन सी, एस, आई दूसरी ओर। बादशाह सलामत स्वीकार करते हैं, कि मेरे परलोकगत श्रीमान पिताने, जिनकी आत्मापर भगवानने दया की और भगवान जिनकी कब्रमें प्रकाश प्रदान करें, जो सन्धि प्रशंसनीय इटिश गवर्मेण्टसे की थी, उसकी असलियत और उसके सहायता सम्बन्धी विषयोंके अनुसार मैंने काम किया,मैं करता हूं और करूंगा। मैं अपने किसी कार्य्यसे अथवा किसी वादेसे सन्धिनियमोंको भङ्ग न करूंगा। माननीय लुई विलियम डेन साहब स्वीकार करते हैं, कि प्रशंसनीय इटिश सरकारने वर्त्तमान बादशाह सिराजुलमिल्लतुद्दीनके उच्च प्रतिष्ठित पिता श्रीमान जियाउलमिल्लतुद्दीनसे, भगवानने जिनकी आत्माको शान्ति दी और जिनकी कब्रमें रोशनी होवे, स्वदेश और विदेशके सम्बन्धमें वा सहायताके सम्बन्धमें जो सन्धि की थी, मैं उसकी पुष्टि करता हूं और लिखता हूं, कि इटिश सरकार उस सन्धिके विरुद्ध कभी और किसी तरहसे कोई काम न करेगी।

"यह सन्धि मङ्गलवार १३२३ हिजरीकी १४ वीं मुहर्रमुल हरामकी वा सन १६०५ ई०के मार्च महीनेमें लिखी और दस्तखत की गई।"

जिस समय अङ्गरेजोंकी मिशन काबुलमें थी, उसी समय अमीरके बड़े लड़के इनायतुल्लह खां भारत आये थे।

अन्यान्य अमीरोंकी तरह वर्त्तमान अमीर हबीबुल्लहने भी काबुल हीको अपनी राजधानी बनाया है। काबुल जलालाबादसे १०३ मील, गजनीसे ८८ और कन्धारसे ३ सौ १८ मीलके फासलेपर है। काबुल और लोगार नदीके सङ्गमपर बहुत बड़े मैदानके पश्चिमीय किनारेपर बसा हुआ है। नदियोंपर दो पुल पड़े हुए हैं। यह नगर समुद्रवक्षसे ६ हजार ३ सौ ८६ फुटकी ऊंचाईपर बसा हुआ है। चारो ओर पर्व्वतमाला है। पर्व्वतमाला और शहरपनाहके बीच एक तङ्ग जगह बची हुई है। पहाड़ियोंपर भी बुर्जदार दीवारें बनाई गई थीं। किन्तु मरम्मत न होनेकी वजहसे टूट गई हैं।

काबुलनगर पूर्व्वसे पश्चिम कोई एक मील लम्बा और उत्तरसे दक्षिण कोई आध मील चौड़ा है। इसकी गिर्द मट्टीकी शहरपनाह है, किन्तु खन्दक नहीं। नगरकी पूर्व्व ओर एक खन्दक है। खन्दककी दूसरी ओर एक पर्व्वतपर बालाहिसार दुर्ग अवस्थित है। पर्व्वतके ढालुवे अंशपर शाही महल बने हैं और एक बाजार भी है। नगरमें कोई एक लाख मनुष्य बसते हैं। नगरके नीचे ही काबुल नदी बहती है। वर्त्तमान अमीरके जमानेमें यह नगर बहुत रौनकपर है। वर्त्तमान अमीरके शासनकालमें अन्यान्य नगरोंकी उन्नति होनेके साथ साथ गजनी नगरकी भी खासी उन्नति हुई है। लोगार घाटी पार करनेपर एक खुले मैदानमें यह प्राचीन नगर मिलता है। इसके पार्श्वमें एक सुदृढ़ दुर्ग है और नगरकी गिर्द शहरपनाह तथा खन्दक है।

अफगानस्थान, रूस और अङ्गरेज।

अमीर अब्दुररहमानने लिखा है,—"रूसके लोग हिन्दुस्थनको कुबरका भण्डार समझते हैं। मैंने प्रायः रूसी सिपाहियोंको इस आशासे उछलते कूदते देखा है, कि उन्हें एक दिन इस धन धान्यसे परिपूर्ण देशके लूटनेका समय मिलेगा। वह इस दिनकी बाट जोह रहे हैं।" रूसी केवल बाट नहीं जोह रहे हैं, वरञ्च भारतवर्षपर चढ़ाई करनेकी तय्यारीमें लगे हुए हैं। उन्होंने अफगानकी सीमापर्य्यन्त अपनी रेल बना ली, वह अच्च नदीपर पुल बांधनेकी चिन्तामें है और उन्होंने अपनी मध्य एशियाकी फौज बढ़ाना आरम्भ की है। रूस भारताक्रमण करनेमें कृतकार्य्य हो, वा चाहे अकृतकार्य्य, किन्तु लक्षणसे जान पड़ता है, कि वह पूरी तरह तय्यार होनेके उपरान्त ही भारतवर्षपर आक्रमण कर सकता है।

इधर अङ्गरेज महाराज भी रूससे सामना करनेके लिये पूर्णरूपसे तय्यार हैं और तय्यार होते जाते हैं। उनकी सरहद्दी रेलें बन चुकी हैं। ऐसी रेलका एक छोर कन्धारकी पड़ोसतक पहुंच चुका है। दूसरा छोर खैवर दररेके पास पहुंच गया है और खबर है, कि शीघ्र ही खैवर दररेतक पहुंच जावेगा। भारतवर्षमें तोप बन्दूकके नये कारखाने खुल रहे हैं। भारतकी फौज भी बढ़ाई जानेकी खबर है। ब्रटिश सरकारने वर्त्तमान बड़े लाट कर्जन वहादुरके इस्तेफेकी इतनी परवा न करके वर्त्तमान जङ्गी लाट किचनर

बहादुरको फौजी शक्ति बढ़ा दी है। जङ्गी लाट इस शक्तिद्वारा भारतरक्षाका मनमाना प्रबन्ध करना चाहते हैं। इस प्रकार अङ्गरेज महाराज भी निश्चिन्त नहीं हैं। वह रूसके रोकनेकी पूरी तय्यारीमें लगे हुए हैं।

यह कहनेका प्रयोजन नहीं है, कि अफगानस्थान भारतवर्षका फाटक है। इसी राहसे रूस भारतवर्षमें घुस सकता है। इस समय अफगानस्थान स्वतन्त्र होनेपर भी अङ्गरेजोंका मित्र है और अङ्गरेजोंके प्रभावमें हैं। जिस समय रूसअङ्गरेज युद्ध होगा, उस समय भी अफगानस्थानको दोमें एक शक्तिके साथ रहना पड़ेगा। किन्तु प्रश्न यह है, कि ऐसा समय उपस्थित होनेपर अफगानस्थान किसका साथ दे सकता है? इस गूढ़ प्रश्नका उत्तर देनेसे पहले हमें यह दिखाना उचित है, कि रूस और अङ्गरेजकी वैदेशिक नीति क्या है और अफगानस्थान रूससे कौनसा लाभ उठा सकता है और अङ्गरेजोंसे कौनसा। रूसकी नीति एशियामें यह है, कि वह उचित वा अनुचित रीतिसे, सन्धिसे वा मैत्रीसे,—जिस युक्तिसे उसे सुविधा होती है, एशियाई शक्तियोंको नष्ट और निर्बल कर रहा है। रूसकी आन्तरिक इच्छा यह है, कि रूस, अफगानस्थान और ईरान यह तीनो शक्तियां नष्ट हो जावें। यदि रहें तो रूसके अधीन होकर रहें। कितने ही लोग कहते हैं, कि रूस जिस देशको जीतता है, उस देशके रहनेवालों हीको वहांका हाकिम बनाता है। इस बातके प्रमाणमें बुखारे और खुरासानको बात उपस्थित करते हैं। किन्तु ध्यानपूर्वक देखा जावे, तो उक्त दोनो देशके शासक नाममात्रके लिये

स्वतन्त्र हैं। इन देशोंमें न्याय प्रभृतिका काम देशी शासकोंके हाथमें रखा गया है सही, किन्तु राजकर वसूल करनेका काम रूसी कर्म्मचारी ही करते हैं। इस प्रकार रूस विजित शक्तिको प्रकारान्तरसे निर्बल करके बिलकुल ही अपने काबूमें कर लेता है।

किन्तु अङ्गरेज महाराज एशियाई शक्तियोंके साथ ऐसा व्यवहार नहीं करते। वह सदैव उनके साथ मित्रभाव रखते हैं और यह चाहते हैं, कि उनकी मित्र शक्तियां सुदृढ़ बनी रहें। अमीर अब्दुर्रहमान कहते हैं, "किन्तु इस पालिसीमें अस्थायी परिवर्त्तन हो जाया करते हैं। अङ्गरेजी पालिसी रूसी पालिसीकी तरह सुदृढ़ और स्थायी नहीं। जिस दलका राज्य रहता है, उसीकी शक्ति मानी जाती है। उसके मन्त्री उसकी सलाहके अनुसार काम करते हैं। किन्तु एक दलका अखतियार मिटते ही दूसरे दलका अखतियार होता है। पहले दलके विचारकी अपेक्षा दूसरे दलका विचार बिलकुल ही भिन्न होता है। इसलिये यह नहीं कहा जा सकता, कि गवरमेण्टकी अमुक अमुक पालिसी स्थायी हैं। इस बातमें कोई सन्देह नहीं, कि बहुत दिनोंसे ग्रेटब्रिटेनकी यह पालिसी है, कि एशियाई रूस तथा भारतवर्षमें जो मुसलमानी राज्य हैं, वह रक्षित रहें और उनकी स्वतन्त्रता नष्ट न होने पावे।" इसमें कोई सन्देह नहीं, कि विलायतमें कभी लिबरेल दलका प्राधान्य होता है और कभी कनसरवेटिवका। जो दल प्रधान होता है, वह अपनी नीति अवलम्बन करता है। दोनों दलोंकी नीतिमें बड़ा अन्तर

है। किन्तु यह निश्चय है, कि अङ्गरेज रूसकी तरह एशियाई शक्तियोंकी स्वतन्त्रता छीनना नहीं चाहते।

इसलिये यद्यपि दोबार अङ्गरेज-अफगान युद्ध हो चुका है, यद्यपि अफगानस्थानकी कितनी हीं जातियां अङ्गरेजोंसे घृणा करती हैं, यद्यपि कितने ही राजनीति विशारदोंका कहना है, कि अङ्गरेजों और अफगानोंमें कभी मैत्री न होगी,—फिर भी, स्वतन्त्रताप्रेमी अफगानस्थान अपनी स्वतन्त्रता स्थापित रखनेके ध्यानसे अङ्गरेजों हीके साथ रहेगा।

किन्तु इसके साथ साथ अमीर अब्दुररमानकी यह बात भी देखना चाहिये,—"यदि दुर्भाग्यवश अङ्गरेज अपनी पालिसी बदल दें और अफगानस्थानपर अधिकार करने वा उसकी स्वतन्त्रतामें बाधा पहुंचानेके अभिप्रायसे ज्यादती करेंगे, तो अफगान जातिको विवश होकर अङ्गरेजोंसे लड़ना पड़ेगा! यह यदि पराजित हुए तो रूससे मिल जावेंगे। कारण, रूस इङ्गलण्डकी अपेक्षा अफगानस्थानके अत्यन्त समीप है। इसलिये रूस अफगानस्थानकी सहायता कर सकता है।"

जो हो, समझदारोंका कहना है, कि ग्रेटब्रिटेन अफगानस्थानमें यथाशक्य मैत्री स्थापित रखेगा। उधर अफगानस्थानको भी यही उचित है, कि वह पिछली बातें भुलाकर कायमनोवाक्यसे अङ्गरेजोंकी मैत्री कायम रखनेकी चेष्टा करे। इससे अङ्गरेजोंका तो भला होवे होगा, किन्तु अफगानस्थानका बहुत भला होगा। वह बरबाद हो जानेसे बचा रहेगा।

अफगानस्थानका भविष्य।

—⊸◇⊸—

अब हम अफगानस्थानके विषयमें बत्तीस भविष्यवाणियां नैरङ्गे अफगानसे उद्धृत करके यह पुस्तक समाप्त करते हैं,—

"(१) रूस और इङ्गलण्डमें किसी न किसी समय बहुत बड़ा युद्ध होगा।

(२) रूस यदि अफगानस्थानमें दाखिल हो गया, तो अफगान उसको जबरदस्त समझेंगे और उसकी छायामें रहकर भारतवर्ष लूटने जावेंगे।

(३) अब जो अफगान आपसमें लड़ेंगे, तो उस युद्धका फल यह होगा, कि उधर रूस अपने निकटस्थ स्थान जैसे हिरात, बलख इत्यादिपर अधिकार कर लेगा और इधर अङ्गरेज अपने निकटस्थ स्थान कन्धार, जलालाबाद प्रभृतिपर क़बजा कर लेंगे।

(४) अभी कुछ दिनोंतक इङ्गलण्ड और रूसमें युद्ध न होगा। काबुलमें इमारत कायम रखी जावेगी और वही काबुल इन दोनो बादशाहोंके बीचमें आड़ बना रहेगा।

(५) फिर यह होगा, कि अमीर काबुलकी बदौलत दोनो बादशाहोंमें झगड़ा हो जावेगा और तब रूस-अङ्गरेज युद्ध आरम्भ होगा।

(६) भारतवर्ष बहुत दिनोंतक सुरक्षित रहेगा।

(७) जो जबरदस्त प्रमाणित होगा, अफगान उसीका साथ देंगे। उसीका प्रभाव अफगानस्थानपर स्थापित होगा। जो दबेगा, उसका साथ छोड़ देंगे। यह ऐतिहासिक सत्य है।

(८) कभी एक न एक दिन अफगानस्थान अफगानोंके लिये न रहेगा और रहेगा, तो उस समय, जब अफगान किसी जबरदस्तकी छाया मान लेंगे।

(९) अफगान भिन्न धर्म्म और भिन्न जातिके लोगोंका शासन कभी स्वीकार न करेंगे। जो जबरदस्तीके साथ शासन करेगा, उसे तानिघ्र करके परेशान कर देंगे। जिसको वह स्वयं बुलाकर शासक बनावेंगे, उसको भी कष्ट पहुंचावेंगे।

(१०) उनके देशमें रूस वा इङ्गलण्ड जो बादशाह दाखिल होगा, वह अपनी जबरदस्त फौजकी वजहसे दाखिल हो जावेगा, किन्तु अफगान उससे मिलकर वही करेंगे जो पहले करते आये हैं।

(११) जिस बादशाहके पास अधिक फौज होगी, वही अफगानस्थानका शासन कर सकेगा।

(१२) अमीर दोस्तमुहम्मदके घरानेमें इमारत रहेगी और उन्हींके सन्तानके जमानेमें इङ्गलण्ड और रूसमें युद्ध होगा।

(१३) रूस और इङ्गलण्डकी रेल मिल जावेगी और यह अजगार जो अब है, रह न जावेगा।

(१४) अमीर अबदुररहमानने अफगानस्थानमें जो सभ्यता फैलाई है, वह एक समयमें मिट जावेगी।

(१५) पहले रूस अफगानस्थानको छेड़कर लड़ेगा और अन्तमें अफगानस्थानको परास्त करेगा।

(१६) रूस जो देश लेगा, उसे न छोड़ेगा।

(१७) एक न एक दिन रूसी दूत भी काबुलमें नियुक्त होगा।

(१८) रूस वाखियान और पामीरसे दाखिल होगा और ... दुर्गम्य पथोंसे दूसरे बादशाहोंकी फौज आई हैं, तो उसकी ...ी चली आवेगी।

(१९) कोई नियमपत्र कायम न रहेगा।

(२०) एक जमानेमें अफगानस्थानके हिस्से हो जावेंगे, ...ो रूस और इङ्गलण्डमें एक सन्धि होगी।

(२१) हिरात-ईरानको न मिलेगा।

(२२) जबतक और जिस हैसियतसे काबुलमें इमारत ...ोगी, अङ्गरेज रुपये देते रहेंगे।

(२३) काफरस्थान और हजारा एक दिन अफगानस्थानकी ...अधीनतासे स्वतन्त्र हो जावेगा।

(२४) रूस अफगानस्थान विजय करके वहां शान्ति स्थापित ...र सकता है।

(२५) इङ्गलण्ड यदि फिर कभी अफगानस्थान विजय ...रेगा, तो वापस आवेगा।

(२६) अफगानस्थानकी मूर्खता और साजिशमें किसी ...रहका परिवर्तन न होगा।

(२७) अफगानस्थानकी धार्म्मिक उत्तेजना कभी कम न होगी।

(२८) जब रूस अफगानस्थानमें आवेगा, तो पेशावरका ...ावा करेगा।

(२९) रूस-अङ्गरेज युद्धमें अटकपर घमसान युद्ध होगा।

(३०) रूस-अङ्गरेज युद्धके समय मध्यएशियाकी रूसी प्रजा बलवा करेगी।

(३१) भारतवर्षमें इङ्गलण्डसे बगावत न होगी।

(३२) भारतवर्षमें अब जो बड़े लाट होंगे, वह वही होंगे, जो सीमासम्बन्धी बातें जानते होंगे।"